

Received at 3.15 P.M.

24/11/80

Page 6956
814/80

पृष्ठ

बिस्थापित व्यक्ति (ऋण समायोजन) अधिनियम, 1951 606
(1951 का अधिनियम संख्यांक 70)

**Displaced Persons (Debts Adjustment) Act,
1951.**

भारतीय तार (संशोधन) अधिनियम, 1974 630
(1974 का अधिनियम संख्यांक 48)

Indian Telegraph (Amendment) Act, 1974.

राष्ट्रपति पेंशन (संशोधन) अधिनियम, 1976 631
(1976 का अधिनियम संख्यांक 79)

President's Pension (Amendment) Act, 1976.

✓ अनुसूचित जातियां और अनुसूचित जनजातियां आदेश (संशोधन) अधिनियम, 1976 633 ✓
(1976 का अधिनियम संख्यांक 108)

**Scheduled Castes and Scheduled Tribes Orders
(Amendment) Act, 1976.**

उच्चतम न्यायालय (न्यायाधीश संख्या) संशोधन अधिनियम, 1977 661
(1977 का अधिनियम संख्यांक 48)

**Supreme Court (Number of Judges)
Amendment Act 1977.**

कराधान विधि (संशोधन) अधिनियम, 1978 661
(1978 का अधिनियम संख्यांक 29)

Taxation Laws (Amendment) Act, 1978.

लोक प्रतिष्ठित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1979 663
(1979 का अध्यादेश संख्यांक 1)

**Representation of People (Amendment) Ordinance,
1979.**

27-3-81

Q

27/3/81



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग 2—अनुभाग 1क

PART II—Section 1A

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 8
No. 8

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 29 नवम्बर, 1979/8 अग्रहायण, 1901 (शक)
NEW DELHI, THURSDAY, NOVEMBER 29, 1979/AGRAHAYANA 8, 1901 (SAKA)

[खण्ड XV
Vol. XV

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed
as a separate compilation

विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय (विधायी विभाग)

नई दिल्ली, 29 नवम्बर, 1979/8 अग्रहायण, 1901 (शक)

(1) विस्थापित व्यक्ति (ऋण समायोजन) अधिनियम 1951; (2) भारतीय तार (संशोधन) अधिनियम, 1974; (3) राष्ट्रपति पेंशन (संशोधन) अधिनियम, 1976; (4) अनुसूचित जातियाँ और अनुसूचित जनजातियाँ आदेश (संशोधन) अधिनियम, 1976; (5) उच्चतम न्यायालय (न्यायाधीश संख्या) संशोधन अधिनियम, 1977; (6) कराधान विधि (संशोधन) अधिनियम, 1978; (7) लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1978 के निम्नलिखित हिन्दी अनुवाद राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित किए जाते हैं और ये राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 5 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के अधीन उनके हिन्दी में प्रकाशित पाठ समझे जाएंगे :—

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS (LEGISLATIVE DEPARTMENT)

New Delhi, November 29, 1979/Agrahayana 8, 1901 (Saka)

The translations in Hindi of the following, namely:—

- (1) The Displaced Persons (Debts Adjustment) Act, 1951;
- (2) The Indian Telegraph (Amendment) Act, 1974;
- (3) The President's Pension (Amendment) Act, 1976;
- (4) The Scheduled Castes and Scheduled Tribes Orders (Amendment) Act, 1976;
- (5) The Supreme Court (Number of Judges) Amendment Act, 1977;
- (6) The Taxation Laws (Amendment) Act, 1978;
- (7) The Representation of the People (Amendment) Ordinance, 1979;

are hereby published under the authority of the President and shall be deemed to be the authoritative texts thereof in Hindi under clause (a) of sub-section (1) of section 5 of the Official Languages Act, 1963 (19 of 1963):—

विस्थापित व्यक्ति (ऋण समायोजन) अधिनियम, 1951

धाराओं का क्रम

अध्याय 1

प्रारम्भिक

धाराएं

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ ।
2. परिभाषाएं ।
3. अधिनियम, नियम और आदेश का अध्यारोही प्रभाव ।
4. अधिकरण जो इस अधिनियम के अधीन अधिकारिता का प्रयोग करने को सक्षम है ।

अध्याय 2

ऋण समायोजन कार्यवाही

5. ऋणों के समायोजन के लिए विस्थापित देनदारों द्वारा आवेदन ।
6. कतिपय दशाओं में आवेदन का अस्वीकृत किया जाना ।
7. नोटिस का जसरी किया जाना ।
8. प्रत्यक्षियों द्वारा आक्षेप ।
9. प्रत्यक्षियों पर नोटिस की तासील के पश्चात् कार्यवाही ।
10. विस्थापित देनदारों के विरुद्ध लेनदारों के दावे ।
11. लेनदारों के आवेदन पर प्रक्रिया ।
12. अप्रस्तियों की अनुसूची पर लेनदारों द्वारा आक्षेप ।
13. विस्थापित लेनदारों द्वारा उन व्यक्तियों के विरुद्ध दाव ओ विस्थापित देनदार नहीं हैं ।
14. विस्थापित लेनदार की अर्जी पर प्रक्रिया ।
15. विस्थापित देनदार के आवेदन का परिणाम ।
16. स्थावर सम्पत्ति पर प्रतिभूत ऋण ।
17. जंगम सम्पत्ति पर प्रतिभूत ऋण ।
18. बीमा कम्पनी के विरुद्ध दावे ।
19. कम्पनियों में अंशों पर मांग ।
20. जब कम्पनी या सहकारी सभिति सम्पत्त में हों तो विस्थापित व्यक्ति या बैंक से मांग का नहीं किया जाना ।
21. कतिपय डिफ्टी और समझौतों का पुनरीक्षण करने की शक्ति ।
22. संयुक्त ऋणों का प्रभाव ।
23. कतिपय मामलों में सरलीकृत प्रक्रिया ।
24. रजिस्ट्रीकृत दस्तावेजों के बारे में धारणा ।

धाराएं

25. 1908 के अधिनियम संख्यांक 5 की लागू होना।
26. आवेदनों और लिखित कथनों पर हस्ताक्षर और सत्यापन।
27. डिक्रियों की विषय-वस्तु।
28. डिक्रियों का निष्पादन।

अध्याय 3

अनुतोष

29. ब्याज के प्रोद्भवन की समाप्ति।
30. गिरफ्तारी से छूट।
31. सम्पत्ति की कुर्की के विषय में अतिरिक्त अनुतोष।
32. ऋणों का कम करना।
33. वे बातें जिनको किस्तों में संदाय के निदेश में ध्यान में रखा जाना है।
34. भरण-पोषण भत्तों में फेर-फार।
35. विधि व्यवसायी की फीस का विनिर्धारण।
36. परिसीमा की कालावधि का बढ़ाया जाना।
37. कतिपय डिक्रियों के निष्पादन के लिए परिसीमा की कालावधि की काट-छांट।
38. निष्पादन में स्थावर सम्पत्ति का विक्रय।
39. समझौतों को प्रोत्सोहन।

अध्याय 4

अपील

40. अपील से सम्बन्धित साधारण उपबन्ध।
41. कतिपय दशाओं में अपील के अधिकार पर निर्बन्धन।
42. अपील के पक्षकार।

अध्याय 5

प्रकीर्ण

43. भारतीय विधि के अधीन कतिपय सोसाइटियों और कर्षणियों की रजिस्ट्रीकरण।
44. कतिपय मामलों में अतिरिक्त आवेदन का वर्जन।
45. आवेदनों का संशोधन।
46. सूचना की तामील।
47. विस्थापित देनदार द्वारा कतिपय मामलों को प्रकट न करने का प्रभाव।
48. देनदार की मृत्यु पर कार्यवाहियों का उपसर्जन न होना।
49. पूर्व संव्यवहार का प्रभावी नहीं होना।
50. विस्थापित देनदार का दिवालिया नहीं समझा जाना।
51. कतिपय दशाओं में बैंकों और उनके देनदारों के बीच में समझौतों या हस्त-क्षमों को पुनर्जीवित न करना।
52. डिक्री की विषय-वस्तु की विहित प्राधिकारों को संसूचना।

धाराएं

53. परिसीमा अधिनियम का लागू होना ।
54. सिविल प्रक्रिया संहिता की प्रथम अनुसूची का, आदेश 38 को लागू नहीं होना ।
55. सद्भावपूर्वक की गई कार्यवाही के लिए संरक्षण ।
56. शक्तियों का प्रत्यायोजन ।
57. केन्द्रीय सरकार की नियम बनाने की शक्ति ।
58. राज्य सरकार की नियम बनाने की शक्ति ।
59. निरसत ।

विस्थापित व्यक्ति (ऋण समायोजन) अधिनियम, 1951

(1951 का अधिनियम संख्यांक 70)

[1 अक्टूबर, 1979 को यथाविद्यमान]

[7 नवम्बर, 1951]

विस्थापित व्यक्तियों द्वारा शोध ऋणों के समायोजन और परिनिर्धारण के लिए, उनको देय कतिपय ऋणों की वसूली के लिए, और उससे संबंधित या उससे आनुषंगिक विषयों के लिए कतिपय उपबंध करने के लिए अधिनियम

संसद द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—]

अध्याय 1

प्रारम्भिक

संक्षिप्त नाम,
विस्तार और
प्रारम्भ ।

1. (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम विस्थापित व्यक्ति (ऋण समायोजन) अधिनियम, 1951 है ।

(2) इसका विस्तार जम्मू-कश्मीर राज्य को छोड़कर सम्पूर्ण भारत पर है ।

(3) यह उस तारीख को प्रवृत्त होगा जो केन्द्रीय सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, नियत करे, और विभिन्न राज्यों या उनके विभिन्न भागों के लिए विभिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी ।

2. इस अधिनियम में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,— परिभाषाएं ।

1913 का 7

(1) "कम्पनी" से इण्डियन कम्पनीज ऐक्ट, 1913 में यथापरिभाषित कम्पनी अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत वह कम्पनी भी है जो इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट उपबन्धों में से किसी के कारण उस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत की गई समझी जाएगी ;

1913 का 7

(2) "कंपनी अधिनियम" से इण्डियन कम्पनीज ऐक्ट, 1913 अभिप्रेत है ;

(3) "प्रतिकर" से कोई प्रतिकर अभिप्रेत है जो चाहे नकद या वस्तु के रूप में हो और जो विस्थापित व्यक्ति के स्वामित्वाधीन पश्चिमी पाकिस्तान की किसी स्थावर सम्पत्ति के बारे में भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार के बीच इस निमित्त परिनिर्धारित किया गया हो या भारत सरकार द्वारा विरचित किसी साधारण स्कीम के अधीन संदत्त किया गया हो ;

1912 का 2

(4) "सहकारी समिति" से सहकारी समिति अधिनियम, 1912 के अधीन या सहकारी समितियों के रजिस्ट्रीकरण के लिए किसी राज्य में तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत सहकारी समिति अभिप्रेत है ;

1912 का 2

(5) "सहकारी समिति अधिनियम" से सहकारी समिति अधिनियम, 1912 अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत सहकारी समितियों से संबंधित किसी राज्य में तत्समय प्रवृत्त कोई अन्य विधि भी है ;

(6) "ऋण" से सिविल या राजस्व न्यायालय को डिक्री या आदेश के अधीन या अन्यथा कोई धन संबंधी दायित्व अभिप्रेत है, जो चाहे वर्तमान में संदेय हो या भविष्य में अथवा अभिनिश्चित हो या अभिनिश्चित किया जाना हो, जो—

(क) ऐसे विस्थापित व्यक्ति के संबंध में जिसने किसी ऐसे क्षेत्र से जो अब पश्चिमी पाकिस्तान का भाग है, अपना निवास का स्थान छोड़ दिया है, या जिसे विस्थापित कर दिया गया है, उसके किसी ऐसे क्षेत्र में जो अब भारत का भाग है, निवास के लिए आने के पूर्व उपगत हो गया था ;

(ख) ऐसे विस्थापित व्यक्ति के संबंध में, जो अगस्त, 1947 के पन्द्रहवें दिन के पूर्व और पश्चात् किसी ऐसे क्षेत्र में जो अब भारत का भाग है निवास कर रहा है, ऐसे राज्यक्षेत्रों में जो अब पश्चिमी पाकिस्तान का भाग है स्थित किसी स्थावर सम्पत्ति की सुरक्षा पर उक्त तारीख से पूर्व उपगत हो गया था ;

परन्तु जहां कोई ऐसा दायित्व जो भारत और पश्चिमी पाकिस्तान दोनों में स्थित स्थावर सम्पत्ति की प्रतिभूति पर उपगत हुआ था, उक्त सम्पत्तियों के बीच इस प्रकार प्रभाजित किया जाएगा कि दायित्व का उक्त सम्पत्तियों में से प्रत्येक के संबंध में ऋण की कुल रकम से अनुपात वही हो जो संव्यवहार की तारीख को सम्पत्तियों में से प्रत्येक के मूल्य का, प्रतिभूति के रूप में दी गई सम्पत्तियों के कुल मूल्य का है, और दायित्व इस खण्ड के प्रयोजनार्थ वही दायित्व होगा जो कि पश्चिमी पाकिस्तान में सम्पत्ति से संबंधित माना जा सकता है ;

(ग) किसी अन्य व्यक्ति से (चाहे वह विस्थापित व्यक्ति हो अथवा नहीं) जो उन राज्यक्षेत्रों में जिन पर इस अधिनियम का विस्तार है, मामूली तौर से निवास कर रहा है विस्थापित व्यक्ति को देय है ;

और जिसके अन्तर्गत—

किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जो इस खंड में विनिर्दिष्ट है इस अधिनियम के प्रारंभ के पूर्व उपगत किया गया कोई धन संबंधी दायित्व भी है, जो ऐसे किसी दायित्व पर अधीन है और एकमात्र उसके नवीकरण के रूप में है जो उपखंड (क) या उपखंड (ख) या उपखंड (ग) में विनिर्दिष्ट है :

परन्तु ऐसे उधार की दशा में, जो चाहे नकद हो या वस्तु के रूप में, मूल रूप से अग्रिम रकम को न कि उस रकम को जिसके लिए दायित्व का नवीकरण किया गया है उस दायित्व का परिमाण समझा जाएगा ;

किन्तु इसके अन्तर्गत पश्चिमी पाकिस्तान में स्थित किसी न्यायालय द्वारा अगस्त, 1947 के पन्द्रहवें दिन के पश्चात् पारित किसी डिक्ली के अधीन देय कोई धन संबंधी दायित्व या कोई ऐसा धन संबंधी दायित्व नहीं है जिसका सबूत मौखिक करार पर ही निर्भर हो ;

(7) "विस्थापित बैंक" से वह बैंककारी कंपनी अभिप्रेत है जो अगस्त, 1947 के पन्द्रहवें दिन के पूर्व चाहे पूर्णतः या भागतः किसी ऐसे क्षेत्र में जो अब पश्चिमी पाकिस्तान का भाग है, बैंककारी कारबार करती थी और राजपत्र में अधिसूचना द्वारा केन्द्रीय सरकार द्वारा इस अधिनियम के अर्थ में विस्थापित बैंक घोषित की गई हैं।

(8) "विस्थापित लेनदार" से ऐसा विस्थापित व्यक्ति अभिप्रेत है जिसको किसी अन्य व्यक्ति से चाहे वह विस्थापित व्यक्ति हो अथवा नहीं, ऋण शोध्य है ;

(9) "विस्थापित देनदार" से ऐसा विस्थापित व्यक्ति अभिप्रेत है जिससे ऋण शोध्य है या ऋण का दावा किया जा रहा है ;

(10) "विस्थापित व्यक्ति" से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसने भारत और पाकिस्तान के डोमिनियन बनने के कारण या किसी ऐसे क्षेत्र में जो अब पश्चिमी पाकिस्तान का भाग है, सिविल उपद्रवों के कारण या ऐसे उपद्रवों के डर से 1947 के मार्च के प्रथम दिन के पश्चात्, ऐसे क्षेत्र से अपना निवास स्थान छोड़ दिया था या वहाँ से विस्थापित कर दिया गया था, और जो तत्पश्चात् भारत में निवास कर रहा है और इसके अन्तर्गत ऐसा व्यक्ति भी है जो किसी ऐसे स्थान का जो अब भारत का भाग है निवासी है और जो उस कारण पश्चिमी पाकिस्तान में उसके स्वामित्व की किसी स्थावर सम्पत्ति का प्रबंध, पर्यवेक्षण या नियंत्रण करने में असमर्थ है या असमर्थ कर दिया गया है किन्तु इसके अन्तर्गत बैंककारी कंपनी नहीं है ;

(11) "विहित" से अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित अभिप्रेत है ;

(12) "अधिकरण" से धारा 4 के अधीन विनिर्दिष्ट कोई सिविल न्यायालय अभिप्रेत है जिसे इस अधिनियम के अधीन अधिकारिता का प्रयोग करने का प्राधिकार है ;

(13) "सत्यापित दावा" से डिस्प्लेस्ड पर्सन्स (क्लेम्स) ऐक्ट, 1950 के अधीन रजिस्ट्रीकृत कोई दावा अभिप्रेत है, जिसके बारे में उसके सत्यापन और मूल्यांकन से संबंधित अंतिम आदेश उस अधिनियम के अधीन पारित कर दिया गया है ;

(14) "पश्चिमी पाकिस्तान" से पूर्वी बंगाल के प्रांत को अपवाजित करते हुए पाकिस्तान का राज्यक्षेत्र अभिप्रेत है ।

अधिनियम, नियम
और आदेश का
अध्यारोहीप्रभाव ।

3. इस अधिनियम में अभिव्यक्त रूप से अन्यथा उपबोधित के सिवाय इस अधिनियम के उपबंध और तदधीन बनाए गए नियम और आदेश, तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में या न्यायालय की किसी डिक्ली या आदेश में या पक्षकारों के बीच किसी संविदा में, उससे असंगत किसी बात के होते हुए भी, प्रभावी होंगे ।

4. राज्य सरकार, राजपद में अधिसूचना द्वारा किसी सिविल न्यायालय या सिविल न्यायालयों के वर्ग को ऐसे अधिकरण या अधिकरणों के रूप में विनिर्दिष्ट कर सकेगी जिन्हें इस अधिनियम के अधीन अधिकारिता का प्रयोग करने का प्राधिकार है और उन क्षेत्रों को जिसमें तथा वह परिमाण जिस तक ऐसी अधिकारिता का प्रयोग किया जा सकेगा, परिभाषित कर सकेगी।

अधिकरण जो इस अधिनियम के अधीन अधिकारिता का प्रयोग करने को सक्षम है।

अध्याय 2

ऋण समायोजन कार्यवाही

5. (1) उस तारीख के पश्चात् जब यह अधिसूचना किसी स्थायी क्षेत्र में प्रवृत्त होता है एक वर्ष के भीतर किसी समय विस्थापित देनदार अपने ऋणों के समायोजन के लिए उस अधिकरण को जिसकी अधिकारिता की स्थानीय सीमाओं के भीतर वह वास्तविक रूप से और स्वेच्छा से निवास करता है, या व्यापार करता है या लाभ के लिए वैयक्तिक रूप से काम करता है आवेदन कर सकेगा।

ऋणों के समायोजन के लिए विस्थापित देनदारों द्वारा आवेदन।

(2) विस्थापित देनदार द्वारा प्रत्येक आवेदन में निम्नलिखित विशिष्टियां होंगी, अर्थात् :—

(क) स्थान जहां वह निवास करता है ;

(ख) व्यापार, आजीविका, वृत्ति या अन्य नियोजन जिसमें कि वह अब लगा हुआ है और जिसमें वह विस्थापित व्यक्ति होने के पूर्व पश्चिमी पाकिस्तान में लगा हुआ था ;

(ग) आवेदन के ठीक पूर्ववर्ती तीन वर्षों के दौरान भारत में उसकी औसत वार्षिक आय ;

(घ) आय-कर और अतिकर, यदि कोई हो, जो आवेदन के ठीक पूर्ववर्ती तीन वर्षों के लिए उस पर निर्धारित किया गया है ;

(ङ) ऐसी अन्य विशिष्टियां जो विहित की जाएं ;

और आवेदन के साथ निम्नलिखित अनुसूचियां दी जाएंगी, अर्थात् :—

(i) एक अनुसूची जिसमें कि उसके समस्त ऋणों की पूर्ण विशिष्टियां, चाहे वह संयुक्त या वैयक्तिक रूप से ऋणबद्ध हो, उसके लेनदारों और संयुक्त देनदारों, यदि कोई हों, के नाम और पत्तों सहित जहां तक वे ज्ञात हों या उसके द्वारा युक्तियुक्त सावधानी और तत्परता से अभिनिश्चित किए जा सकते हों ;

(ii) एक अनुसूची जिसमें उसकी जंगम और स्थावर दोनों प्रकार की समस्त सम्पत्ति भी (उसको शोध्य दावों सहित) है जिसकी इस अधिनियम की धारा 31 द्वारा यथासंशोधित सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन कुर्की नहीं की जा सकती हो, उसके मूल्यों और उन स्थानों का भी विनिर्देश होगा जहां वह प्राप्त की जा सकती है ;

(iii) एक अनुसूची जिसमें उसकी जंगम और स्थावर दोनों प्रकार की सम्पत्ति (उसको शोध्य दावों सहित) है जो इस खंड के अद (ii) के अधीन अनुसूची में सम्मिलित नहीं है ; और

(iv) एक अनुसूची जिसमें उसकी समस्त सम्पत्तियों की जितके बारे में डिफिनेट प्रॉसेस (प्रोसेस) एक्ट, 1950 के अधीन रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी को दावा प्रस्तुत कर दिया गया है और जहां उस अधिनियम

के अधीन दावे के सत्यापन और मूल्यांकन के संबंध में कोई आदेश पारित कर दिया गया है उस आदेश की प्रमाणित प्रतिलिपि सहित ।

(3) समस्त व्यक्ति जिनके नाम अनुसूची में विस्थापित देनदार के विरुद्ध दावेदार के रूप में दिखाए गए हैं और ऐसे समस्त व्यक्ति जिनके नाम संयुक्त देनदारों के रूप में दिखाए गए हैं, आवेदन में प्रत्यर्थी समझे जाएंगे, और आवेदन के साथ, या अधिकरण की अनुज्ञा से कार्यवाही के किसी पश्चात्कर्ती प्रक्रम पर आवेदन की उतनी प्रतियां और प्रत्यर्थियों को सम्यक् रूप से सम्बोधित विहित प्ररूप में इतने लिफाफे और नोटिस जितने कि प्रत्यर्थी हैं फाइल किए जाएंगे ।

कतिपय दशाओं में आवेदन का अस्वीकृत किया जाना ।

6. जहां धारा 5 के अधीन किया गया कोई आवेदन उस धारा की अपेक्षाओं में से किसी का अनुपालन नहीं करता, वहां अधिकरण या तो उसे अस्वीकार कर सकेगा या आवेदक को उतना अतिरिक्त समय प्रदान कर सकेगा जितना वह ऐसी अपेक्षाओं का अनुपालन करने के लिए ठीक समझता है ।

नोटिस का जारी किया जाना ।

7. यदि आवेदन धारा 6 के अधीन अस्वीकार नहीं किया जाता है, तो अधिकरण, धारा 5 में निर्दिष्ट नोटिसों में आवेदन की सुनवाई के लिए तारीख प्रविष्ट कराने के पश्चात् प्रत्यर्थियों पर उनकी तामील करवाएगा ।

प्रत्यर्थियों द्वारा आक्षेप ।

8. धारा 7 के अधीन नोटिस के प्रत्युत्तर में प्रत्यर्थी आवेदन के विरुद्ध लिखित विवरण, जिसमें आवेदन के प्रति उसके आक्षेप अन्तर्विष्ट होंगे फाइल करके हेतुक दर्शित कर सकेगा :

परन्तु जहां वह स्वयं या प्राधिकृत अभिकर्ता के माध्यम से उपस्थित नहीं होता है, वहां अधिकरण को लिखित विवरण रसीदी रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा सिविल न्यायिक अधिकारी या मजिस्ट्रेट या किसी अन्य विहित अधिकारी की उपस्थिति में हस्ताक्षर करके और ऐसे अधिकारी या मजिस्ट्रेट द्वारा सम्यक् रूप से अनुप्रमाणित करके भेजा जा सकेगा ।

प्रत्यर्थियों पर नोटिस की तामील के पश्चात् कार्यवाही ।

9. (1) कोई आवेदक विस्थापित व्यक्ति है या नहीं, या किसी लेनदार को शोध्य ऋण की रकम या उसके अस्तित्व या किसी विस्थापित देनदार की आस्तियों के बारे में यदि कोई विवाद है, तो अधिकरण ऐसा साक्ष्य लेने के पश्चात् जो समस्त संबंधित पक्षकारों द्वारा दिए जाएं, मामले का विनिश्चय करेगा और उसके संबंध में ऐसी डिक्री पारित करेगा जो वह ठीक समझे ।

(2) यदि ऐसा कोई विवाद नहीं है, या प्रत्यर्थी उपस्थित नहीं होते, या आवेदन के मन्जूर किए जाने पर कोई आक्षेप नहीं करते, तो अधिकरण, उसके सामने दिए गए साक्ष्य पर विचार करने के पश्चात् उसके संबंध में ऐसी डिक्री पारित कर सकेगा जो वह ठीक समझे ।

विस्थापित देनदारों के विरुद्ध लेनदारों के दावे ।

10. विस्थापित देनदार के विरुद्ध दावा करने वाला कोई विस्थापित व्यक्ति ऐसे प्ररूप में, जो विहित किया जाए, उसके अधिधारण के लिए उस अधिकरण को जिसकी अधिकारिता की स्थानीय सीमाओं के भीतर विस्थापित देनदार वास्तविक रूप से और स्वच्छा से निवास करता है या व्यापार करता है या वैयक्तिक रूप से लाभ के लिए काम करता है, उसकी पूर्ण विशिष्टियां देते हुए लेनदार को शोध्य ऋणों के विवरण के साथ आवेदन दे सकेगा ।

लेनदारों के आवेदन पर प्रक्रिया ।

11. (1) जहां धारा 10 के अधीन आवेदन किया गया है, वहां अधिकरण विस्थापित देनदार पर आवेदन के विरुद्ध हेतुक, यदि कोई हो, दर्शित करने अथवा धारा 5 के अधीन उससे अपनी ओर से आवेदन करने की अपेक्षा करते हुए, नोटिस तामील करवाएगा ।

(2) यदि उपधारा (1) के अधीन नोटिस के उत्तर में, विस्थापित देनदार धारा 5 के उपबंधों के अनुसार आवेदन करता है, तो अधिकरण मामले में ऐसी अग्रिम कार्यवाही करेगा मानो वह विस्थापित देनदार द्वारा धारा 5 के अधीन आवेदन पर प्रारम्भ की गई थी और इस अधिनियम के अन्य समस्त उपबंध तदनुसार लागू होंगे ; किन्तु, यदि विस्थापित देनदार कोई ऐसा आवेदन देना नहीं चाहता तो अधिकरण, ऐसे साक्ष्य पर, यदि कोई हो, जो उसके सामने पेश किया जाए, विचार करने के पश्चात् दावे का अवधारण करेगा और उसके संबंध में ऐसी डिक्री पारित करेगा जो वह ठीक समझे ।

(3) विस्थापित देनदार द्वारा आवेदन के बारे में धारा 5 की उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट परिसीमा काल उपधारा (2) के अधीन किए गए आवेदन को लागू नहीं होगा ।

12. (1) विस्थापित देनदार का कोई लेनदार अधिकरण को, यह कथन करते हुए आवेदन कर सकेगा कि विस्थापित देनदार ने जिसने धारा 5 या धारा 11 की उपधारा (2) के अधीन आवेदन किया है, अपनी आस्तियों का कोई भाग छिपाया है, और अधिकरण, विस्थापित देनदार को उसका सम्यक् नोटिस देने के पश्चात् मामले का अवधारण करेगा ।

आस्तियों की अनुसूची पर लेनदारों द्वारा आक्षेप ।

(2) यदि अधिकरण इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि विस्थापित देनदार ने जानबूझकर और कपटपूर्वक अपने आवेदन में ऐसी आस्तियों को सम्मिलित नहीं किया है, तो अधिकरण ऐसे आवेदन को खारिज कर सकेगा या विस्थापित देनदार को इस अधिनियम के अधीन अनुतोषों में से कोई, जिसके लिए वह अन्यथा हकदार होता, देना नामन्जूर कर सकेगा या उसके संबंध में ऐसा अन्य आदेश पारित कर सकेगा जो वह ठीक समझे ।

13. उस तारीख के पश्चात् जब यह अधिनियम किसी स्थानीय क्षेत्र में प्रवृत्त होता है, एक वर्ष के भीतर किसी समय किसी अन्य व्यक्ति से जो विस्थापित व्यक्ति नहीं है ऋण का दावा करने वाला कोई विस्थापित लेनदार, ऐसे प्ररूप में जो विहित किया जाए उस अधिकरण को जिसकी अधिकारिता की स्थानीय सीमाओं के भीतर वह या प्रत्यर्थी अथवा यदि एक से अधिक प्रत्यर्थी हैं तो ऐसे प्रत्यर्थियों में से कोई वास्तविक रूप से और स्वेच्छा से निवास करता है या व्यापार करता है या लाभ के लिए वैयक्तिक रूप से काम करता है, उसे शोध्य ऋण के विवरण सहित उसकी पूर्ण विशिष्टियां देते हुए आवेदन कर सकेगा ।

विस्थापित लेनदारों द्वारा उन व्यक्तियों के विरुद्ध दावे जो विस्थापित देनदार नहीं हैं ।

14. (1) जहां धारा 13 के अधीन कोई आवेदन अधिकरण को किया गया है, वहां अधिकरण आवेदन के विरुद्ध कारण, यदि कोई हों, बताने की अपेक्षा करते हुए उसका नोटिस देनदार को दिलवाएगा ।

विस्थापित लेनदार की अर्जी पर प्रक्रिया ।

(2) आवेदक विस्थापित लेनदार है या नहीं या ऋण के अस्तित्व के बारे में या उसकी रकम के बारे में यदि कोई विवाद है तो अधिकरण मामले को ऐसा साक्ष्य लेने के पश्चात् जो उसके सामने पेश किया जाए निश्चित करेगा और उसके संबंध में ऐसी डिक्री पारित करेगा जो वह ठीक समझे ।

(3) यदि ऐसा कोई विवाद नहीं है अथवा यदि देनदार उपस्थित नहीं होता है या उसे बताने का कोई कारण नहीं है तो अधिकरण उसके सामने पेश किए गए साक्ष्य पर विचार करने के पश्चात् उसके संबंध में ऐसी डिक्री पारित करेगा जो वह ठीक समझे ।

15. जहां विस्थापित देनदार ने धारा 5 के अधीन या धारा 11 की उपधारा (2) के अधीन अधिकरण को आवेदन किया है, वहां निम्नलिखित परिणामों का होना सुनिश्चित होगा, अर्थात् :—

विस्थापित देनदार के आवेदन का परिणाम ।

(क) किसी ऐसे ऋण के बारे में, जिसके अद्यधीन विस्थापित देनदार है, किसी सिविल न्यायालय में उक्त आवेदन की तारीख को लम्बित समस्त कार्यवाहियों (विस्थापित देनदार के विरुद्ध पारित की गई डिक्री या आदेशों के विरुद्ध अपील या पुनर्विलोकन या पुनरीक्षण के रूप में कार्यवाहियों को छोड़कर) रोक दी जाएगी और यथा पूर्वोक्त अपील, पुनर्विलोकन या पुनरीक्षण को छोड़कर ऐसी समस्त कार्यवाहियों के अभिलेख अधिकरण को अन्तरित और समेकित किए जाएंगे ;

(ख) समस्त कुकियां, व्यादेश, रिसीवर नियुक्त करने वाले आदेश या किसी ऐसे न्यायालय द्वारा जारी की गई और किसी ऐसे ऋण के बारे में उक्त आवेदन की तारीख को प्रवृत्त अन्य आवेशिकाएं प्रभावित रहेंगी और कोई आवेशिका, इसमें इसके पश्चात् अभिव्यक्त रूप से उपबंधित के सिवाय जारी नहीं की जाएगी :

परन्तु जहां रिसीवर नियुक्त करने वाला आदेश इस धारा के अधीन प्रभावी नहीं रहता है वहां रिसीवर, उस तारीख से जिससे उसकी नियुक्ति प्रभावी नहीं रहती चौदह दिन के भीतर या ऐसे अतिरिक्त समय के भीतर जो अधिकरण किसी दशा में अनुज्ञात करे, उस न्यायालय के बदले जिसने उसकी नियुक्ति की है अधिकरण को अपने बकाया लेख प्रस्तुत करेंगे और अधिकरण को ऐसे लेखों के संबंध में, रिसीवर के बारे में वही शक्तियां होंगी जो उस न्यायालय को थीं या हो सकती थीं जिसने उसको नियुक्त किया था ;

(ग) कोई नया वाद या अन्य कार्यवाही खण्ड (क) में निर्दिष्ट अपील, पुनर्विलोकन या पुनरीक्षण से भिन्न विस्थापित देनदार के विरुद्ध उसके आवेदन से सुसंगत अनुसूची में उसके द्वारा उल्लिखित किसी ऋण के बारे में संस्थित नहीं की जाएगी ;

(घ) विस्थापित देनदार की कोई स्थावर सम्पत्ति जो कुर्की के लिए दायी है, अधिकरण के प्राधिकार के अधीन और ऐसी शर्तों पर ही जो वह ठीक समझे अन्तरित की जाएगी जब तक कि विस्थापित देनदार का आवेदन अंतिम रूप से निपटा न दिया गया हो या उसके विरुद्ध पारित की गई कोई डिक्री की इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार तुष्टि न कर दी गई हो ।

स्थावर सम्पत्ति पर प्रतिभूत ऋण।

16. (1) जहां विस्थापित व्यक्ति द्वारा उपगत ऋण पश्चिमी पाकिस्तान में उसके स्वामित्व की स्थावर सम्पत्ति पर बंधक, प्रभार या धारणाधिकार के द्वारा प्रतिभूत किया गया है, वहां अधिकरण, इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही के प्रयोजनों के लिए, लेनदार से यह अपेक्षा कर सकेगा कि वह प्रतिभूति को रोके रहने या अप्रतिभूत लेनदार समझे जाने का निर्वाचन करे ।

(2) यदि लेनदार प्रतिभूति को रोके रहने का निर्वाचन करता है तो वह धारा 10 में यथा उपबंधित इस निमित्त अधिकारिता रखने वाले अधिकरण को, अपने ऋण के अधीन शोध्य रकम की घोषणा करने के लिए आवेदन कर सकेगा ।

(3) जहां किसी भी दशा में लेनदार अपनी प्रतिभूति रोके रहने का निर्वाचन करता है, वहां यदि विस्थापित देनदार किसी ऐसी सम्पत्ति के बारे में जो उपधारा (1) में निर्दिष्ट है कोई प्रतिकर प्राप्त करता है तो लेनदार—

(क) जहां प्रतिकर नकद संदत्त किया गया है, उस पर प्रथम प्रभार का हकदार होगा :

परन्तु ऋण की रकम जिसके बारे में वह प्रथम प्रभार के लिए हकदार होगा वह रकम होगी जिसका कुल ऋण से वैसा ही अनुपात है जैसा सम्पत्ति के बारे में संदत्त किए गए प्रतिकर का इसके बारे में सत्यापित दावे के मूल्य से है; और उस परिमाण तक ऋण कम किया गया समझा जाएगा ;

(ख) जहां प्रतिकर संपत्ति के विनिमय के रूप में है वहां विनिमय के रूप में इस प्रकार प्राप्त की गई भारत में स्थित सम्पत्ति पर प्रथम प्रभार का हकदार होगा :

परन्तु ऋण की रकम जिसके बारे में वह प्रथम प्रभार के लिए हकदार होगा वह रकम होगी जिसका कुल ऋण से बैसा ही अनुपात है जैसा विनियम के रूप में प्राप्त सम्पत्ति के मूल्य का उसके बारे में सत्यापित दावे के मूल्य से है, और उस परिमाण तक ऋण कम किया गया समझा जाएगा।

(4) इस धारा में किसी बात के होते हुए भी, जहां ऋण पश्चिमी पाकिस्तान में विस्थापित व्यक्ति के स्वामित्व की कृषि भूमि के बंधक द्वारा प्रतिभूत है और बंधक कब्जे सहित था वहां बंधकदार, यदि उसे उस भूमि के बदले में जो पश्चिमी पाकिस्तान में उसके स्वामित्व में थी भारत में भूमि आबंटित की गई है तो आबंटित की गई भूमि के कब्जे में रखने का तब तक हकदार होगा जब तक कि ऋण की भूमि के भोग से तुष्टि नहीं हो जाती है या वह देनदार द्वारा मोचित नहीं कर दिया जाता :

परन्तु किसी भी दशा में ऋण की रकम केवल वही रकम होगी जिसका कुल ऋण से बैसा ही अनुपात है जैसा भारत में लेनदार को आबंटित भूमि के मूल्य का उसके द्वारा पश्चिमी पाकिस्तान में छोड़ी गई भूमि के मूल्य से है और उस परिमाण तक ऋण कम किया गया समझा जाएगा।

(5) जहां लेनदार ऋण के संबंध में अप्रतिभूत लेनदार समझे जाने का निर्वाचन करता है, वहां इस अधिनियम के उपबंध तदनुसार लागू होंगे।

17. (1) जहां विस्थापित व्यक्ति द्वारा उपगत और उसकी जंगम सम्पत्ति के गिरवी द्वारा प्रतिभूत ऋण के बारे में देनदार के विस्थापित व्यक्ति होने के पूर्व किसी समय ऐसी सम्पत्ति लेनदार के कब्जे में रखी गई थी, वहां निम्नलिखित नियम लेनदार और देनदार के अधिकारों और दायित्वों का विनियमन करेंगे, अर्थात् :—

जंगम सम्पत्ति पर प्रतिभूत ऋण।

(क) लेनदार, यदि अब भी उसके कब्जे में गिरवी रखी गई सम्पत्ति है तो वह उसे देय राशि को ऐसी सम्पत्ति के विक्रय द्वारा, देनदार को विक्रय की युक्ति-युक्त सूचना देने के पश्चात् वसूल कर सकेगा ;

(ख) लेनदार किसी भी दशा में जहां गिरवी रखी गई सम्पत्ति अब उसके कब्जे में नहीं रही है या देनदार द्वारा मोचन के लिए उपलब्ध नहीं है तो देनदार से ऋण या उसका कोई भाग जिसके लिए गिरवी रखी गई सम्पत्ति प्रतिभूति थी वसूल करने का हकदार नहीं होगा ;

(ग) देनदार किसी गिरवी रखी गई सम्पत्ति के, लेनदार द्वारा विक्रय की दशा में, चाहे खण्ड (क) के अधीन हो या अन्यथा, जहां ऐसे विक्रय के आगम देय ऋण की रकम से कम हैं, अतिशेष संदत्त करने का दायी नहीं होगा ;

(घ) लेनदार किसी भी दशा में जहां गिरवी रखी गई सम्पत्ति के विक्रय के आगम देय ऋण की रकम से अधिक है वहां देनदार को अधिशेष संदत्त करेगा।

स्पष्टीकरण 1—इस धारा के प्रयोजनों के लिए लेनदार के बारे में किसी भी दशा में यह समझा जाएगा कि गिरवी रखी सम्पत्ति उसके कब्जे में है जबकि गिरवी रखी गई सम्पत्ति यद्यपि उसको दी नहीं गई है अपितु उसके द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति को दी गई थी या लेनदार की ओर से देनदार द्वारा धारित की जा रही थी और उसका स्वामित्व या कब्जा लेनदार की अभिव्यक्त सम्मति या अनुज्ञा के बिना तृतीय पक्षकार को अन्तरित नहीं किया जा सकता था।

स्पष्टीकरण 2—जहां कोई मोटरयान या अन्य जंगम सम्पत्ति ऐसे धन से क्रय की गई है, जिसका सम्पूर्ण या कोई भाग लेनदार से उधार लिया गया है,

जिसके पास प्रतिभूति के रूप में उसका स्वामित्व है, किन्तु वह अपनी अनुज्ञा से देनदार को उसका उपयोग करने देता है वहां सम्पत्ति इस धारा के प्रयोजनों के लिए लेनदार के कब्जे में देनदार की गिरवी रखी गई सम्पत्ति समझी जाएगी।

(2) इस धारा में किसी बात के होते हुए भी लेनदार गिरवी रखी गई सम्पत्ति को हानि या विनाश से उद्भूत होने वाले किसी दावे के बारे में बीमा कम्पनी से इस अधिनियम के अधीन या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन शोध्य किसी राशि को प्राप्त करने के लिए और उसके बारे में विधिमान्य उन्मोचन करने के लिए हकदार होगा, किन्तु लेनदार उस दशा में जहां बीमा कम्पनी से प्राप्त राशि उसको शोध्य ऋण की रकम से अधिक है, वहां वह देनदार को अधिशेष संदत्त करेगा।

बीमा कम्पनी के विरुद्ध दावे।

18. (1) जहां विस्थापित व्यक्ति को पश्चिमी पाकिस्तान में की कोई सम्पत्ति अगस्त, 1947 के पन्द्रहवें दिन के पूर्व किसी बीमा कम्पनी के साथ आग या चोरी या बलबे या सिविल उपद्रव से होने वाली जोखिम के विरुद्ध बीमाकी गई थी और उस समय जब बीमा की संविदा प्रवृत्त थी ऐसी किसी जोखिम से ऐसी सम्पत्ति को हानि हो गई हो तो ऐसी कम्पनी उसके सम्बन्ध में किसी दावे के अधीन देय राशि को संदत्त करने से इंकार करने की हकदार इस कारण न होगी कि—

(क) करार पाए गए समय के भीतर पुलिस को कोई रिपोर्ट नहीं की गई थी, या

(ख) करार पाए गए समय के भीतर कम्पनी पर कोई दावा नहीं किया गया था, या

(ग) पश्चिमी पाकिस्तान में हुए उपद्रव, बलबे या सिविल उपद्रव के स्वरूप में नहीं थे जब पालिसी, बलबे और सिविल उपद्रव से प्रोद्भूत किसी जोखिम के लिए है, या

(घ) विस्थापित व्यक्ति ने संविदा की कोई अन्य ऐसी शर्त पूरी नहीं की है जो केन्द्रीय सरकार की राय में तकनीकी प्रकृति की है और जिसको केन्द्रीय सरकार ने राजपत्र में अधिसूचना द्वारा इस धारा के अयोजन के लिए संविदा की शर्त के रूप में विनिर्दिष्ट कर दिया है,

और कोई विपरीत संविदा उस सीमा तक जिस तक वह इस उपधारा के उपबन्धों के उल्लंघन में है प्रभावी नहीं समझी जाएगी।

(2) जहां उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में किसी सम्पत्ति के बारे में हानि उपगत हो गई है, वहां अधिकरण प्रत्येक कार्यवाही में जहां ऐसा करना आवश्यक हो, हानि की रकम, वह रकम जिसके लिए ऐसी हानि की तारीख को सम्पत्ति का बीमा किया गया था और बीमा कम्पनी द्वारा संदत्त रकम, यदि कोई हो, क्रमशः अवधारित करेगा और उसकी रिपोर्ट, ऐसे बोर्ड या अन्य प्राधिकारी को करेगा जो विहित किया जाए, और विहित बोर्ड या अन्य प्राधिकारी ऐसे मामलों को जो विहित किए जाएं और उससे सुसंगत हों, ध्यान में रखते हुए और इस निमित्त बनाए गए किन्हीं स्थितियों के अधीन रहते हुए, अधिकरण को उस रकम के लिए अस्थापना करेगा जिसके लिए बीमा कम्पनी के विरुद्ध दावा डिक्री की जाएगी और अधिकरण तदनुसार डिक्री पारित करेगा।

(3) उपधारा (2) के अधीन पारित किसी डिक्री के अधीन बीमा कम्पनी से वसूल की गई रकम, प्रथमतः विस्थापित व्यक्ति से शोध्य ऋण की तुष्टि के लिए उपयोजित की जाएगी और अतिशेष, यदि कोई हो, विस्थापित व्यक्ति को लौटाया जाएगा।

(4) इस धारा के अधीन आवेदन या तो उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में बीमा कम्पनी के विरुद्ध दावा करने वाले विस्थापित व्यक्ति द्वारा या किसी समनुदेशित या ऐसे किसी विस्थापित व्यक्ति के दावे में हित रखने वाले किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उस अधिकरण को किया जाएगा जिसकी अधिकारिता की स्थानीय सीमाओं के भीतर विस्थापित व्यक्ति वास्तविक रूप से और स्वेच्छा से निवास करता है या व्यापार करता है या लाभ के लिए वैयक्तिक रूप से काम करता है, या इस धारा के अधीन आवेदन करने वाले विस्थापित बैंक की दशा में, उपधारा (2) के उपबन्धों के अनुसार दावे के सम्बन्ध में शोध रकम के अवधारण के लिए उस अधिकरण को किया जा सकेगा जिसकी सीमाओं के भीतर बैंक कारबार करता है।

(5) उपधारा (4) के अधीन प्रत्येक कार्यवाही में बीमा कम्पनी और दावे में हितबद्ध सभी व्यक्ति पक्षकार होंगे :

परन्तु अधिकरण, कार्यवाही के किसी प्रक्रम पर यह निदेश दे सकेगा कि किसी ऐसे व्यक्ति का नाम कार्यवाही में जोड़ा जाए जिसकी उपस्थिति अधिकरण के समक्ष सभी अन्तर्वलित प्रश्नों को प्रभावी रूप से तथा पूर्णतया न्यायनिर्णयित करने तथा तय करने के लिए अधिकरण को समर्थ बनाने के लिए आवश्यक हो।

(6) इस धारा के अधीन कोई आवेदन किसी भी दशा में ग्रहण नहीं किया जाएगा जहाँ हर्षि की तारीख के पश्चात् एक वर्ष के भीतर बीमा कम्पनी को कोई दावा नहीं किया गया है।

स्पष्टीकरण—कोई दावा इस उपधारा के अर्थों में किया गया समझा जाएगा यदि उसकी सूचना, इस बात के होते हुए भी कि सूचना में दावे की रकम विनिर्दिष्ट नहीं है या बीमा की वह संविदा अपेक्षित प्ररूप में, यदि कोई हो, या किसी अन्य विनिर्दिष्ट प्ररूप में, नहीं है, हर्षि की तारीख के पश्चात् एक वर्ष के भीतर बीमा कम्पनी को दे दी गई है।

19. (1) जहाँ कम्पनी या सहकारी समिति ने विस्थापित व्यक्ति या विस्थापित बैंक पर अगस्त, 1947 के पश्चात् किसी व्यक्ति या कम्पनी या सहकारी समिति में धृत किसी अंश पर असदत्त रहने वाली किसी रकम के बारे में मांग की है और ऐसी मांग के बारे में देय किसी अन्तर्वलित करने में अक्षमता असफल रहा है, तो कम्पनी अधिनियम या आपन या संगम अनुच्छेद या सहकारी समिति अधिनियम में अन्तर्विष्ट किसी अतिकूल बात के होते हुए भी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में कोई व्याज संदेय नहीं होगा और, अथर्वस्थिति, कम्पनी या सहकारी समिति, अंश या उसके किसी भाग का समपहरण करने के लिए हकदार नहीं होगी और इस उपधारा में विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में किसी अंश के बारे में इस अधिनियम के प्रारम्भ के पूर्व किया गया कोई समपहरण प्रभावी नहीं समझा जाएगा और केवल ऐसे समपहरण के कारण ही किसी व्यक्ति के लिए यह नहीं समझा जाएगा कि वह कम्पनी या सहकारी समिति का सदस्य नहीं रह गया है।

(2) कम्पनी अधिनियम या आपन या संगम अनुच्छेद या सहकारी समिति अधिनियम में किसी बात के होते हुए भी विस्थापित व्यक्ति या विस्थापित बैंक के लिए विधिपूर्वक होगा कि, अथर्वस्थिति, कम्पनी या सहकारी समिति अपने अपने या इसके द्वारा कम्पनी या समिति में धृत किसी अंश के असदत्त अंश को पूर्ण असदत्त अंशों की इसी छोटी संख्या में संपरिवर्तित करने के लिए, जिनको समिति या कम्पनी ने जारी कर दिया है और जिसके बारे में पहले से मांग की जा चुकी है, आवेदन करे।

(3) जहाँ इस अधिनियम के प्रारम्भ से पूर्व संघर्ष के कोई अंश कम्पनी द्वारा उसके संगम अनुच्छेद के अनुसार व्यक्तित्व कर दिया गया है और कम्पनी के लिए विस्थापित

कम्पनियों में अंशों पर मांग।

व्यक्ति को वह अनुतोष देना जिना पूंजी बढ़ाए हुए संभव नहीं है जिसके लिए वह इस धारा के अधीन हकदार है, तो कंपनी की पूंजी उस परिमाण तक बढ़ी हुई समझी जाएगी जिस तक कि वह अनुतोष देने के लिए आवश्यक हो।

(4) यदि कंपनी या सहकारी समिति किसी ऐसे निवेदन का जो उपधारा (2) के अधीन आवेदन में अंतर्विष्ट है अनुपालन करने से इन्कार करती है, तो अधिकरण इस निमित्त उसे आवेदन किए जाने पर और यह समाधान हो जाने पर कि ऐसे इन्कार के लिए कोई कारण नहीं है, कंपनी या सहकारी समिति को तदनुसार निदेश दे सकेगा, और कंपनी या समिति उसका अनुपालन करने के लिए बाध्य होगी, और प्रत्येक ऐसा निदेश उसकी तारीख से प्रभावी होगा।

(5) इस धारा में अन्यथा उपबंधित के सिवाय इसमें अंतर्विष्ट कोई भी बात कंपनी अधिनियम में या ज्ञापन में या संगम अनुच्छेद के उपबंधों के अनुसरण में, कंपनी या उसके निदेशकों के बोर्ड द्वारा की गई किसी कार्यवाही की विधिमान्यता पर प्रभाव नहीं डालेगी।

(6) इस धारा के उपबंध अगस्त, 1947 के पंद्रहवें दिन से दस वर्ष की कालावधि के लिए प्रभावी रहेंगे और तत्पश्चात् उन बातों के सिवाय जो की गई थीं या जिनका लोप किया गया है प्रभावी नहीं रहेंगे।

जब कंपनी या सहकारी समिति समापन में हो तो विस्थापित व्यक्ति या बैंक से मांग का नहीं किया जाना।

20. (1) जहां कंपनी या सहकारी समिति का समापन हो रहा है, तो कोई विस्थापित व्यक्ति या विस्थापित बैंक कंपनी अधिनियम या ज्ञापन या संगम अनुच्छेद या सहकारी समिति अधिनियम में किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, अगस्त, 1947 के पंद्रहवें दिन कंपनी या समिति में उसके द्वारा धृत किसी श्रेण के बारे में, यथास्थिति, कंपनी या सहकारी समिति की आस्तियों के अभिदाय के लिए अपेक्षित नहीं किया जाएगा।

(2) इस धारा के उपबंध अगस्त, 1947 के पंद्रहवें दिन से दस वर्ष की कालावधि के लिए प्रभावी होंगे और उस तारीख के पूर्व की गई किसी मांग के बारे में भी जिसकी तुष्टि नहीं की गई है लागू होंगे, और उन बातों के सिवाय जो की गई थीं या जिनका लोप किया गया था उक्त कालावधि की समाप्ति के पश्चात् प्रभावी न रहेंगे।

कतिपय डिफ्री और समझौतों का पुनरीक्षण करने की शक्ति।

21. (1) जहां, इस अधिनियम के प्रारंभ के पूर्व, किसी ऋण के बारे में विस्थापित देनदार के विरुद्ध सिविल न्यायालय द्वारा डिफ्री पारित कर दी गई है या उसके द्वारा कोई समझौता किया गया है, वहां अधिकरण, उसे इस अधिनियम के उपबंधों के अनुरूप बनाने के लिए, ऐसे देनदार के आवेदन पर उसका पुनरीक्षण करेगा।

(2) ऐसी डिफ्री या समझौते के अधीन शोध्य रकम के अवधारण के लिए, अधिकरण, यथास्थिति, न्यायालय के जिसने डिफ्री पारित की थी निष्कर्ष या समझौते में अंतर्विष्ट तथ्यों को उस विस्तार तक आबद्धकर स्वीकार करेगा जिस तक के निष्कर्ष या तथ्य इस अधिनियम के उपबंधों से असंगत नहीं हैं :

परन्तु अधिकरण किसी ऐसी डिफ्री के अधीन कोई दावा तब तक अवधारित नहीं करेगा जब तक कि इसके विरुद्ध की गई कोई अपील या पुनरीक्षण अंतिम रूप से विनिश्चित नहीं हो जाता है या उससे कोई अपील करने के लिए अनुज्ञात कालावधि समाप्त नहीं हो जाती और ऐसे समस्त मामलों में अधिकरण का निष्कर्ष अंतिम डिफ्री पर आधारित होगा।

(3) इस धारा में किसी बात के होते हुए भी, कोई अधिकरण किसी ऋण के बारे में बीमा कंपनी और विस्थापित व्यक्ति के बीच या बीमा कंपनी और विस्थापित बैंक के बीच जिसका बीमा कंपनी के विरुद्ध विस्थापित व्यक्ति के दावे में हित है और उस हित

के आधार पर ऐसा समझौता किया गया है, इस अधिनियम के प्रारंभ के पूर्व किए गए समझौते को पुनरीक्षित नहीं करेगा :

परन्तु यह तब जब कि ऐसे समझौते के अनुसरण में पूर्ण संदाय कर दिया गया हो ।

22. जहां कोई ऋण विस्थापित व्यक्ति तथा अन्य व्यक्ति के साथ संयुक्त रूप से शोध्य है, वहां अधिकरण इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, उनके बीच में दायित्व का प्रभाजन निम्नलिखित नियमों के अनुसार करेगा, अर्थात् :—

संयुक्त ऋणों का प्रभाजन ।

(क) यदि प्रत्येक देनदार का दायित्व परिनिश्चित है तो प्रत्येक के परिनिश्चित अंश के अनुसार ;

(ख) यदि ऋण संयुक्त देनदारों के किसी व्यापार या कारबार के लिए लिया गया था, तो व्यापार या कारबार में संयुक्त देनदारों में से प्रत्येक के द्वारा धारित अंशों के अनुसार ;

(ग) यदि ऋण किन्हीं परिनिश्चित अंशों में, या किसी व्यापार या कारबार के लिए जिसमें भागीदारों का परिनिश्चित अंश हो, नहीं लिया गया था, तो ऋण उतने भागों में प्रभाजित किया जाएगा जितने संयुक्त देनदार हैं और प्रत्येक संयुक्त देनदार उसको प्रभाजित भाग के लिए ही उत्तरदायी होगा ;

(घ) यदि एक संयुक्त देनदार विस्थापित व्यक्ति है और दूसरे नहीं हैं, तो अविस्थापित व्यक्ति को प्रभाजित राशि, इस अधिनियम के अर्थों में ऋण नहीं समझी जाएगी और ऐसे ऋण के बारे में देनदार सिविल न्यायालय में या अन्यथा उसके लिए उपलब्ध कोई उपचार ढूँढ सकेगा ;

(ङ) यदि ऋण संयुक्त हिन्दू कुटुम्ब द्वारा लिया गया था तो संयुक्त हिन्दू कुटुम्ब के सदस्य इस धारा के अर्थों में संयुक्त देनदार समझे जाएंगे और ऋण उसके सदस्यों के बीच उसी अनुपात में प्रभाजित किया जाएगा जिसमें विभाजन पर उन्हें अंश आवंटित किए जाएंगे ;

परन्तु यह कि ऐसे संयुक्त कुटुम्ब के किसी सदस्य का अंश, जिसका उसकी उपरली पुरुष परम्परा में से कोई पुरुष पारम्परिक वंशज जीवित है और ऐसे सदस्य के साथ संयुक्त है, उपरली पुरुष परम्परा में उसके सबसे बड़े उत्तरजीवी वंशज के अंश में सम्मिलित समझा जाएगा और ऐसा सदस्य इस खंड के प्रयोजनार्थ संयुक्त देनदार नहीं माना जाएगा ;

(च) यदि दायित्व जंगम तथा स्थावर संपत्तियों से बंधक द्वारा प्रतिभूत है, तो ऋण दो संपत्तियों के बीच उस अनुपात से प्रभाजित किया जाएगा जो प्रत्येक संपत्ति का संपत्तियों के कुल मूल्यों से है ।

स्पष्टीकरण—इस खंड के प्रयोजनार्थ, जंगम संपत्ति का मूल्य उसका वह मूल्य समझा जाएगा जो उस तारीख के ठीक पूर्व था जिसमें देनदार विस्थापित व्यक्ति हो गया था, और स्थावर सम्पत्ति का मूल्य उसके बारे में सत्यापित दावे का मूल्य समझा जाएगा ;

(छ) जहाँ संयुक्त देनदारों के बीच प्रधान और प्रतिभू का संबंध है, वहाँ इस अधिनियम में अंतर्विष्ट कोई भी बात प्रतिभू के विरुद्ध दावे को संस्थित करने से निवारित नहीं करेगी, किन्तु डिक्ली हुई रकम से या उस रकम से जो इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार प्रधान देनदार के विरुद्ध डिक्ली की जा सकती हो, अधिक रकम के लिए ऐसे दाद में डिक्ली पारित नहीं की जाएगी ;

परन्तु वह कुल रकम जो प्रधान देनदार और प्रतिभू से वसूल की जा सकती, डिफ्री की गई रकम या उस रकम से जो इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार प्रधान देनदार के विरुद्ध अधिकरण द्वारा डिफ्री की जा सकती हो, अधिक नहीं होंगे।

अतिरिक्त मामलों में सहायक प्रक्रिया।

23. किसी व्यक्तिगत श्रेण के जो भी हफाररस से अधिक नहीं है, अवधारण में—

(क) अधिकरण के लिए यह आवश्यक नहीं होगा कि वह साक्षियों का साक्ष्य पूरा लिखे, किन्तु अधिकरण प्रत्येक साक्षी की जब परीक्षा होती है और जो कुछ वह अभिसाक्ष्य करता है उसके सार का ज्ञापन बनाएगा और प्रत्येक ज्ञापन अधिकरण द्वारा लिखा और हस्ताक्षरित किया जाएगा और अभिलेख का भाग होगा;

(ख) अधिकरण के विनिश्चय में, अवधारण के लिए बातें और उनके विनिश्चयों के अतिरिक्त कुछ होना आवश्यक नहीं है।

रजिस्ट्रीकृत दस्तावेजों के बारे में धारणा।

24. जब तक कि प्रतिकूल साबित न कर दिया जाए, यह धारणा की जाएगी कि भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 के अधीन रजिस्ट्रीकृत कोई दस्तावेज या उसकी प्रमाणीकृत प्रतिलिपि जो अधिकरण के समक्ष पेश की गई है साबित हो चुकी है।

1908 का 1

1908 के अधिनियम संख्यांक 5 का लागू होना।

25. इस अधिनियम में और तदधीन बनाए गए किसी नियमों में अन्यथा उपबंधित के सिवाय, इस अधिनियम के अधीन समस्त कार्यवाहियां सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 में अंतर्विष्ट उपबंधों के द्वारा विनियमित की जाएगी।

आवेदनों और लिखित कथनों पर हस्ताक्षर और सत्यापन।

26. इस अधिनियम के अधीन किसी अनुतोष के लिए अधिकरण के समक्ष पेश किया गया प्रत्येक आवेदन और उसमें संलग्न अनुसूचियां, यदि कोई हों, और प्रत्येक लिखित कथन, अभिवचनों के हस्ताक्षरित किए जाने और सत्यापन के लिए सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 द्वारा विहित रीति से हस्ताक्षरित और सत्यापित किए जाएंगे।

1908 का 5

डिक्रियों की विषय-वस्तु।

27. उन सब मामलों में जिनमें अधिकरण विस्थापित व्यक्ति के आवेदन पर डिफ्री पारित करता है, वह लेनदारों और विस्थापित व्यक्ति की आस्तियों और दायित्वों की पूरी अनुसूची तैयार करेगा।

डिक्रियों का निष्पादन।

28. सिविल न्यायालय, जो इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए अधिकरण के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया है, अधिकरण के रूप में उसके द्वारा पारित किसी डिफ्री या आदेश का उसी रीति से निष्पादन करने के लिए सक्षम होगा जिस रीति में वह तब कर सकता जब वह सिविल न्यायालय के रूप में उसके द्वारा पारित डिफ्री या आदेश होता है।

अध्याय 3

अनुतोष

व्याज के प्रोद्-
भवन की समाप्ति।

29. (1) अस्त, 1947 के पन्द्रहवें दिन को और से विस्थापित व्यक्ति द्वारा शोध्य किसी श्रेण के बारे में कोई व्याज प्रोद्भूत नहीं होगा और न प्रोद्भूत हुआ समझा जाएगा और न कोई अधिकरण उसके द्वारा पारित किसी डिफ्री या आदेश के बारे में कोई भविष्यवर्ती व्याज अनुतोष कसेगा :

परन्तु—

(क) जहाँ ऋण अंशों, स्टॉकों, सरकारी प्रतिभूतियों या स्थानीय प्राधिकारी को प्रतिभूतियों द्वारा प्रतिभूत किया गया है, वहाँ अधिकरण अगस्त, 1947 के पन्द्रहवें दिन से प्रारम्भ होने वाली और इस अधिनियम के प्रारम्भ पर समाप्त होने वाली कालावधि के लिए, लेनदार को ब्याज आपस में करार की गई दर पर या उस दर पर जिस पर कि उसके बारे में कोई लाभांश या ब्याज संदत्त किया गया है या संदेय है, जो भी कम हो वही अनुज्ञात करेगा ;

(ख) किसी अन्य दशा में अधिकरण यदि वह ऐसा करना ठीक और उचित समझता है तो धारा 32 में यथापरिभाषित देनदार को संदाय की सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए, खंड (क) में उल्लिखित कालावधि के लिए साधारण ब्याज अनुज्ञात करेगा जिसकी दर चार प्रतिशत वार्षिक से अधिक नहीं होगी ।

(2) इस धारा में की कोई भी बात लेनदार द्वारा जिसके अन्तर्गत बीमा कम्पनी भी है विस्थापित देनदार की जीवन बीमा की पालिसी को चालू रखने के लिए पालिसी की प्रतिभूति पर उधार दिए गए किसी धन के बारे में संदेय ब्याज को ला नहीं होगी ।

30. कोई भी विस्थापित व्यक्ति किसी ऋण को वसूली के लिए किसी डिक्ली के निष्पादन में, चाहे इस अधिनियम के प्रारम्भ के पूर्व या पश्चात् पारित हुई हो, गिरफ्तारी या कारावास के लिए उत्तरदायी नहीं होगा ।

गिरफ्तारी से छूट ।

1908 का 5

31. सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 की धारा 60, विस्थापित व्यक्ति के विरुद्ध ऋण के लिए किसी डिक्ली के निष्पादन के सम्बन्ध में (चाहे वह इस अधिनियम के प्रारम्भ के पूर्व या पश्चात् पारित की गई हो), इस प्रकार प्रभावी होगी, मानो—

सम्पत्ति की कुर्की के विषय में अतिरिक्त अनुतोष ।

(1) उपधारा (1) के परन्तुक के खंड (ग) के स्थान पर, निम्नलिखित खंड प्रतिस्थापित किए गए हों, अर्थात् :—

“(ग) कृषक के गृह और अन्य भवन (उसकी सामग्री और स्थल और उससे ठीक अनुलग्न और उसके उपभोग के लिए आवश्यक भूमि सहित) जो डिक्लीदार द्वारा निर्णीत ऋणी के पिता, माता, पत्नी, पुत्र, पुत्री, पुत्र-वधु, भ्राता, बहन या अन्य आश्रित से अन्यथा किसी व्यक्ति को किराए पर या अन्यथा दी गई साबित नहीं किए गए हैं या जो एक वर्ष या अधिक की कालावधि के लिए खाली छोड़ दिए गए हैं;

(गग) कृषक के दुधारू पशु, चाहे दूध देते हों या ब्याने वाले हों, बछड़ा-बछड़ी, परिवहन या बोझा ढोने वाली गाड़ी के प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले पशु और खुले स्मान या बाड़े जो आवश्यकता पड़ने पर पशु बांधने के लिए, गाड़ी खड़ी करने या चारा या खाद इकट्ठा करने के लिए अपेक्षित हों ;

(गगग) कृषक से भिन्न निर्णीत ऋणी के स्वामित्व में का और उसके द्वारा अधिवसित एक मुख्य निवास गृह और उससे संलग्न अन्य भवन (उसकी सामग्री और उसके स्थल और उससे ठीक अनुलग्न और उसके उपभोग के लिए आवश्यक भूमि सहित);”;

(2) खंड (ग) में “सौ रुपए” शब्दों के स्थान पर “दो सौ पचास रुपए” शब्द प्रतिस्थापित किए गए हों;

(3) खंड (त) के पश्चात् निम्नलिखित खंड अन्तःस्थापित किए गए हों, अर्थात् :—

“(ध) निर्णीत ऋणी को कृषि उपज का दो-तिहाई;

(द) निर्णीत ऋणी को किसी अन्य सम्पत्ति का इतना जितना उसकी जीविका का साधन बनता हो और जितसे न्यायालय की राय में उसे दो सौ पचास रुपए प्रति मास से अधिक की आय प्राप्त करने की सम्भावना हो;

(घ) केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार को निधि में से या उसके द्वारा या उसकी ओर से अग्रिम दिया या अग्रिम देने के लिए करार पोया गया कोई उधार या किसी ऐसे उधार से सृजित कोई आस्ति ।

स्पष्टीकरण—जहां कोई ऐसी आस्ति जो कि खंड (घ) में निर्दिष्ट है और अन्ततः ऐसे उधार से और अन्ततः निर्णीत ऋणी की प्राइवेट निधि से सृजित की गई है, वहां आस्ति का वह भाग जो प्राइवेट निधि से सृजित किया गया है, कुर्की या विक्रय के लिए दायी होगा यदि वह शेष भाग से अलग किया जा सकता है ।”

ऋणों का कम करना ।

32. (1) जहां धारा 5 या धारा 11 की उपधारा (2) के अधीन विस्थापित देनदार के आवेदन पर, अधिकरण ने इस अधिनियम के उपबन्धों के अनुसार प्रत्येक ऋण के बारे में देय रकम को अवधारित कर दिया है तो वह देनदार का संदाय करने की सामर्थ्य को अवधारित करेगा ।

(2) यदि देनदार का संदाय सामर्थ्य इस प्रकार अवधारित ऋणों की (ऐसे ऋण को अपवर्जित करते हुए, जिसके बारे में लेनदार ने धारा 16 के उपबन्धों के अनुसार प्रतिभूति रखने का निर्वाचन किया है) कुल राशि के बराबर है या उससे अधिक है, तो अधिकरण प्रत्येक लेनदार को शोध्य रकम को विनिर्दिष्ट करते हुए इस प्रकार अवधारित कुल राशि के लिए डिक्री याचित करेगा और उसकी अदा-यगी किस्तों में धारा 33 में अन्तर्विष्ट उपबन्धों के अनुसार उस समय तक अनुज्ञात करेगा जब तक कि वह कारणों को लेखबद्ध करके अन्यथा निदेश नहीं देता ।

(3) यदि देनदार का संदाय सामर्थ्य उपधारा (2) में निर्दिष्ट कुल राशि से कम है, तो अधिकरण डिक्री को दो भागों में विभाजित करेगा और उसके प्रथम भाग में (जिसे इसमें इसके पश्चात् डिक्री के प्रथम भाग के रूप में निर्दिष्ट किया गया है) यह उपबन्धित करेगा कि संदाय के सामर्थ्य के बराबर राशि, धारा 33 में अन्तर्विष्ट उपबन्धों के अधीन, भारत में देनदार की आस्तियों से वसूल की जाए और उसके द्वितीय भाग में (जिसे इसमें इसके पश्चात् डिक्री के द्वितीय भाग के रूप में निर्दिष्ट किया गया है) यह उपबन्धित करेगा कि उपधारा (6) में अन्तर्विष्ट उपबन्धों के अधीन अतिशेष किसी प्रतिकर से जो देनदार प्राप्त करे वसूल किया जाए :

परन्तु यदि कोई ऐसा प्रतिकर प्राप्त नहीं होता, तो अतिशेष अवसूलीय होगा ।

(4) लेनदार को जिसने धारा 16 के अधीन अपनी प्रतिभूति रोके रखने का निर्वाचन किया है भारत में देनदार को आस्तियों से उसको देय किसी रकम को वसूल करने का अधिकार नहीं होगा, किन्तु इस उपधारा में की कोई भी बात धारा 16 द्वारा उसे दिए हुए अधिकारों में से किसी पर प्रभाव नहीं डालेगी ।

(5) लेनदार को देनदार द्वारा प्रतिकर की प्राप्ति के कम से कम छह मास पूर्व किसी भी समय यह आवेदन करने का हक होगा कि डिक्री के संपूर्ण प्रथम भाग या उसके अतिशेष को जहां तक उसका सम्बन्ध उसको शोध्य किसी ऋण से है, डिक्री के द्वितीय भाग में जोड़ा जाए, और तब उसे भारत में देनदार की आस्तियों से कोई रकम वसूल करने का कोई अधिकार नहीं होगा।

1950 का 44

(6) इस अधिनियम के प्रयोजनार्थ डिक्री के द्वितीय भाग को तुष्टि के लिए प्रतिकर से संदेह कोई रकम वह रकम होगी जिसकी डिक्री के द्वितीय भाग में समस्त ऋणों का कुल रकम से वही अनुपात है [जिसके अन्तर्गत उपधारा (5) के अधीन उसमें जोड़ी गई कोई राशि और धारा 16 की उपधारा (3) के खंड (क) के परन्तुक में विनिर्दिष्ट रीति में प्रतिभूत लेनदार के पक्ष में अवधारित राशि भी है] जो डिस्प्लेस्ड पर्सन्स (क्लेम्स) ऐक्ट, 1950 के अधीन देनदार की सम्पत्ति के बारे में उसको संदेय प्रतिकर का सत्यापित दावे से है और प्रतिकर का अतिशेष, यदि कोई हो, विस्थापित देनदार को वापस किया जाएगा।

(7) डिक्री के प्रथम भाग के बारे में विस्थापित देनदार द्वारा संदत्त प्रत्येक किस्त और उपधारा (6) के अनुसार प्रतिकर से संदेय कोई राशि डिक्रीदारों में आनुपातिक रूप से वितरित की जाएगी, यदि एक से अधिक व्यक्ति उसके लिए हकदार हैं।

परन्तु प्रतिभूत लेनदार धारा 16 के अधीन अप्रतिभूत लेनदार के रूप में माने जाने का निर्वाचन नहीं किया है, प्रतिकर से संदेय रकम पर पूर्व प्रभार के लिए हकदार होगा।

1950 का 44

(8) जहां विस्थापित व्यक्ति संपत्ति के विनिमय के रूप में प्रतिकर प्राप्त करता है वहां धारा 16 के अधीन लेनदार के पूर्व प्रभार के अधीन रहते हुए, यदि कोई हो, डिक्री के द्वितीय भाग के बारे में संदेय कुल राशि विनिमय के रूप में प्राप्त संपत्ति पर द्वितीय प्रभार होगी, किन्तु द्वितीय प्रभार की रकम वह रकम होगी, जिसका कुल राशि से वही अनुपात है जो विनिमय के रूप में प्राप्त संपत्ति के मूल्य का डिस्प्लेस्ड पर्सन्स (क्लेम्स) ऐक्ट, 1950 के अधीन मूल्यंकित और सत्यापित मूल सम्पत्ति के मूल्य से है।

(9) जहां डिक्री के प्रथम भाग के बारे में नियत किसी किस्त के संदाय में विस्थापित व्यक्ति व्यतिक्रम करता है या धारा 16 की उपधारा (4) या इस धारा की उपधारा (8) के अनुसार अवधारित रकम, जिसके लिए प्रथम या द्वितीय प्रभार विनिमय के रूप में प्राप्त सम्पत्ति के ऊपर सृजित किया गया हो संदत्त नहीं करता है, वहां लेनदार, निर्णीत ऋणी की कुर्की योग्य आस्तियों की कुर्की और विक्रय द्वारा या विनिमय के रूप में अभिप्राप्त संपत्ति के, जिसके ऊपर प्रभार सृजित किया गया हो, विक्रय द्वारा डिक्री के निष्पादन के लिए आवेदन कर सकेगा, और इस प्रकार निष्पादन से वसूल की हुई रकम, डिक्रीदारों के बीच आनुपातिक रूप से वितरित की जाएगी।

परन्तु इस उपधारा में की कोई भी बात प्रभार धारियों के अधिकारों पर कोई प्रभाव नहीं डालेगी।

(10) इस अधिनियम के प्रयोजनार्थ, जहां प्रतिकर नकदी में संदत्त किया जाता है, वहां वह रकम जो डिक्री के द्वितीय भाग में ऋणों की तुष्टि के प्रयोजनों के लिए उपलब्ध होगी, ऐसे प्रतिकर की रकम के पचहत्तर प्रतिशत से किसी भी दशा में अधिक नहीं होगी; और जहां यह सम्पत्ति के विनिमय के रूप में है, वहां सम्पत्ति का परिमाण जो उक्त प्रयोजनों के लिए उपलब्ध होगा, किसी भी दशा में ऐसी सम्पत्ति के मूल्य में पचहत्तर प्रतिशत से अधिक नहीं होगा।

स्पष्टीकरण—इस धारा में "संदाय की समर्थता" पद से अभिप्रेत है विस्थापित देनदार को भारत में समस्त कुर्की योग्य आस्तियों के बाजार मूल्य का योग धन, वह आय

जिसका अगले तीन क्रमवर्ती वर्षों में उद्भूत होना संभाव्य है, और ऐसी आय की संगणना से दो सौ पचास रुपए प्रतिमास की दर से संगणित राशि अपवर्जित होगी।

वे बातें जिनको किस्तों में संदाय के निदेश में ध्यान में रखा जाना है।

33. (1) डिक्री के प्रथम भाग के अधीन किन्हीं राशियों के किस्तों द्वारा संदाय का निदेश देने में अधिकरण, अन्य मामलों के साथ निम्नलिखित को भी ध्यान में रखेगा :—

(क) समस्त स्रोतों से विस्थापित व्यक्ति को वर्तमान आय और वह आय जिसका कि उसको भविष्य में प्रतिभूत होना संभाव्य है ;

(ख) जीवन की साधारण आवश्यकताओं के लिए उसके ऊपर आश्रित कुटुम्ब का आकार और व्यय जो विस्थापित व्यक्ति के बालकों को जो उसके ऊपर आश्रित हैं शिक्षा और विवाह के लिए उपगत होना संभाव्य है।

(2) जहां विस्थापित लेनदार अवयस्क है, या विधवा है या वह व्यक्ति है जो किसी शारीरिक निःशक्तता के कारण, अपनी जीविका उपाजित करने के लिए स्थायी रूप से निःशक्त है, वहां अधिकरण यह निदेश दे सकेगा कि उसको संदेय कोई किश्त उससे, जिसको संदाय करने के लिए अन्यथा निदेश दिया जा सकता था पच्चीस प्रतिशत अधिक होगी और जहां वह ऐसा करता है वहां वह यह भी निदेश देगा कि अन्य डिक्रीदारों को किश्तें आनुपातिक रूप से कम कर दी जाएंगी।

भरण-पोषण भत्तों में फेरफार।

34. जहां न्यायालय की किसी डिक्री या आदेश के अधीन विस्थापित देनदार को किसी व्यक्ति के भरण-पोषण के लिए कालिक भत्ता संदत्त करने का आदेश दिया गया है, या ऐसा भत्ता वह किसी स्वेच्छया किए गए करार के अधीन संदत्त करने के लिए उत्तरदायी है, तो उस दर में जिस पर ऐसा भत्ता संदेय है, अधिकरण द्वारा उसको इस निमित्त आयेदन किए जाने पर फेरफार किया जा सकेगा, यदि विस्थापित देनदार की परिवर्तित परिस्थितियों की दृष्टि से अधिकरण का विचार है कि ऐसा फेरफार आवश्यक है और ऐसा फेरफार, किसी डिक्री आदेश या करार में किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, ऐसी कालावधि के लिए प्रभावशील रहेगा जिसके लिए अधिकरण निदेश दे

विधि व्यवसायी की फीस का विनिर्धारण।

35. अधिकरण अपने समक्ष किसी कार्यवाही में नियोजित किसी विधि व्यवसायी की फीस के बारे में खर्च के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा खर्चों के संदाय का निवेश देने में, साधारण सिविल न्यायालयों के समक्ष वैसी ही प्रकृति की कार्यवाहियों में ऐसे खर्चों का संदाय विनियमित करने के लिए तत्समय प्रवृत्त किन्हीं नियमों का पालन करेगा और उसकी राय में सिविल न्यायालय के समक्ष जो खर्च होता है उसको आधे से अधिक अधिनिर्णीत नहीं करेगा।

परिसीमा की कालावधि का बढ़ाया जाना।

36. इंडियन लिमिटेड एक्ट, 1908 या किसी विशेष या स्थानीय विधि या किसी करार में किसी बात के होते हुए भी निम्नलिखित वाद इस अधिनियम के प्रारंभ से एक वर्ष के भीतर किसी भी समय संस्थित किया जा सकेगा,—

1908 का 9

(क) कोई वाद या अन्य विधिक कार्यवाही, जिसके बारे में डिस्प्लेड पर्सन्स (इन्स्टीट्यूशन आफ सूट्स) ऐक्ट, 1948 की धारा 8 द्वारा परिसीमा की कालावधि को बढ़ाया गया था, और

1948 का 47

(ख) बीमा कंपनी के विरुद्ध दावे को प्रवर्तित कराने के लिए कोई वाद या अन्य विधिक कार्यवाही जो खंड (क) के उपबंधों में नहीं आती है, जिसके बारे में वादहेतुक, चाहे पूर्णतः या अंशतः उन राज्यक्षेत्रों में जो अब पश्चिमी पाकिस्तान में स्थित हैं, उत्पन्न हो गया था और वाद या अन्य विधिक कार्यवाही का संस्थित किया जाना संविदा में ऐसी शर्त के

होने के कारण दण्डित हो गया था जो शर्त यदि न होती तो वह खंड (क) में अन्तर्विष्ट उपबंधों द्वारा शासित होता।

1908 का 5

37. सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 की धारा 48 में या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में किसी बात के होते हुए भी, विस्थापित व्यक्ति के विरुद्ध ऋण के बारे में डिक्री के निष्पादन के लिए कोई आदेश, निम्नलिखित अवधि के अवसान के पश्चात् प्रस्तुत किए गए आवेदन पर नहीं किया जाएगा—

कतिपय डिक्रियों के निष्पादन के लिए परिसीमा की कालावधि की काट-छांट।

(क) इस अधिनियम के प्रारंभ के पूर्व पारित की हुई डिक्रियों की दशा में ऐसे प्रारंभ से छह वर्ष ;

(ख) इस अधिनियम के प्रारंभ के पश्चात् पारित की हुई डिक्रियों की दशा में डिक्रियों की तारीख से छह वर्ष ;

(ग) विहित अन्तरालों या कतिपय तारीखों पर रकम का संदाय करने का निदेश देने वाली डिक्रियों की दशा में, संदाय जिसके बारे में डिक्रीदार डिक्री का निष्पादन करना चाहता है, करने में व्यतिक्रम की तारीख से छह वर्ष :

परन्तु इस धारा में की किसी भी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह इस अधिनियम के प्रारंभ के पूर्व पारित डिक्री के निष्पादन के आवेदन के लिए उक्त संहिता की धारा 48 में यथा उपबंधित निष्पादन के समय की परिसीमा में वृद्धि करने के लिए है।

38. (1) जहां विस्थापित व्यक्ति के विरुद्ध ऋण की वसूली के लिए किसी डिक्री के निष्पादन में उसकी स्थावर सम्पत्ति का विक्रय चाहा जाता है, वहां डिक्री का निष्पादन करने वाला न्यायालय प्रथमतः सम्पत्ति का बाजार मूल्य अवधारित करेगा और यदि इस प्रकार अवधारित किया गया मूल्य डिक्री की रकम और किसी पूर्व विल्लंगम की आनुपातिक रकम के बराबर या कम है तो न्यायालय डिक्रीदार को सम्पत्ति अन्तरित करेगा।

निष्पादन में स्थावर सम्पत्ति का विक्रय।

(2) यदि उपधारा (1) के अधीन अवधारित मूल्य डिक्री की रकम और किसी पूर्व विल्लंगम की आनुपातिक रकम से अधिक है, तो न्यायालय ऐसी सम्पत्ति के उस भाग का अवधारण करेगा, जिसका मूल्य डिक्री की रकम और ऐसी पूर्व विल्लंगम की रकम के बराबर है, और यदि ऐसा करना युक्ति-युक्त और सुविधाजनक है तो वह भाग डिक्रीदार को अन्तरित कर सकेगा।

(3) जहां ऐसी सम्पत्ति डिक्रीदार को इस धारा के अधीन अन्तरित कर दी गई है वहां डिक्री इस प्रकार अन्तरित सम्पत्ति के मूल्य की परिसीमा तक तुष्ट समझी जाएगी :

परन्तु यदि डिक्रीदार सम्पत्ति लेने की वांछ नहीं करता या न्यायालय की राय में उसे संपत्ति का अन्तरण करना युक्तियुक्त और सुविधाजनक नहीं है तो सम्पत्ति सार्वजनिक नीलाम द्वारा विक्रय की जा सकेगी, किन्तु सार्वजनिक नीलाम में प्राप्त कीमत को विचार में लाए बिना, इस धारा के अधीन यथा अवधारित सम्पत्ति का बाजार मूल्य (न कि सार्वजनिक नीलाम के विक्रय आगमों से डिक्रीदार को संदेय रकम) वह रकम समझी जाएगी जो डिक्रीदार की डिक्री के बारे में संदत्त की जा चुकी है और उसकी तुष्टि तदनुसार प्रविष्ट की जाएगी।

समझौतों को प्रोत्साहन ।

39. यदि विस्थापित देनदार और लेनदार या जहां एक से अधिक लेनदार हैं, उनकी ऐसी संख्या, जो दायित्वों के समायोजन के लिए करार में प्रविष्ट विस्थापित देनदार थे शोध्य ऋणों के दो-तिहाई से अधिक मूल्य की धारक है, तो अधिकरण यदि उसे इस निमित्त आवेदन किया जाता है, तो अन्य लेनदारों को सम्यक् नोटिस देने के पश्चात्, तदनुसार शेष ऋणों का समायोजन करेगा और यदि करार की शर्त ठीक और उचित है, तो तदनुसार डिक्री पारित करेगा ।

अध्याय 4

अपील

अपील से संबंधित साधारण उपबंध ।

40. धारा 41 में अन्यथा उपबंधित के सिवाय—

(क) अधिकरण की किसी अंतिम डिक्री या आदेश से, या

(ख) अधिकरण की किसी डिक्री या आदेश के निष्पादन के अनुक्रम में किए गए किसी आदेश से, जो यदि सिविल न्यायालय की डिक्री या आदेश के निष्पादन के अनुक्रम में पारित किया गया होता तो सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन अपीलनीय होता,

1908 का 5

उसी उच्च न्यायालय को अपील की जा सकेगी जिसकी अधिकारिता की सीमाओं में अधिकरण स्थित है ।

कतिपय दशाओं में अपील के अधिकार पर निर्बंधन ।

41. धारा 40 में किसी बात के होते हुए भी, जहां अपील की विषय-वस्तु ऋण की रकम से संबंधित है और ऐसी रकम अपील पर पांच हजार रुपये से कम है, तो कोई अपील नहीं की जाएगी ।

अपील के पक्षकार ।

42. इस अधिनियम के अधीन किसी अपील के प्रयोजनार्थ यह पर्याप्त होगा यदि केवल ऐसे व्यक्ति जो अपीलार्थी की राय में उनके बीच संविवाद में वास्तविक प्रश्नों को अवधारित करने के प्रयोजनार्थ अपील के आवश्यक पक्षकार हैं, अपील में प्रत्यर्थी के रूप में जोड़े जाएं :

परन्तु जहां सुनवाई पर उच्च न्यायालय को यह प्रतीत होता है कि कोई व्यक्ति जो अधिकरण के समक्ष उस कार्यवाही में पक्षकार था जिसकी डिक्री से अपील की गई है, किन्तु जो अपील में पक्षकार नहीं बनाया गया है, अपील के परिणाम से हितबद्ध है, तो न्यायालय मविष्यवर्ती तारीख के लिए, जो न्यायालय द्वारा नियत की जाएगी, सुनवाई स्थगित कर सकेगा और यह निदेश दे सकेगा कि ऐसा व्यक्ति प्रत्यर्थी बनाया जाए ।

अध्याय 5

प्रकीर्ण

भारतीय विधि के अधीन कतिपय सोसाइटियों और कम्पनियों का रजिस्ट्रीकरण ।

43. (1) जहां सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 या सहकारी समिति अधिनियम, 1912 या सहकारी समितियों के रजिस्ट्रीकरण के लिए किसी प्रान्त, में अन्य विधि के अधीन या इंडियन कम्पनीज़ ऐक्ट, 1913 के अधीन अगस्त, 1947 के यन्द्रहवें दिन के पूर्व रजिस्ट्रीकृत किसी सोसाइटी या कम्पनी का रजिस्ट्रीकृत कार्यालय उस राज्यक्षेत्र में स्थित है जो अब पश्चिमी पाकिस्तान का भाग है किन्तु उसके सदस्य बहु संख्या में तत्समय भारत में निवासी हैं या कम्पनी की दशा में उसके अंशों का मूल्य के अनुसार तैंतीस सही एक बटा तीन प्रतिशत से अधिक भारत में निवासी व्यक्तियों द्वारा धारित किए जा रहे हैं तो, यथास्थिति, सोसाइटी या कम्पनी इस अधिनियम के प्रारंभ से एक वर्ष के भीतर, यथास्थिति, सोसाइटियों, सहकारी समितियों या कम्पनियों के रजिस्ट्रार को जिसकी अधिकारिता की स्थानीय सीमाओं के भीतर शासी निकाय के सदस्यों की बहुसंख्या निवास करती है या

1860 का 21

1912 का 2

1913 का 7

व्यापार करती है, भारत में ऐसी सोसाइटी या कम्पनी की मान्यता के लिए आवेदन कर सकेगी।

(2) रजिस्ट्रार इस विषय में ऐसी जांच करने के पश्चात् जो वह ठीक समझे ऐसी मान्यता दे सकेगा या ऐसा करने से इंकार कर सकेगा।

(3) उपधारा (2) के अधीन रजिस्ट्रार के आदेश से राज्य सरकार को अपील होगी और रजिस्ट्रार का या अपील में राज्य सरकार का कोई आदेश किसी न्यायालय में प्रश्नगत नहीं किया जाएगा।

(4) जहां रजिस्ट्रार सोसाइटी, सहकारी समिति या कम्पनी को मान्यता देता है, वहां वह अपने रजिस्ट्रार में उसकी आवश्यक प्रविष्टियां करवाएगा और तब, तत्समय प्रवृत्त किसी विधि में या, यथास्थिति, समिति या कम्पनी की किसी लिखत में किसी बात के होते हुए भी वह भारत में तत्समय प्रवृत्त किसी सुसंगत विधि के अधीन निमित्त और रजिस्ट्रार द्वारा समझी जाएगी और प्रत्येक ऐसी सोसाइटी या कम्पनी, दूसरे मामलों के साथ-साथ भारत में निवास करने वाले और व्यापार करने वाले किसी व्यक्ति से उसे देय किसी रकम को मांगने और प्राप्त करने का अधिकार रखेगी।

44. इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट अन्य उपबंधों के अधीन, जहां धारा 5 के अधीन या धारा 11 की उपधारा (2) के अधीन विस्थापित देनदार या धारा 13 के अधीन विस्थापित लेनदार द्वारा किए हुए आवेदन खारिज कर दिए गए हैं, वहां उस प्रयोजन के लिए अतिरिक्त आवेदन नहीं किया जाएगा।

कतिपय मामलों में अतिरिक्त आवेदन का वर्जन।

45. किसी आवेदन या उसके उपाबद्ध किसी अनुसूची में लेखन या गणित सम्बन्धी भूलें जो आकस्मिक भूल या लोप से प्रोद्भूत होती हैं अधिकरण द्वारा किसी समय या तो स्वयं या पक्षकारों में से किसी के आवेदन पर ठीक की जा सकेंगी।

आवेदनों का संशोधन।

46. इस अधिनियम के अधीन जारी की गई प्रत्येक सूचना रसीदी रजिस्ट्रार डाक द्वारा, तामील की जाएगी जब तक कि अधिकरण लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 की प्रथम अनुसूची के आदेश 5 में विनिर्दिष्ट अन्य ढंगों में से किसी में तामील का निदेश न दे।

सूचना की तामील।

1908 का 5

47. जहां विस्थापित देनदार ने अपने आवेदन की सुसंगत अनुसूची में अपने द्वारा देय कोई ऋण या अपने स्वामित्व की कोई जंगम या स्थावर सम्पत्ति का, चाहे ऐसी सम्पत्ति कुर्की के लिए दायी हो अथवा न हो, उल्लेख नहीं किया है, वहां इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट कोई भी बात—

विस्थापित देनदार द्वारा कतिपय मामलों को प्रकट न करने का प्रभाव।

(क) ऋण की दशा में इस अधिनियम से अन्यथा तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उसकी वसूली के लिए कोई कार्यवाही संस्थित करने से लेनदार को निवारित नहीं करेगी, और

(ख) सम्पत्ति की दशा में किसी ऐसी विधि के अधीन कुर्की किए जाने से या अन्यथा संव्यवहार किए जाने से, निवारित नहीं करेगी।

48. इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, अधिकरण के समक्ष कोई कार्यवाही केवल किसी देनदार की मृत्यु के कारण, जो कार्यवाही में पक्षकार है, उपशमित नहीं समझी जाएगी, और मृत्यु के होते हुए भी डिक्ली पारित की जा सकेगी और ऐसी डिक्ली का वैसा ही बल और प्रभाव होगा मानो वह मृत्यु होने के पूर्व पारित की गई थी:

देनदार की मृत्यु पर कार्यवाहियों का उपशमन न होना।

परन्तु अधिकरण, उस निमित्त आवेदन करने पर देनदार के विधिक प्रतिनिधि को कार्यवाही में पक्षकार बनवाएगा और इस प्रकार पक्षकार बनाया गया व्यक्ति मृतक

देनदार के विधिक प्रतिनिधि के रूप में उसकी हैसियत के अनुरूप कोई समुचित बचाव कर सकेगा :

परन्तु यह और कि इसमें अन्तर्विष्ट कोई भी बात मृतक के विधिक प्रतिनिधि को, वहां तक के सिवाय जहां तक मृतक की देनदार आस्तियां उसको न्यायगत हुई हों, डिक्री की तुष्टि के लिए दायी बनाने वाली नहीं समझी जाएगी ।

पूर्व संव्यवहार का प्रभावी नहीं होना ।

49. (1) यदि इस अधिनियम के प्रारम्भ के पूर्व विस्थापित देनदार ने किसी भी रीति से अपने दायित्वों में से किसी की तुष्टि कर दी है या उसका उन्मोचन कर दिया है तो ऐसे संव्यवहार इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट किसी बात से प्रभावित नहीं होंगे ।

(2) जहां अधिकरण ने इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार किसी ऋण के बारे में देय कोई रकम अवधारित कर दी है, वहां ऐसे अवधारण से पूर्व के ऋणों के लिए विस्थापित देनदार द्वारा किए गए कोई संदाय (जिसके अन्तर्गत ब्याज में संदाय भी है) इस प्रकार अवधारित रकम में समायोजित किए जाएंगे :

परन्तु किसी भी लेनदार से उसको संदत्त किसी रकम को वापस करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी यदि यह माना जाता है कि वह उस अवधारित रकम से आधिक्य में है जो इस अधिनियम के अधीन उसको देय है ।

विस्थापित देनदार का दिवालिया नहीं समझा जाना ।

50. दिवाले संबंधी तत्समय प्रवृत्त किसी विधि में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी कोई विस्थापित देनदार केवल इस कारण कि उसने इस अधिनियम के अधीन अपने ऋणों के समायोजन के लिए आवेदन किया है, तत्समय प्रवृत्त दिवाले संबंधी किसी विधि के अर्थों में दिवालिया अथवा इस प्रकार अधिनिर्णीत दिवालिया नहीं समझा जाएगा, और दिवालियेपन के लिए कोई भी आवेदन विस्थापित देनदार के विरुद्ध अगस्त, 1947 के पन्द्रहवें दिन के पूर्व उसके द्वारा उपगत किसी ऋण के बारे में नहीं होगा ।

कतिपय दशाओं में बैंकों और उनके देनदारों के बीच में समझौतों या इन्तजामों को पुनर्जीवित न करना ।

51. इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, बैंक का विस्थापित देनदार द्वारा देय किसी ऋण के पुनःसंदाय, उन्मोचन या तुष्टि से संबंधित विस्थापित देनदार और बैंक के बीच किया गया कोई समझौता या इन्तजाम चाहे इस अधिनियम के पूर्व हो या पश्चात् अधिकरण द्वारा पुनर्जीवित नहीं किया जाएगा और इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट कोई भी बात ऐसे समझौते और इन्तजाम पर प्रभाव नहीं डालेगी :

परन्तु बैंक के बारे में, उसके और उसके स्वयं के लेनदारों या ऐसे लेनदारों के किसी वर्ग के बीच, कोई ऐसा समझौता या इन्तजाम प्रवृत्त है जो इंडियन कम्पनीज ऐक्ट, 1913 की धारा 153 के अधीन न्यायालय द्वारा सम्यक् रूप से संजूर कर दिया गया है :

1913 का 7

परन्तु यह और कि इस अधिनियम की धारा 31 द्वारा यथासंशोधित सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 की धारा 60 की उपधारा (1) के परन्तुक के खण्ड (ग), (गग), (गगग), (झ), (थ), (द) और (ध) में विनिर्दिष्ट विशिष्टियां विस्थापित देनदार के विरुद्ध किसी कार्यवाही में कुर्की और विक्रय के लिए दायी नहीं होंगी ।

1908 का 5

डिक्री की विषय-वस्तु की विहित प्राधिकारी को संसूचना ।

52. (1) प्रत्येक अधिकरण, विहित प्राधिकारी को, ऐसी रीति से जो विहित की जाए धारा 16 की उपधारा (3) के अधीन घोषित पूर्व प्रभार की रकम संसूचित करेगा और धारा 5 या धारा 11 की उपधारा (2) के अधीन विस्थापित देनदार के आवेदन पर पारित डिक्री की प्रति और धारा 32 की उपधारा (5) के अधीन पारित कोई आदेश भी, जिसमें आदेश की तारीख पर उसमें उल्लिखित लेनदार को शोध्य रकम विनिर्दिष्ट हो, भेजेगा ।

(2) विहित प्राधिकारी धारा 3 की उपधारा (6) के अनुसार उसको रिपोर्ट किए गए ऋणों को कम करेगा और इस निमित्त बनाए गए किन्हीं नियमों के अधीन प्रथमतः धारा 16 की उपधारा (2) के अनुसार प्रतिभूत लेनदार का पूर्व प्रभार चुकाएगा और तत्पश्चात् धारा 32 की उपधारा (10) के अर्थों में वितरण के लिए उपलब्ध प्रतिकर के अतिशेष को अन्य डिक्रीदारों के बीच जिनकी डिक्रियों की उसको रिपोर्ट की गई है, आनुपातिक रूप से वितरित करेगा :

परन्तु किसी ऐसे आनुपातिक वितरण में विहित प्राधिकारी धारा 33 की उपधारा (2) में अन्तर्विष्ट उपबन्धों का सम्यक् ध्यान रखेगा ।

(3) संदेय प्रतिकर की रकम का अतिशेष विस्थापित देनदार को वापस किया जाएगा ।

(4) इस धारा के उपबन्धों के अधीन किसी डिक्रीदार को विहित प्राधिकारी द्वारा संदत्त कोई रकम उस परिमाण तक विस्थापित देनदार द्वारा शोध्य ऋणों का विधिमान्य उन्मोचन होगी ।

1908 का 9 53. इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट अन्य उपबन्धों के अधीन इंडियन लिमि-
टेशन ऐक्ट, 1908 किसी कार्यवाही के इस अधिनियम के अधीन संस्थित किए जाने को लागू होगा और उसके संबंध में उस अधिनियम द्वारा विहित परिसीमा की कालावधि की संगणना करने और अवधारण करने के प्रयोजनार्थ इस अधिनियम के अधीन किया गया प्रत्येक आवेदन, उस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए वाद समझा जाएगा ।

परिसीमा अधि-
नियम का लागू
होना ।

1908 का 5 54. निर्णय के पूर्व गिरफ्तारी और कुर्की से संबंधित सिविल प्रक्रिया
संहिता, 1908 की प्रथम अनुसूची के आदेश 38 में अन्तर्विष्ट कोई भी बात इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही को लागू नहीं होगी ।

सिविल प्रक्रिया
संहिता की प्रथम
अनुसूची का, आदेश
38 को लागू
नहीं होना ।

55. इस अधिनियम या तदधीन बनाए गए किसी नियम या आदेश के अनुसरण में सद्भावपूर्वक की गई या की जाने के लिए आशयित किसी बात के लिए सरकार या किसी व्यक्ति के विरुद्ध कोई वाद, अभियोजन या विधिक कार्यवाही नहीं की जाएगी ।

सद्भावपूर्वक की
गई कार्यवाही
के लिए संरक्षण ।

56. केन्द्रीय सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा निदेश दे सकेगी कि इस अधिनियम के अधीन उसके द्वारा प्रयोक्तव्य किसी शक्ति का केन्द्रीय सरकार के अधीनस्थ ऐसे अधिकारी या प्राधिकारी द्वारा अथवा राज्य सरकार या राज्य सरकार के अधीनस्थ किसी ऐसे अधिकारी या प्राधिकारी द्वारा जो निदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, प्रयोग किया जा सकेगा ।

शक्तियों का
प्रत्यायोजन ।

57. (1) केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम राजपत्र में अधिसूचना द्वारा बना सकेगी ।

केन्द्रीय सरकार की
नियम बनाने की
शक्ति ।

(2) विशिष्टतया, तथा उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट उपबन्धों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, इस प्रकार बनाए गए नियम निम्नलिखित मामलों में सबके लिए या किसी के लिए उपबन्ध कर सकेंगे—

(क) अतिरिक्त विशिष्टियां, यदि कोई हों, जो धारा 5 के अधीन आवेदन में होनी चाहिए;

(ख) वह प्ररूप जिसमें इस अधिनियम के अधीन सूचनाएं जारी की जा सकेंगी;

(ग) वह प्ररूप जिसमें धारा 10 या धारा 13 के अधीन आवेदन किए जा सकेंगे;

(घ) वे रजिस्टर जो इस अधिनियम के अधीन रखे जाने चाहिए;

(ङ) वे प्राधिकारी जो इस अधिनियम के अधीन विहित किए जाने के लिए अपेक्षित हैं ;

(च) वह बोर्ड या अन्य प्राधिकारी जिसकी धारा 18 की उपधारा (2) के अधीन कोई रिपोर्ट की जाए और वे मामले जो ऐसे बोर्ड या अन्य प्राधिकारी को अपनी रिपोर्ट बनाने में ध्यान में रखने चाहिए ।

राज्य सरकार की नियम बनाने की शक्ति ।

58. राज्य सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा निम्नलिखित के लिए नियम बना सकेगी—

(क) राज्य के भीतर विहित अधिकरणों के बीच कारबार का वितरण;

(ख) वह रीति जिसमें अधिकरण के समक्ष पेश की गई दस्तावेजों की प्रतियां प्रमाणित की जानी चाहिए;

(ग) अधिकरणों द्वारा भेजी जाने वाली विवरणियां और वे प्राधिकारी जिनको यह भेजी जाएंगी ।

निरसन ।

59. धारा 36 में अन्यथा उपबन्धित के सिवाय, डिस्प्लेस्ड पर्सन्स (इन्स्ट्रुक्शन आफ सूट्स) ऐक्ट, 1948 और डिस्प्लेस्ड पर्सन्स (लौगल प्रोसीडिन्स) ऐक्ट, 1949 इस अधिनियम में यथापरिभाषित विस्थापित व्यक्तियों को लागू नहीं रहेंगे ।

1948 का 47

1949 का 25

21579

भारतीय तार (संशोधन) अधिनियम, 1974

(1974 का अधिनियम संख्यांक-48)

[30 नवम्बर, 1974]

भारतीय तार अधिनियम, 1885

का और संशोधन

करने के लिए

अधिनियम

भारत गणराज्य के पन्चीसवें वर्ष में संसद् द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—

संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ ।

1. (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम भारतीय तार (संशोधन) अधिनियम, 1974 है ।

(2) यह उस तारीख को प्रवृत्त होगा जो केन्द्रीय सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, नियत करे ।

1885 का 13

2. भारतीय तार अधिनियम, 1885 की (जिसे इसमें इसके पश्चात् मूल अधिनियम कहा गया है) धारा 7 में,—

धारा 7 का संशोधन।

(i) उपधारा (2) के खण्ड (ड) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

“(ड) किसी तारयंत्र लाइन, साधित या यंत्र की व्यवस्था करने के लिए किसी आवेदन के संबंध में प्रभार ;” ;

(ii) उपधारा (5) के स्थान पर निम्नलिखित उपधारा रखी जाएगी, अर्थात्:—

“(5) इस धारा के अधीन बनाया गया प्रत्येक नियम बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र संसद् के प्रत्येक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। यह अवधि एक सत्र में अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकती है। यदि उक्त सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसाव के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् वह निष्प्रभाव हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।”

3. 1969 के दिसम्बर के प्रथम दिन को प्रारम्भ होने वाली और इस अधिनियम के प्रारम्भ पर लागू होने वाली काल्पवधि के दौरान, किसी तारयंत्र लाइन, साधित या यंत्र की व्यवस्था करने के लिए भारतीय तार नियम, 1885 के नियम 414 के अधीन किसी आवेदन के संबंध में किसी प्रभारों का उद्ग्रहण या संग्रहण विधि के अनुसार किया गया समझा जाएगा और तदनुसार ऐसे किसी उद्ग्रहण या संग्रहण को किसी न्यायालय में प्रस्तुत नहीं किया जाएगा और ऐसे प्रभारों के प्रतिदाय के लिए या ऐसे आवेदन के संबंध में किसी अन्य अनुतोष के लिए कोई वाद या अन्य कार्यवाही किसी न्यायालय में नहीं लाई जाएगी।

विधिमान्यकरण।

25979

राष्ट्रपति पेंशन (संशोधन) अधिनियम, 1976

(1976 का अधिनियम संख्यांक 79)

[25 अगस्त, 1976]

राष्ट्रपति पेंशन अधिनियम, 1951 का और
संशोधन करने के लिए
अधिनियम

भारत गणराज्य के सत्तईसवें वर्ष में संसद् द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो:—

1. इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम राष्ट्रपति पेंशन (संशोधन) अधिनियम, 1976 है।

संक्षिप्त नाम।

धारा 2 का संशोधन।

2. राष्ट्रपति पेंशन अधिनियम, 1951 की (जिसे इसमें इसके पश्चात् मूल अधिनियम कहा गया है) धारा 2 में,—

1951 का 30

(क) उपधारा (2) के पश्चात् निम्नलिखित उपधारा अन्तःस्थापित की जाएगी, अर्थात्:—

“(2क) ऐसे किन्हीं नियमों के अधीन रहते हुए जो इस निमित्त बनाए जाएं, ऐसे प्रत्येक व्यक्ति की पत्नी या पति अपने शेष जीवन-काल में मुफ्त चिकित्सीय परिचर्या और उपचार का हकदार होगा।” ;

(ख) उपधारा (3) के स्थान पर निम्नलिखित उपधारा रखी जाएगी, अर्थात् :—

“(3) जहां कोई ऐसा व्यक्ति राष्ट्रपति के पद के लिए पुनर्निर्वाचित हो जाता है, वहां ऐसा व्यक्ति या ऐसे व्यक्ति की पत्नी या पति उस अवधि में जिसके दौरान ऐसा व्यक्ति पुनः उस पद को धारण करता है इस धारा के अधीन किसी प्रसुविधा का हकदार नहीं होगा।”।

धारा 3 के स्थान पर नई धारा का प्रतिस्थापन।

3. मूल अधिनियम की धारा 3 के स्थान पर निम्नलिखित धारा रखी जाएगी, अर्थात् :—

पद धारण करते हुए मृत्यु हो जाने पर राष्ट्रपति की पत्नी या उसके पति को मुफ्त चिकित्सीय परिचर्या और उपचार।

“3. ऐसे किन्हीं नियमों के अधीन रहते हुए जो इस निमित्त बनाए जाएं, किसी ऐसे व्यक्ति की, जो राष्ट्रपति का पद धारण किए हुए है, मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी या पति अपने शेष जीवनकाल में मुफ्त चिकित्सीय परिचर्या और उपचार का हकदार होगा।”।

धारा 5 का संशोधन।

4. मूल अधिनियम की धारा 5 को उसकी उपधारा (1) के रूप में पुनःसंख्यांकित किया जाएगा और इस प्रकार पुनःसंख्यांकित उपधारा (1) के पश्चात् निम्नलिखित उपधारा अन्तःस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

“(2) इस अधिनियम के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाया गया प्रत्येक नियम बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद् के प्रत्येक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। यह अवधि एक सत्र में अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् वह निष्प्रभाव हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।”।

अनुसूचित जातियां और अनुसूचित जनजातियां आदेश (संशोधन) अधिनियम, 1976

(1976 का अधिनियम संख्यांक 108)

[1 अक्टूबर, 1979 को यथाविद्यमान]

[18 सितम्बर, 1976]

अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की सूचियों में कतिपय जातियों और जनजातियों को सम्मिलित करने और उनसे उन्हें अपवर्जित करने के लिए, जहां तक कि ऐसे सम्मिलित या अपवर्जित किए जाने के कारण संसदीय और सभा निर्वाचन-क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व का पुनः समायोजन करना आवश्यक हो जाता है जहां तक ऐसे पुनः समायोजन के लिए और उनसे संबंधित विषयों के लिए उपबंध करने के लिए
अधिनियम

भारत गणराज्य के सत्ताईसवें वर्ष में संसद् द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—

1. (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम अनुसूचित जातियां और अनुसूचित जनजातियां आदेश (संशोधन) अधिनियम, 1976 है।

संक्षिप्त नाम
और प्रारम्भ।

(2) यह उस तारीख को प्रवृत्त होगा जो केन्द्रीय सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, नियत करे।

2. इस अधिनियम में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

परिभाषाएं।

(क) "जनगणना प्राधिकारी" से भारत का महारजिस्ट्रार और पदेन जनगणना आयुक्त अभिप्रेत है;

(ख) "आयोग" से संविधान के अनुच्छेद 324 के अधीन राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त निर्वाचन आयोग अभिप्रेत है;

1972 का 76

(ग) "परिसीमन अधिनियम" से परिसीमन अधिनियम, 1972 अभिप्रेत है;

(घ) "अन्तिम जनगणना" से भारत में 1971 में की गई जनगणना अभिप्रेत है;

- (ङ) "अनुसूचित जातियां आदेश" से संविधान के अनुच्छेद 341 के अधीन राष्ट्रपति द्वारा किया गया संविधान (अनुसूचित जातियां) आदेश, 1950 अभिप्रेत है;
- (च) "अनुसूचित जनजातियां आदेश" से संविधान के अनुच्छेद 342 के अधीन राष्ट्रपति द्वारा किए गए संविधान (अनुसूचित जनजातियां) आदेश, 1950 तथा संविधान (अष्टमांश और निकोबार द्वीप) अनुसूचित जनजातियां आदेश, 1959 अभिप्रेत है;
- (छ) "राज्य" से ऐसा राज्य अभिप्रेत है जो अनुसूचित जातियां आदेश और अनुसूचित जनजातियां आदेशों में सम्मिलित है और इसके अन्तर्गत अष्टमान और निकोबार द्वीप संघ राज्यक्षेत्र भी है।

अनुसूचित जातियां आदेश का संशोधन।

3. अनुसूचित जातियां आदेश, प्रथम अनुसूची में विनिर्दिष्ट रीति से और विस्तार तक इसके द्वारा संशोधित किया जाता है।

अनुसूचित जनजातियां आदेशों का संशोधन।

4. अनुसूचित जनजातियां आदेश, द्वितीय अनुसूची में विनिर्दिष्ट रीति से और विस्तार तक इसके द्वारा संशोधित किए जाते हैं।

अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या का अवधारण।

5. (1) इस अधिनियम के प्रारम्भ के पश्चात् यथाशीघ्र, प्रत्येक राज्य में, यथास्थिति, अनुसूचित जातियों या अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या जैसी कि वह अन्तिम जनगणना के समय थी, जनगणना प्राधिकारी द्वारा अभिनिश्चित या प्राक्कलित की जाएगी।

(2) जहाँ धारा 3 या धारा 4 द्वारा किए गए संशोधनों के कारण,—

(क) किसी राज्य में किसी परिक्षेत्र में, जो उक्त धाराओं में निर्दिष्ट आदेशों की अनुसूचियों के भागों में से किसी भाग में किसी जाति या जनजाति के सम्बन्ध में विनिर्दिष्ट है, इसलिए परिवर्तन किया जाता है कि ऐसी जाति या जनजाति के सम्बन्ध में बड़ा क्षेत्र विनिर्दिष्ट किया जा सके, वहाँ जनगणना प्राधिकारी अन्तिम जनगणना में और किसी पूर्वतन जनगणना में जिसमें वर्धित क्षेत्र के सम्बन्ध में उस जाति या जनजाति की जनसंख्या के आंकड़े अभिनिश्चित किए गए थे, यथा अभिनिश्चित उस जाति या जनजाति की जनसंख्या के आंकड़े हिसाब में लेगा और वह ऐसे आंकड़ों में उस अनुपात से जिसमें उस राज्य की या, यथास्थिति, खण्ड, जिले, तालुक, तहसील, पुलिस थाने, चिकित्सा खंड या अन्य प्रादेशिक खण्ड की साधारण जनसंख्या में जिसके संबंध में ऐसी जाति या जनजाति उक्त संशोधनों द्वारा विनिर्दिष्ट की गई है, पूर्वतन जनगणना और अन्तिम जनगणना के बीच वृद्धि या कमी हुई है, वृद्धि या कमी करके उस जाति या जनजाति की जनसंख्या का जो 1 अप्रैल, 1971 को थी, अवधारण करेगा;

(ख) किसी जाति या जनजाति में, जो किसी राज्य या उसके भाग के संबंध में कोई अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति दोनों समझी

गई है, इसलिए परिवर्तन किया जाता है कि ऐसी जाति या जनजाति को ही उस राज्य या उसके भाग के संबंध में किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के रूप में विनिर्दिष्ट किया जा सके, वहाँ जनगणना प्राधिकारी अन्तिम जनगणना में यथा अभिनिश्चित ऐसी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या के आंकड़े हिसाब में लेगा :

परन्तु जनगणना प्राधिकारी के लिए किसी अनुसूचित जाति या जनजाति की जनसंख्या का जो 1 अप्रैल, 1971 को था, अवधारण करना उस दशा में आवश्यक नहीं होगा जिसमें उस जाति या जनजाति की जनसंख्या अन्तिम जनगणना में और पूर्वतन जनगणनाओं में से किसी जनगणना में अभिनिश्चित नहीं की गई थी और उस प्राधिकारी की राय में संख्या में कम है ।

स्पष्टीकरण—जहाँ खंड (क) में निर्दिष्ट किसी वक्षित क्षेत्र के संबंध में किसी जाति या जनजाति की जनसंख्या के आंकड़े एक से अधिक पूर्वतन जनगणनाओं में अभिनिश्चित किए गए थे वहाँ जनगणना प्राधिकारी, उस खंड के प्रयोजनों के लिए, पूर्वतन जनगणना में यथा अभिनिश्चित ऐसी जाति या जनजाति की ऐसी जनसंख्या के आंकड़े हिसाब में लेगा जो समय की दृष्टि से अन्तिम जनगणना के निकटतम है ।

(3) उपधारा (2) के अधीन अभिनिश्चित या अवधारित जनसंख्या के आंकड़े जनगणना प्राधिकारी द्वारा भारत के राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे ।

(4) इस प्रकार अधिसूचित जनसंख्या के आंकड़े अन्तिम जनगणना के समय यथा अभिनिश्चित सुसंगत जनसंख्या के आंकड़े माने जाएंगे और पूर्व प्रकाशित आंकड़ों को अतिरिक्त करेंगे; और इस प्रकार अधिसूचित आंकड़े अन्तिम होंगे और किसी न्यायालय में प्रश्नगत नहीं किए जाएंगे ।

6. (1) धारा 5 के अधीन किसी राज्य के संबंध में जनसंख्या के आंकड़ों के अधिसूचित किए जाने के पश्चात्, आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह, संविधान के अनुच्छेद 81, 170, 330 और 332 के, परिसीमन अधिनियम की धारा 8 के और इस अधिनियम के उपबंधों को ध्यान में रखते हुए, संसदीय और विधान सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 में (ऐसे आदेश में दिए गए किसी निर्वाचन-क्षेत्र के विस्तार में परिवर्तन किए बिना), ऐसे संशोधन करे जो उस राज्य की, यथास्थिति, अनुसूचित जातियों को या अनुसूचित जनजातियों को ऐसे आदेश में जो आयोग द्वारा इसके अधीन संशोधित किया जाए, यथा विनिर्दिष्ट आरक्षित स्थानों की संख्या के आधार पर समुचित प्रतिनिधित्व देने के प्रयोजन के लिए आवश्यक हों; और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की प्रथम अनुसूची और द्वितीय अनुसूची के बारे में यह समझा जाएगा कि तदनुसार उनका संशोधन किया गया है ।

निर्वाचन आयोग द्वारा निर्वाचन-क्षेत्रों का पुनः समायोजन ।

1950 का 43

(2) उपधारा (1) के अधीन कोई संशोधन करने में, आयोग, जहाँ तक आवश्यक हो, परिसीमन अधिनियम की धारा 9 की उपधारा (1) के खण्ड (म) और खण्ड (घ) के उपबंधों को ध्यान में रखेगा ।

(3) आयोग—

- (क) संशोधनों के लिए अपनी प्रस्थापनाओं को भारत के राजपत्र में, और सम्बद्ध राज्य के राजपत्र में, और ऐसी अन्य रीति से जो वह उचित समझे, प्रकाशित करेगा ;
- (ख) वह तारीख विनिर्दिष्ट करेगा जिसको या जिसके पश्चात् वह उन प्रस्थापनाओं पर आगे विचार करेगा ;
- (ग) उन सभी आक्षेपों और सुझावों पर विचार करेगा जो उसे इस प्रकार विनिर्दिष्ट तारीख के पूर्व प्राप्त हो गए हैं ; और
- (घ) तत्पश्चात् आदेश में आवश्यक संशोधन करेगा ।

आयोगकी प्रक्रिया
और शक्तियाँ ।

7. (1) इस अधिनियम के अधीन अपने कृत्यों के निर्वहन में, आयोग अपनी प्रक्रिया स्वयं अवधारित करेगा और उसे निम्नलिखित विषयों की बाबत वाद का विचारण करते समय सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन सिविल न्यायालय की सभी शक्तियाँ प्राप्त होंगी, अर्थात् :—

1908 का 5

- (क) साक्षियों को समन करना और हाजिर कराना ;
- (ख) किसी दस्तावेज के पेश किए जाने की अपेक्षा करना ; और
- (ग) किसी न्यायालय या कार्यालय से किसी लोक अभिलेख की अध्यपेक्षा करना ।

(2) आयोग को किसी व्यक्ति से ऐसी बातों और विषयों के बारे में कोई जानकारी देने की अपेक्षा करने की शक्ति होगी जो आयोग की राय में, आयोग के विचाराधीन किसी विषय के लिए, उपयोगी या उससे सुसंगत है ।

(3) आयोग को दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 345 और 346 के प्रयोजनों के लिए सिविल न्यायालय समझा जाएगा ।

1974 का 2

स्पष्टीकरण—साक्षियों को हाजिर कराने के प्रयोजन के लिए, आयोग की अधिकारिता की स्थानीय सीमाएं भारत के राज्यक्षेत्र की सीमाएं होंगी ।

संशोधनों का
प्रकाशन और
उनके प्रवर्तन की
तारीखें ।

8. (1) आयोग संसद् और विधान सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 में अपने द्वारा किए गए संशोधनों को भारत के राजपत्र में और सम्बद्ध राज्यों के राजपत्रों में प्रकाशित कराएगा ।

(2) भारत के राजपत्र में प्रकाशित होने पर, प्रत्येक ऐसे संशोधन को विधि का बल होगा और वह किसी न्यायालय में प्रश्नगत नहीं किया जाएगा ।

(3) भारत के राजपत्र में ऐसे प्रकाशन के पश्चात्, यथाशीघ्र, ऐसा प्रत्येक संशोधन लोक सभा और संबद्ध राज्यों की विधान सभाओं के समक्ष रखा जाएगा ।

(4) उपधारा (5) के उपबन्धों के अधीन रहते हुए लोक सभा या किसी राज्य की विधान सभा में किन्हीं प्रादेशिक निर्वाचन-क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व का ऐसा पुनःसमायोजन, जो संसद् और विधान सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 में आयोग द्वारा किए गए किन्हीं संशोधनों के कारण आवश्यक हो गया है और इस प्रकार संशोधित ऐसे आदेश में उपबन्धित है, यथास्थिति, लोक सभा या विधान सभा के ऐसे प्रत्येक निर्वाचन के सम्बन्ध में लागू होगा जो ऐसे संशोधनों के उपधारा (1) के अधीन भारत के राजपत्र में प्रकाशन के पश्चात् किया जाए और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 में अन्तर्विष्ट प्रतिनिधित्व सम्बन्धी उपबन्धों को अतिष्ठित करते हुए इस प्रकार लागू होगा।

1950 का 43

(5) पूर्वगामी उपधाराओं की कोई भी बात लोक सभा या किसी राज्य की विधान सभा में उस प्रतिनिधित्व पर प्रभाव नहीं डालेगी जो इस अधिनियम के अधीन आयोग द्वारा किए गए संशोधनों के उपधारा (1) के अधीन भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को अस्तित्व में हैं।

9. (1) आयोग, भारत के राजपत्र में और सम्बद्ध राज्य के राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, समय-समय पर, —

निर्वाचन आयोग की कतिपय अन्य शक्तियां।

(क) इस अधिनियम के अधीन यथासंशोधित संसदीय और विधान सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 में किसी मुद्रण सम्बन्धी भूल को या किसी ऐसी गलती को जो अनवधानता से हुई भूल या लोप के कारण हुई हो, ठीक कर सकता है; और

(ख) जहां उक्त आदेश में वर्णित किसी जिले या किसी प्रादेशिक खण्ड की सीमाओं में या उसके नाम में परिवर्तन किया जाता है, वहां उस आदेश को अद्यतन बनाने के लिए ऐसे संशोधन कर सकता है जो उसे आवश्यक या समीचीन प्रतीत हों।

(2) इस धारा के अधीन प्रत्येक अधिसूचना, जारी किए जाने के पश्चात् यथागीघ्न, लोक सभा और सम्बन्ध राज्य की विधान सभा के समक्ष रखी जाएगी।

10. इस अधिनियम के प्रारम्भ के पूर्व अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या के अवधारण के लिए जनगणना प्राधिकारी द्वारा, या निर्वाचन-क्षेत्रों के पुनःसमायोजन के प्रयोजन के लिए आयोग द्वारा, की गई सभी बातें और कार्य-वाहियां जहां तक कि वे इस अधिनियम के उपबन्धों के अनुरूप हैं, इन उपबन्धों के अधीन इस प्रकार की गई समझी जाएगी मानो ऐसे उपबन्ध, ऐसी बातें या कार्यवाही किए जाने के समय प्रवृत्त थे।

अधिनियम के प्रारम्भ के पूर्व किए गए कार्यों का विधिमन्य-करण।

प्रथम अनुसूची

(धारा 3 देखिए)

संविधान (अनुसूचित जातियों) आदेश, 1950 में,—

(क) पैरा 2 में, अंक "17" के स्थान पर अंक "19" रखे जाएंगे;

(ख) पैरा 4 के स्थान पर निम्नलिखित रखें, अर्थात्:—

"4. इस आदेश में किसी राज्य अथवा उसके किसी जिले या अन्य प्रादेशिक खण्ड के प्रति निर्देश का अर्थ यह लगाया जाएगा कि वह 1 मई, 1976 को यथागठित राज्य, जिले या अन्य प्रादेशिक खण्ड के प्रति निर्देश है।";

(ग) अनुसूची के स्थान पर निम्नलिखित रखें, अर्थात् :—

“अनुसूची

भाग 1—आन्ध्र प्रदेश

- | | |
|--------------------------------|------------------------------|
| 1. आदि आन्ध्र | 31 मदासि कुरुवा मदारि कुरुवा |
| 2. आदि द्रविड़ | 32. मादिगा |
| 3. अनामुक | 33. मादिगा दासु, मष्टीन |
| 4. आरे माल | 34. महार |
| 5. अरुथतिय | 35. माला |
| 6. अख माल | 36. माला दासरि |
| 7. बारिकी | 37. माला दासु |
| 8. बाचुरी | 38. माला हन्न |
| 9. बेड़ जंगम, बुड़ग जंगम | 39. माला जंगम |
| 10. बिड़ल | 40. माल भस्ति |
| 11. बैगारा | 41. माला साले, नेट्कानि |
| 12. चचटि | 42. माला सन्यासी |
| 13. चलवादि | 43. मांग |
| 14. चमार, मोची, मुचि | 44. मांग पारोडी |
| 15. चम्भार | 45. मन्ने |
| 16. चंडाल | 46. मष्टि |
| 17. डक्कल, डोक्कलवार | 47. मातंगि |
| 18. दण्डासि | 48. मेहतर |
| 19. दोर | 49. मिताअथ्यलुवार |
| 20. डोम, डोम्बार, पैडी, पनो | 50. मुधला |
| 21. एल्लमलवार, येल्लमालवाण्डलु | 51. पाकि, मोटि, तोटि |
| 22. घासी, हड्डी, रेल्लि चचन्डि | 52. पम्बड, पम्बण्ड |
| 23. गोडागल्ली | 53. पमिडी |
| 24. गोडारी | 54. पंचम, पेरिया |
| 25. गोसंगी | 55. रेल्लि |
| 26. होलया | 56. सामनार |
| 27. होलया दासरि | 57. सम्बन |
| 28. जगालि | 58. सप्रु |
| 29. जम्बुवुलु | 59. सिन्दोल्लु, चिन्दोल्लु |
| 30. कोलुपुलवाण्डलु | |

भाग 2—आसाम

- | | |
|---------------------------|-------------------|
| 1. बांस फर | 9. कैबर्त, जालिया |
| 2. भुईमाली, माली | 10. लालबेगी |
| 3. वृत्तियाल बनिया, बनिया | 11. माहरा |
| 4. धुपी, धोबी | 12. मेहतर, भंगी |
| 5. डुगला, ढोली | 13. मोची, ऋषि |
| 6. हिरा | 14. नामशूद्र |
| 7. जालकेवट | 15. पटनी |
| 8. झालो, मालो, झालो-मालो | 16. सूत्रघार |

भाग 3—बिहार

- | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------|
| 1. वांतर | 11. दुसाध, धारी, धरही |
| 2. बाउरी | 12. धासी |
| 3. भोगता | 13. हलालखोर |
| 4. भुइया | 14. हाड़ी, मेहतर, भंगी |
| 5. भूमिज (उत्तरी छोटा नागपुर और दक्षिणी छोटा नागपुर खण्डों तथा संथाल परगना जिले को छोड़कर) | 15. कंजर |
| 6. चमार, मोची | 16. कुरारियार |
| 7. चौपाल | 17. लालबेगी |
| 8. दबगर | 18. मुसहर |
| 9. धोबी | 19. नट |
| 10. डोम, धनगद | 20. पान, स्वासी |
| | 21. पासी |
| | 22. रजवार |
| | 23. तूरी |

भाग 4—गुजरात

- | | |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------|
| 1. अगोर | 12. हल्लीर |
| 2. बाकड़, बण्ट | 13. हलसार, हसलार, हुलस्वार, हलस्वार |
| 3. बावा-डेढ, डेढ-साधु | 14. होलार, बल्हार |
| 4. भाम्बी, भाम्भी, असादरु, असोदी, चमाडिया, चमार, चाम्भार, चमगार, हरलया, हरली, खालपा, मचिगार, मोचीगार, मावर, मादिग, मोची, नालिया, तैलगु मोची, कामाटी मोची, राणीगार, रोहिदास, रोहित, सासगार | 15. होलेय, होलेर |
| 5. भंगी, मेहतर, ओलगना, रुखी, मलकाना, हलालखोर, लालबेगी, बाल्मीकि, कोरार, झाडमल्ली | 16. लिंगा डेर |
| 6. चलवादि, चन्नय्य | 17. महार, तराल, धेगु मेगु |
| 7. चेन्ना दासर, होलेय दासर | 18. महायावंशी, घेड़, घेढ, वणकर, मरु वणकर, अन्त्यज |
| 8. डंगशिया | 19. मांग, मातंग मिणिमादिग |
| 9. डोर, कक्कया, कंकथया | 20. मांग-गारुडी |
| 10. गरमातंग | 21. मेघवल, मेघवाल, मेधवार |
| 11. गरोडा, गरो | 22. मुक्री |
| | 23. नाडिया, हाडी |
| | 24. पासी |
| | 25. सेनवा, शेनवा, चैनवा, सेडमा, रावत |
| | 26. शिमलिया |
| | 27. थोरी |
| | 28. तीरगार, तीरबन्द |
| | 29. तुरी |
| | 30. तुरी, बरोत, डेढ बरोत |

भाग 5—हरियाणा

- | | |
|---------------------------|------------------------------------------------------|
| 1. आद धर्मी | 7. बाजीगर |
| 2. बाल्मीकि, चूहड़ा, भंगी | 8. भंजड़ा |
| 3. बंगाली | 9. चमार, जटिया चमार, रेहगड़, रैगड़, रामदासी, रविदासी |
| 4. बराड़, बुराड़, बेराड़ | 10. चनाल |
| 5. बटवाल | 11. डागी |
| 6. बौरिया, बाबरिया | |

12. दडै	25. नट
13. डेहा, डैया, डेआ	26. ओड़
14. धानक	27. पासी
15. डोगरी, डोंगरी, सिन्गी	28. पेरना
16. डूमना, महाशय, डूम	29. फरेरा
17. गगडा	30. सनहाय
18. गंडीला, गण्डील, गोन्दोला	31. सनहाल
19. कबीरपंथी, जुलाहा	32. सांसी, भेड़कूट, मनेश
20. खटीक	33. संसोई
21. कोरी, कोली	34. सपेला
22. मरीजा, मरेचा	35. सर्रेडा
23. मजहबी	36. सिकलीगर
24. मेघ	37. सिरकीबन्द

भाग 6--हिमाचल प्रदेश

1. आद धर्मी	28. हली
2. बांड़ी, नागलू	29. हेसी
3. बाल्मीकि, भंगी, चूहड़ा, चूड़ा, चूहड़े	30. जोगी
4. बांधेला	31. जुलाहा, जुलाहे, कबीरपंथी, कीर
5. बंगाली	32. कमोह, डगोली
6. बंजारा	33. करोक
7. बांसी	34. खटीक
8. बरड़	35. कोरी, कोली,
9. बराड़, बुराड़ बेराड़	36. लोहार
10. बटवाल	37. मरीजा, मरेचा
11. बौरिया, बावरिया	38. मजहबी
12. बाजीगर	39. मेघ
13. भंजड़ा, भंजड़े	40. नट
14. चमार, जटिया चमार, रेहगड़, रैगड़, रामदासी, रविदासी, रामदासिया, मोची	41. ओड़
15. चनाल	42. पासी
16. छिम्बे, धोबी	43. पेरना
17. दागी	44. फेडा, फेरेडा
18. दडै	45. रेहाड़, रेहाड़ा
19. दर्राई, दरयाई	46. सनहाई
20. दाउले, दावले	47. सनहाल
21. ढाकी, तूरी	48. सांसी, भेड़कूट, मनेश
22. धानक	49. संसोई
23. धाओगरी, धुआई	50. सपेला
24. धोगरी, धांगरी, सिन्गी	51. सरड़े, सर्रेडा, सराड़े, सिरयाड़े, सरेहड़े
25. डूम, डूमना, डुमना, डुमने, महाशा	52. सिकलीगर
26. गगडा	53. सिपी
27. गंधीला, गण्डील, गोण्डोला	54. सिरकीबन्द
	55. तेली
	56. ठठियार, ठठेरा

भाग 7--कर्नाटक

1. आदि आम्घ
2. आदि द्रविड़
3. आदि कर्नाटक
4. आदीय (कुर्ग जिले में)
5. आगेर
6. आजिला
7. अनामुक
8. आर्य माला
9. अस्थितियार
10. आर्वमाला
11. बैरा
12. बाकड़
13. बंट (बेलगांव, बीजापुर, धार-
वाड़ और उत्तरी कनारा जिलों में)
14. बकुड़ा
15. बालगाई
16. बण्डी
17. बंजारा, लम्बाणी
18. बथड़ा
19. बेड़ जंगम, बुडग जंगम
20. बेलारा
21. भंगी, मेहतर, ओलमाना ख्खी,
मलकाना, हलालखोर, लालबेगी,
बाल्मीकि, कोरार, झाड़माली
22. भंभी, भंभी, असादरु, आसोदी,
चमड़िया, चमार, चम्भार, चाम-
गार, हरलय्या, हरली, खलपा,
मच्चिगार, मोच्चिगार, मादार,
मादिग, मोची, मुची, तेलगु-
मोची, कामटि-मोची, राणीगार,
रोहिदास, रोहित, सामगार
23. भोवी
24. विडल
25. ब्यागरा
26. चन्किलियान
27. चलवादी, चलवादी, चन्नैया
28. चांडाल
29. चेन्नादासर, होलयादासर
30. दक्कल, दक्कलवार
31. दक्कलिंगा
32. डोर, कक्कय्या, कक्कय्या
33. डोम, डोम्बर, पैडी, पानो
34. एल्लमलवार, येल्लम्मलवाण्डलु
35. गंटी चोर
36. गारोडा, गरो
37. गोड्डा
38. गौसंगी
39. हल्लीर
40. हलसार, हसलार, हुलस्वार, हलस्व
41. हंदी जोगी
42. हस्ला
43. होलार, वलहार
44. होलाय, होलेर, होलेय
45. होलेयदासरी
46. जग्गली
47. जम्बुवुल
48. कडैयन
49. कल्लादि
50. कैम्पमारी
51. कोलुपुलवाण्डल
52. कूसा
53. कोरच
54. कोरम
55. कोटेगार, मैत्री
56. कुडुम्बत
57. कुरवान्
58. लिंगाडेर
59. मचला
60. मदारी
61. मादिग
62. महार, तराल, धेगु मेगु
63. माहयावंशी, धेड़, वणकर, मारु-
बणकर
64. मैला
65. माल
66. मालदासरी
67. माल हन्नई
68. मालजंगम
69. मालमस्ती
70. मालसाले, नेतकानि
71. माल सन्यासी
72. मांग, मातंग, मिनिमादिग
73. मांग गारुडी, मांग गारोडी
74. मन्ने
75. मशती
76. माविलन
77. मेघवाल, मेघवार
78. मोगेर
79. मुक्की
80. मुंडाला
81. नाडिया, हाडी
82. नलकडय
83. नलकेयव
84. नायाडि
85. पाले
86. पल्लनू

- | | |
|--------------------|----------------------|
| 87. पम्बाड़ा | 95. सपरी |
| 88. पंचम | 96. सिल्लेक्कियस |
| 89. पन्नियाडि | 97. सिवोलू, चिदोलू |
| 90. परइयान, परय्या | 98. सुडुगाडुसिद्ध |
| 91. परवन | 99. तोटि |
| 92. राणीयार | 100. तीरगार, तीरबन्द |
| 93. सामगार | 101. वल्लुवन |
| 94. सम्बन | |

भाग 8—केरल

- | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. आदि ग्रान्ध | 35. मैला |
| 2. आदि द्रविड़ | 36. मलयन [राज्य पुनर्गठन अधि-
नियम, 1956 की धारा 5 1956 का 37
की उपधारा (2) द्वारा यथा
विनिर्दिष्ट मालावार जिले में
समाविष्ट क्षेत्रों में] |
| 3. आदि कर्नाटक | |
| 4. आजिला | |
| 5. अरुन्धथियार | |
| 6. अय्यनवर | |
| 7. बैरा | 37. मण्णन |
| 8. वकुडा | 38. माविलन |
| 9. वंडी | 39. मोगेर |
| 10. बथडा | 40. मुण्डाला |
| 11. बेल्लारा | 41. नलकेयव |
| 12. भरतर | 42. नलकाडय |
| 13. बोयन [राज्य पुनर्गठन अधिनियम,
1956 की धारा 5 की उपधारा
(2) द्वारा यथा विनिर्दिष्ट
मालावार जिले में समाविष्ट
क्षेत्रों को छोड़कर] | 43. नायाडी |
| 14. चक्किलियान | 44. पर्वन्नन |
| 15. चमार, मुची | 45. पल्लन |
| 16. चांडाल | 46. पल्लुवन |
| 17. चेंभन | 47. पाम्बाडा |
| 18. डोम्बन | 48. पाणन |
| 19. गवार | 49. पंचम |
| 20. गोडागली | 50. परैयन, परयन, सांबवर |
| 21. गोड्डा | 51. परवन |
| 22. गोसंगी | 52. पतियन |
| 23. हस्ला | 53. पेरुमण्णन |
| 24. होलेय | 54. पुन्नयन, चेरमर |
| 25. कडैयन | 55. पुलय वेटुवन |
| 26. कक्कलन | 56. पुतिरई वण्णन |
| 27. कल्लाडी | 57. राणीयार |
| 28. कण्णकन्न, पद | 58. सामगार |
| 29. करिम्पालन | 59. सम्बन |
| 30. कवर | 60. सेम्मान |
| 31. कूसा | 61. तण्डाल |
| 32. कूटन; कूडन | 62. मोटि |
| 33. कुडुम्बन | 63. वल्लीन |
| 34. कुरबन, सिद्धनार | 64. वल्लुवन |
| | 65. वण्णन |
| | 66. वेलन |
| | 67. वेटन |
| | 68. वेट्टुवन |

भाग 9—मध्य प्रदेश

- | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. अश्रुलिया | 29. कातिया, पथरिया |
| 2. बागरी, बागड़ी | 30. खटीक |
| 3. बहना, बाहना | 31. कोली, कीरी |
| 4. बलाही, बलाई | 32. कोतवाल (भिड़, धार, देवास,
गुना, ग्वालियर, इन्दौर,
झाबुआ, खरगोन, मन्दसौर,
मुरैना, राजगढ़, रतलाम,
शाजापुर, शिवपुरी, उज्जैन
और विदिशा जिलों में) |
| 5. बाँछडा | 33. खगार, कनेरा, मिरधा |
| 6. वरहर, बसोड | 34. कुचबंधिया |
| 7. वरगुन्डा | 35. कुम्हार (छतरपुर, दतिया,
पन्ना, रीवा, सतना, शहडोल,
सीधी और टिकमगढ़ जिलों
में) |
| 8. बसौर, बुरुड़, बांसौर, बांसोडी,
बांसफोड़, बसार | 36. महार, मेहरा, मेहर |
| 9. बेड़िया | 37. मांग, मांग गारोडी, मांग गारुडी,
दखनी मांग, मांग महाशी,
मदारी, गारुडी, राधे मांग |
| 10. बेलदार, मुनकर | 38. मेघवाल |
| 11. भंगी, मेहतर, बालभीक, लालबेगी,
धरकार | 39. मोघिया |
| 12. भानुमती | 40. मुसखान |
| 13. चडार | 41. नट, कालबेलिया, सपेरा,
नवदिगार, कुबुतर |
| 14. चमार, चमारी, बेरवा, भाँबी,
जाटव, मोची, रैगड़, नोना,
रोहिदास, रामनामी, सतनामी,
सूर्यवंशी, सूर्यरामनामी, अहिरवार,
चमार मंगन, रैदास | 42. पारधी (भिड़, धार, देवास,
गुना, ग्वालियर, इन्दौर,
झाबुआ, खरगोन, मन्दसौर,
मुरैना, राजगढ़, रतलाम,
शाजापुर, शिवपुरी, उज्जैन
और विदिशा जिलों में) |
| 15. चिदार | 43. पासी |
| 16. चिकवा, चिकवी | 44. रुज्जर |
| 17. चित्तार | 45. सांसी, सांसिया |
| 18. दहाइत, दहायत, दहात | 46. सिलावट |
| 19. देवर | 47. शमराल |
| 20. धानुक | |
| 21. धेड़, धेड़ | |
| 22. धोबी, (भोपाल, रायसेन और
सिहोर जिलों में) | |
| 23. डोहोर | |
| 24. डोम, डुमार, डोमे, डोमर,
डोरिस | |
| 25. गांडा, गांडी | |
| 26. घासी, घसिया | |
| 27. हूलिया | |
| 28. कंजर | |

भाग 10—महाराष्ट्र

- | | |
|----------------|----------------------------------|
| 1. अशेर | 6. वाकड़, बंट |
| 2. अनमुक | 7. बलाही, बलाई |
| 3. आरे माला | 8. बसौर, बुरुड़, बांसौर, बांसोडी |
| 4. आखामाला | 9. बेडा खंभम, बुडगा जंगम |
| 5. बहना, बाहना | 10. बेडर |

- | | |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| 11. भांवी, भंभी, असादरू, असोवी, चमाडिया, चमार, चमारी, चंभार, चामगार, हरलध्या, हरली, खलपा, मचीगार, मोचीगार, मादर, मादिग, मोची, तेलगु मीची, कामाटी मोची, राणीगार, रोहिदार, तोना, रामनामी, रोहित, समगर, सामगार, सतनामी, सूर्यवंशी, सूर्यरामनामी | 29. कंठीया, पठारिया |
| 12. भंगी, मेहतर, ओलगन, रखी, मलकाना, हलालखोर, लालबेगी, बाल्मीकि, कोरार, झाडमाली | 30. खंगार, कनेरा, मिरधा |
| 13. बिदला | 31. खाटीक, चिकवा, चिकवी |
| 14. ब्यागरा | 32. कोलपुलवाण्डलु |
| 15. चलवादि, चन्नीया | 33. कोरी |
| 16. चेन्नादासर, होलाय दास, होलाय दासरी | 34. लिगादार |
| 17. डककल, डोककलवार | 35. मादगी |
| 18. डोर, कककय्या, कन्कय्या, डोहोर | 36. मादिगा |
| 19. डोम, डुमार | 37. महार, मेहरा, तराल, धगु मेगु |
| 20. एल्लमलवार, येल्लम्मलावाण्डलु | 38. माहयावंशी, घेड़, वणकर, मारूवणकर |
| 21. गंदा, गंदी | 39. माला |
| 22. गरोडा, गरो | 40. मालादासरी |
| 23. घासी, घसिया | 41. माल हन्नै |
| 24. हल्लीर | 42. माला जंगम |
| 25. हलसार, हसलार, हुस्वार, हलस्वार | 43. माला मस्ती |
| 26. होलार, वलहार | 44. मालसाले, नैतकानि |
| 27. होलया, होलेर, हॉलेया होलिया | 45. माला सन्यासी |
| 28. कैंकाडी (अकोला, अमरावती, भंडारा, बुलढाना, नागपुर, वर्धा और यवतमाल जिलों में और राजुरा तहसील को छोड़कर चन्द्रपुर जिले में) | 46. मांग, मातंग, मिनिमादिग, दंखनी, मांग, मांग-महाशी, मदापी, गारुडी, राधे मांग |
| | 47. मांग गारोडी, मांग गारुडी |
| | 48. मन्ने |
| | 49. मशती |
| | 50. मेघवाल, मेंघवार |
| | 51. मिठा अय्यलवार |
| | 52. मुक्की |
| | 53. नाडीया, हाडी |
| | 54. पासी |
| | 55. सांरी |
| | 56. शेनवा, चैनवा, सेडमा, रावत |
| | 57. सिधौलू, चिदोलू |
| | 58. तीरगार, तीरवन्द |
| | 59. तुरी |

भाग 11—मणिपुर

- | | |
|-----------------|-------------|
| 1. धुपी, धोबी | 5. पांटनी |
| 2. लोई | 6. सूत्रधार |
| 3. मुची, रविदास | 7. रैथिबि |
| 4. नामशूद्र | |

भाग 12—मेघालय

- | | |
|---------------------|---------------------------|
| 1. बांसफोड़ | 3. बृत्तियाल बनिया, बनिया |
| 2. भूर्ङ्गाली, माली | 4. धुपी, धोबी |

5. डुगला, डोली	11. महरा
6. हीरा	12. मेहतर, भंगी
7. जलकेवट	13. मुची, ऋषि
8. झालो, मालो, झालो-मालो	14. नामशूद्र
9. कैबर्त, जालिया	15. पाटनी
10. लालवेगी	16. सूतधार

भाग 13—उड़ीसा

1. आदि आन्द्र	40. ईरीका
2. अमान्त, अमात	41. जगली
3. अश्वेलिया	42. कंडरा, कंडारा
4. बडैक	43. कारुआ
5. बाघेटी, बाघुटी	44. कटिआ
6. बाजीकर	45. केला
7. बारी	46. खडाल
8. बारीकी	47. कोडालो, खोडालो
9. बासोर, बुरुड	48. कोरी
10. बाउरी	49. कुम्भारी
11. बाउटी	50. कुखंगा
12. बावुरी	51. लवाण
13. बेडिया, बेजिया	52. लाहेरी
14. बेलदार	53. मदारी
15. भाट	54. मादिग
16. भोई	55. महूरिया
17. चचटी	56. माला, झाला, मालो, झाला
18. चकली	57. सांग
19. चमार, मोची, मुची, सतनामी	58. सांगण
20. चांडाल	59. मेहरा, महार
21. चन्दाई मारु	60. मेहतर, भंगी
22. चेख्रा, छेलिया	61. मेवार
23. दंडासी	62. मुंडपोट्टा
24. देवर	63. मुसहर
25. धनवार	64. नगारची
26. धोवा, धोबी	65. नामशूद्र
27. डोम, डोम्बो, डुरिया, डोम	66. पैडी
28. दोसधा	67. पैण्डा
29. गंडा	68. पामीडी
30. घंटरघड़ा, घंटरा	69. पाण, पाणो
31. घासी, घसिया	70. पंचम
32. घोगिया	71. पाणिका
33. घुसुरिया	72. पंका
34. गोडागली	73. पाणतन्ति
35. गोडारी	74. पाप
36. गोडरा	75. पासी
37. गोखा	76. पटिआल, पाटीकर, पात्रतन्ति, पटुआ
38. गोरार्ईत, कोरार्ईत	77. रजना
39. हाड्डी, हाडी, हरी	

78. रेल्ली	86. सियाल
79. सबाखिआ	87. टमाडिया
80. समासी	88. टमुडिया
81. सनेई	89. तानला
82. सपरी	90. तियार, तियौर
83. सीतिया, सांतिया	91. तुरी
84. सिधरिआ	92. उजीआ
85. सिद्धरिया	93. वालमीकि, वाल्मीकि

भाग 14--पंजाब

1. आद धर्मी	19. कबीरपंथी, जुलाहा
2. बाल्मीकि, चूडा, भंगी	20. खटीक
3. बंगाली	21. कोरी, कोली
4. बरड, बुरड, बेरड	22. मरीजा, मरेजा
5. बटवाल	23. मजहबी
6. बौरिया, बावरिया	24. मेघ
7. बाजीगर	25. नट
8. भंजड़ा	26. ओड
9. चमार, जटिया चमार, रेंहंगड, रैगड, रामदासी, रविदासी	27. पासी
10. चनाल	28. पेरना
11. डागी	29. फेरेरा
12. दडै	30. सनहाई
13. डेहा, डैया, डेआ	31. सनहाल
14. धानक	32. सांसी, भेडकुट, मनेश
15. डोंगरी, डोगरी, सिंगी	33. संसोई
16. डूमना, महाशा, डूम	34. सपोला
17. गगडा	35. सरैडा
18. गंडीला, गण्डील गण्डीला	36. सिकलीगर
	37. सिरकीबन्द

भाग 15--राजस्थान

1. आदि धर्मी	14. भंगी, चूडा, सेहतर, थौलगाना, रुखी, मलकाना, हलालखोर, लालबेगी, बाल्मीकि, वाल्मीकि, कोरर, झाडमाली
2. अहेरी	15. बिदाकिया
3. बादी	16. बोला
4. बागरी, बागड़ी	17. चमार, भंभी, बंभी, भंवी, जटिया, जाटव, जटव, मोची, रैदास, रोहिदास, रेगड, रैगड, रामदासिया, प्रसादरू, असोदी, चमाडिया, चम्भार, चामगार, हरलप्या, हराजी, खलपा, सचिंगार, सोचीगार,
5. बैरवा, बेरवा	
6. बाजगर	
7. बलाई	
8. बांसफोर, बांसफोड़	
9. बावरी	
10. बर्गी, बर्गी, बिर्गी	
11. बावरिया	
12. बेडिया, बेरिया	
13. भांड	

- | | |
|--------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------|
| मादर, मादिग, तेलुगु भोषी,
कामटी भोषी, राजीगार, रोहित,
सामगार | 38. कूचबन्द, कुचबन्द |
| 18. चांडाल | 39. कोरिया |
| 19. दबगर | 40. मदारो, बाजीगर |
| 20. घानक, घानुक | 41. महार, तराल, घेगुमेगु |
| 21. घानकिया | 42. माह्यावंशी, डेड़, डेड़ा, वणकर,
मारु वणकर |
| 22. घोवी | 43. मजहबी |
| 23. बोली | 44. मांग, मातंग, मिनिमादिग |
| 24. डोम, डूम | 45. मांग गारोड़ी, मांग वाखड |
| 25. गांडिया | 46. मेघ, मेघवाल, मेघवल, मेघवार |
| 26. गरांचा, गांचा | 47. मेहर |
| 27. गरुडे, गरुड, गुर्डा, गरोडा | 48. नट, नुट |
| 28. गवारिया | 49. पासो |
| 29. गोधी | 50. रावल |
| 30. जीनगार | 51. सालवी |
| 31. कालबेलिया, सपेरा | 52. सांसी |
| 32. कामड, कामडिया | 53. सांतिया, सतिया |
| 33. कंजर, कुंजर | 54. सरभंगी, |
| 34. कपाडिया सांसी | 55. सरगड़ा |
| 35. खंगार | 56. सिंगोवाला |
| 36. खटीक | 57. थोरी, नायकी |
| 37. कोली, कोरी | 58. तीरगार, तीरबन्द |
| | 59. तुरी |

भाग 16—तमिलनाडु

- | | |
|-------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. आदि आन्ध्र | 19. डोम्बन |
| 2. आदिद्रविड़ | 20. गोडामली |
| 3. आदिकर्नाटक | 21. गोड्ड |
| 4. आजिला | 22. गोसंगी |
| 5. अस्तित्यार | 23. हेलिय |
| 6. अय्यनवर (कन्याकुमारी जिले
में और तिरुनेलवेली जिले के
शेन्कोट्टा तालुक में) | 24. जम्बाली |
| 7. बैरा | 25. जम्बुवुलु |
| 8. बकुड़ा | 26. कडइयन |
| 9. बण्डी | 27. कक्कलन (कन्याकुमारी जिले
में और तिरुनेलवेली जिले के
शेन्कोट्टा तालुक में) |
| 10. बेल्लारा | 28. कल्लादि |
| 11. भरतर (कन्याकुमारी जिले में
और तिरुनेलवेली जिले के
शेन्कोट्टा तालुक में) | 29. कनवकन, पाडशा (नीलगिरि
जिले में) |
| 12. चक्कलियन | 30. करिम्पालन |
| 13. चलवादि | 31. कावरा (कन्याकुमारी जिले में
और तिरुनेलवेली जिले के
शेन्कोट्टा तालुक में) |
| 14. चमार, मुची | 32. कोलियन |
| 15. चाण्डाल | 33. कूसा |
| 16. चेस्मान | 34. कूडन, कूडन (कन्याकुमारी
जिले में और तिरुनेलवेली जिले
के शेन्कोट्टा तालुक में) |
| 17. देवेन्द्रकुलयन | |
| 18. डोम, डोम्बारा, पैडी, पानो | |

- | | |
|-------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------|
| 35. कुडुम्बन | 58. पथियन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) |
| 36. कुरवन, सिद्धनार | |
| 37. मदारी | 59. पुलयन, चेरमार |
| 38. मादिग | 60. पुदिरैवन्न |
| 39. मैला | 61. राणीयार |
| 40. माल | 62. सामगार |
| 41. मन्नन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) | 63. सम्बन |
| 42. माविलान | 64. सपरी |
| 43. सोगर | 65. सेम्पन |
| 44. मुण्डाला | 66. तण्डन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) |
| 45. नलकेयव | 67. थोटि |
| 46. नायाड़ी | 68. तिरुवल्लुवर |
| 47. पडन्नन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) | 69. वेल्लन |
| 48. पगाडे | 70. वल्लुवन |
| 49. पल्लन | 71. वन्नन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) |
| 50. पल्लुवन | 72. वातिरियन |
| 51. पमवाड़ा | 73. वेलन |
| 52. पानन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) | 74. वेटन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) |
| 53. पंचम | 75. वैट्टियान |
| 54. पन्नाड़ी | 76. वेट्टुवन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) |
| 55. पन्नियांडी | |
| 56. परैयन, परयन, सम्बद्धर | |
| 57. परवन (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेली जिले के शेन्कोट्टा तालुक में) | |

भाग 17—त्रिपुरा

- | | |
|-------------------|---------------|
| 1. वागदी | 17. कनुह |
| 2. भुईमाली | 18. केवत |
| 3. भुनर | 19. खादित |
| 4. चमार, मूची | 20. खारिया |
| 5. दातदासी | 21. कोच |
| 6. धेनुधर | 22. कोथर |
| 7. घोबा | 23. कोल |
| 8. डोम | 24. कोरा |
| 9. घासी | 25. कोटाल |
| 10. गौर | 26. महिष्यदास |
| 11. गुर | 27. मासी |
| 12. जेजेया कैबर्त | 28. मेहतर |
| 13. कहार | 29. मुसहर |
| 14. कालिन्दी | 30. नमोशूद्ध |
| 15. काम | 31. पाटनी |
| 16. कण्दा | 32. सबर |

भाग 18—उत्तर प्रदेश

- | | |
|--------------------------------|-------------------------------|
| 1. अग्ररिया | 34. धरामी |
| 2. बघिक | 35. घसिया |
| 3. बादी | 36. गोंड |
| 4. बहेलिया | 37. ग्वाल |
| 5. बैगा | 38. हबूडा |
| 6. बैसवार | 39. हरी |
| 7. बजनिया | 40. हेला |
| 8. बाजगी | 41. कलाबाज |
| 9. बलहार | 42. कंजर |
| 10. बलाई | 43. कपड़िया |
| 11. बाल्मीकि | 44. करवल |
| 12. बंगाली | 45. खराहा |
| 13. बनमानुष | 46. खरवार (बनबांसी को छोड़कर) |
| 14. बांसफोड़ | 47. खटीक |
| 15. बरवार | 48. खोरोट |
| 16. बसोड़ | 49. कोल |
| 17. बावरिया | 50. कोरी |
| 18. बेलदार | 51. कोरवा |
| 19. बेरिया | 52. लालबेगी |
| 20. भंतू | 53. मझवार |
| 21. भुईया | 54. मझहबी |
| 22. भुईयार | 55. मुसहर |
| 23. बोरिया | 56. नट |
| 24. चमार, घुसिया, झुसिया, जाटव | 57. पंखा |
| 25. चैरो | 58. परहिया |
| 26. दबगर | 59. पासी, तरभाली |
| 27. धंगड़ | 60. पाटरी |
| 28. धानुक | 61. रावत |
| 29. धरकार | 62. सहारया |
| 30. धोबी | 63. सिनौडिया |
| 31. डोम | 64. सांसिया |
| 32. डोमर | 65. शिल्पकार |
| 33. दुसाध | 66. तुरैहा |

भाग 19—पश्चिमी बंगाल

- | | |
|----------------------------------------------------|-------------------------------|
| 1. बागड़ी, दुले | 12. चौपाल |
| 2. बहेलिया | 13. दबगर |
| 3. बायली | 14. दामाई (नेपाली) |
| 4. बंतर | 15. घोबा, घोबी |
| 5. बौरी | 16. दोयाई |
| 6. बेलदार | 17. डोम, धंगड़ |
| 7. भोगता | 18. दोसाध, दुसाध, धारी, धारही |
| 8. भुईमाली | 19. घासी |
| 9. भुइया | 20. गोनरही |
| 10. बिन्द | 21. हलालखोर |
| 11. चमार, चर्मकार, मोची, मुची, रविदास, रूईदास, ऋषि | 22. हरी, मेहतार, मेहतार, भंगी |
| | 23. जेलेया, कौबर्त |

24. झालो मालो, मालो	42. महार
25. कादर	43. माल
26. कामी (नेपाली)	44. मल्लाह
27. कांदरा	45. मुसहर
28. कांजर	46. नामशूद्र
29. कावरा	47. नट
30. करैया, कोरंगा	48. नूनिया
31. कौर	49. पलिया
32. केवट, केयोट	50. पान, सवासी
33. खंरा	51. पासी
34. खटीक	52. पाटनी
35. कोच	53. पोद, पोन्ना
36. कोनाई	54. राजवंशी
37. कोनवार	55. राजवार
38. कोटाल	56. शड़की (नेपाली)
39. कुरारियर	57. सुनरी (साहा को शेरकर)
40. लालबेगी	58. तियर
41. सोहार	59. तूरी ।” ।

द्वितीय अनुसूची

(धारा 4 देखिए)

अध्याय 1

संविधान (अनुसूचित जनजातियां) आदेश, 1950 में,—

(क) धारा 3 के स्थान पर निम्नलिखित रखें, अर्थात् :—

“3. इस आदेश में किसी राज्य अथवा किसी जिले या अन्य प्रादेशिक खण्ड के प्रति निर्देश का अर्थ यह लगाया जाएगा कि वह 1 मई, 1956 को यथा गठित राज्य, जिले या अन्य प्रादेशिक खण्ड के प्रति निर्देश है।” ;]

(ख) अनुसूची के स्थान पर निम्नलिखित रखें, अर्थात् :—

“अनुसूची

भाग 1—ग्राम्य प्रदेश

1. अन्ध	10. कम्भर
2. बगटा	11. कटुनायकन
3. भील	12. कोलम, मन्नरवलु
4. चेंचु, जेंचुवार	13. कोडा दोरा
5. गडबा	14. कोड कापु
6. गोंड ; नायककोड, राजगोंड	15. कोडारेडि
7. गौड़ (अभिकरण-खण्डों में)	16. कोंध, कोडि, कोदू, देसेय कोंध ;
8. हिलारेडि	डोंगरिया कोंध, कट्टिया कोंध ;
9. जातपू	दिकरिया कोंध ; येनिदी कोंध

- | | |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 17. कोटिया, बेंधी ओरिया, बारतिका, घुलिया, डुलिया, होल्वा, पैंको पुटिया, सन्रोण, सिधापैंको | 24. परघाण |
| 18. कोया गौड, राजा, रास कोया, लिंगघारी कोया (साधारण), कोट्टू कोया, भिणे कोया, राज कोया | 25. पुर्जा, पेरंगीषेर्जा |
| 19. कुलिया | 26. रेड्डु दोरा |
| 20. मालि (आदिलाबाद, हैदराबाद, करीम नगर, खम्मम, महबूबनगर, मेदक, नलगोंडा, निजामाबाद और वरंगल जिलों को छोड़कर) | 27. रोणा, रेणा |
| 21. मन्नादोरा | 28. सवार, कापू सवार, आलिया सवार, खुट्टा सवार |
| 22. मुखा दोरा, नूका दोरा | 29. सुगाली, लम्बाडी |
| 23. नायक (अभिकरण-खूबड़ों में) | 30. तोटि, (आदिलाबाद, हैदराबाद, करीमनगर, खम्मम, महबूबनगर, मेदक, नलगोंडा, निजामाबाद और वरंगल जिलों में) |
| | 31. बाल्मीकि (अभिकरण-खूबड़ों में) |
| | 32. यनादी |
| | 33. येरकुला |

भाग 2—असम

1. स्वशासी जिलों में :—

- | | |
|--------------------------------------------------------|--------------------------------|
| 1. चाकमा | (xviii) खोरह |
| 2. डिमासा कछारी | (xix) किष्पेन |
| 3. गारो | (xx) कूकी |
| 4. हाजंग | (xxi) लेबांग |
| 5. ह्यार | (xxii) लहाघुम |
| 6. खासी, जयन्तिया, सिन्तैंग, प्नार, बार, भोई, लिंगनागम | (xxiii) ल्हाजम |
| 7. निम्नलिखित के सहित कोई कूकी जनजातियां :— | (xxiv) ल्होबुन |
| (i) बियाते, बियेते | (xxv) लुफैंग |
| (ii) चींगसान | (xxvi) माजेल |
| (iii) चंगलोई | (xxvii) मिसाउ |
| (iv) दौंगेल | (xxviii) रिआंग |
| (v) गमल्हो | (xxix) सैहैम |
| (vi) गोंगटे | (xxx) सेलुनाम |
| (vii) गुहते | (xxxi) सिम्सन |
| (viii) हाजैंग | (xxxii) सितल्हो |
| (ix) हौकिप या हौपित | (xxxiii) सुक्ते |
| (x) हौलौई | (xxxiv) थाडो |
| (xi) हेंगना | (xxxv) थोंग्पू |
| (xii) हंसुघ | (xxxvi) उइद् |
| (xiii) हांग्खवाल, रंग्खल | (xxxvii) व्हाइफे |
| (xiv) जंगवे | 8. लाखेर |
| (xv) ख्वौचूंग | 9. (ताई बोलने वाली) मॉन |
| (xvi) ख्वौरंग, खोतालंग | 10. कोई मिजो (लुशाई) जनजातियां |
| (xvii) खेलमा | 11. मिकिर |
| | 12. कोई नागा जनजातियां |
| | 13. पावी |
| | 14. सितैंग। |

2. स्वशासी जिलों को छोड़कर असम राज्य में :—

- | | |
|---------------------|-----------|
| 1. कछार में बर्मन | 6. लालुंग |
| 2. बड़ो, बड़ो कछारी | 7. मेच |
| 3. ड्योरी | 8. मिरी |
| 4. होजाई | 9. राभा |
| 5. कछारी, सोन्वाल | |

भाग 3—बिहार

- | | |
|-----------------------------------------------------------------------------------|--------------------|
| 1. असुर | 15. करमाली |
| 2. बेगा | 16. बरिया |
| 3. बनजारा | 17. खरवार |
| 4. बटुडी | 18. खोंड |
| 5. बेदिया | 19. किसान |
| 6. भूमिज (उत्तरी छोटानागपुर और दक्षिणी छोटानागपुर खण्डों और संथाल परगना जिले में) | 20. कोरा |
| 7. बिन्निया | 21. कोरवा |
| 8. बिरहोर | 22. लोहार, लोहरा |
| 9. विरजिया | 23. माहली |
| 10. चेरो | 24. माल पहरिया |
| 11. चिक बराइक | 25. मुन्डा |
| 12. गोंड | 26. उरांव |
| 13. गोराइत | 27. परहया |
| 14. ह्यो | 28. संथाल |
| | 29. सोरिया पहाडिया |
| | 30. साबर |

भाग 4—गुजरात

- | | |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. बडॉ | 12. गोंड, राजगोंड |
| 2. बावचा, बामचा | 13. कयोडी, कटकारी, डोर कयोडी, डोर कटकारी, सोन कयोडी, सोन कटकारी |
| 3. भरवाड़ (अलेच्छ, गीर, बराड़ा के जंगलों के नैसों में) | 14. कोकणा, कोकणी, कुक्णा |
| 4. भील, भील गरासिया, धोली भील, डुंगरी भील, डुंगरी गरासिया, मेवासी भील, रावल भील, तडवी भील, भगालिया, मिलाला, पावड़ा, बसावा, बसावे । | 15. कोली (कच्छ जिले में) |
| 5. चारण (अलेच्छ, बराड़ा और गीर के जंगलों के नैसों में) | 16. कोली डोर, टोकरे कोली, कोल्चा, कोल्धा |
| 6. चौधरी (सूरत और बलसाद जिलों में) | 17. कुन्वी (डांम्स जिले में) |
| 7. चौधरा | 18. नायकाडा, नायक, चोलीवाला नायक, कपाड़िया नायक, मोटा नायक, नाना-नायक |
| 8. धनक, तडवी, तेतारिया, बलवी | 19. पाधर |
| 9. धोडिया | 20. पराधी (कच्छ जिले में) |
| 10. दुबला, तलाविया, हलपति | 21. पधी, अदविचिन्नेर, फानसे पधी (अमरेली, भावनगर, जामनगर, जूनागढ़, कच्छ, राजकोट और सुरेन्द्रनगर जिलों को छोड़कर) |
| 11. गमित, गम्ता, गविट, मची, पदवी | |

- | | |
|-----------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------|
| 22. पटेलिया | 26. सिद्दी (अमरेली, भावनगर,
जामनगर, जूनागढ़, राजकोट
और सुरेन्द्रनगर जिलों में) |
| 23. पोमला | |
| 24. खरी (अलेच्छ, बरादा और
गीर, के जंगलों के नैसों में) | 27. वाघेरी (कच्छ जिले में) |
| | 28. वारली |
| 25. राथवा | 29. विटोलिया, कोटवालिया,
बरोडिया |

भाग 5—हिमाचल प्रदेश

- | | | |
|------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------|
| | 1. भोट, बोड़ | की उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट
राज्यक्षेत्रों को छोड़कर] |
| 1966 का 31 | 2. गद्दी [पंजाब पुनर्गठन अधिनियम,
1966 की धारा 5 की उपधारा
(1) में विनिर्दिष्ट, लाहौल
और स्पीती जिले से भिन्न
राज्यक्षेत्रों को छोड़कर] | 4. जाद, लाम्बा, खम्पा |
| | 3. गुज्जर [पंजाब पुनर्गठन अधि-
नियम, 1966 की धारा 5 | 5. कनौरा किन्नारा |
| 1966 का 31 | | 6. लाहौला |
| | | 7. पंगवाला |
| | | 8. स्वांगला |

भाग 6—कर्नाटक

- | | |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------|
| 1. अदियन | 19. काथोडी, काटकारी, डोर कथोडी,
डोर काटकारी, सोन कथोडी,
सोन काटकारी |
| 2. बर्डा | |
| 3. बवन्ना, बम्बा | 20. काट्टूनायकन् |
| 4. भील, भील गरासिया, धोली
भील, डुंगरी भील, डुंगरी
गरासिया, मेवासी भील, रावल
भील, तड़वी भील, भगालिया,
भिलाला, पवरा, वासव,
वासवे | 21. कांकण, कांकणी, कुक्णा |
| 5. चेंचू, चेंचवार | 22. कोली घोर, टीकरे कोली,
कोल्चा, कोल्चा |
| 6. चौधारा | 23. कोंडा कापूस |
| 7. दुबला, तालाविद्या, हलपति | 24. कोरग |
| 8. गामिट, गमटा, गाविट, मावचि,
पदवी, वाल्वी | 25. कोटा |
| 9. गोंड, नायकपोड, राजगोंड | 26. कोया, भिने कोया, राजकोया |
| 10. गोड्डालू | 27. कुडिया, मेलकुडी |
| 11. हक्कीपिककी | 28. कुरुब (कुर्ग जिले में) |
| 12. हासालारु | 29. कुरुमान |
| 13. इरुलर | 30. महा मालासार |
| 14. इरुलिगा | 31. मलाई कुडी |
| 15. जेनु कुरुवा | 32. मालासार |
| 16. काडू कुरुवा | 33. मालायेकान्डी |
| 17. कम्मर (दक्षिणी कनारा
जिला और मैसूर जिले के
कोल्लेगाल तालुक में) | 34. मालेरु |
| 18. कनियान, कन्यान (मैसूर जिले
के कोल्लेगाल तालुक में) | 35. मराठा (कुर्ग जिले में) |
| | 36. मराटी (दक्षिणी कनारा जिले में) |
| | 37. मेडा |
| | 38. नायकडा, नायक, चौलीवाला,
नायका, कपाडिया नायक,
मोट्ट नायक, नाना नायक |
| | 39. पल्लियान |
| | 40. पानियान |

- | | |
|--------------------------------------|--------------------------|
| 41. पार्धी, अडविचिन्नेर, पनसे पार्धी | 46. तोडा |
| 42. पटेलिया | 47. वरली |
| 43. राथावा | 48. विटोलिया, कोतवालिया, |
| 44. शोलगा | बारोडिया |
| 45. सोलीगाह | 49. येरावा |

भाग 7—केरल

1956 का 37

- | | |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. आडियन् | 19. महामालासार |
| 2. अरांडन् | 20. मलय अर्षन् |
| 3. अरावालन् | 21. मलय पंडारम् |
| 4. हिल पुलया | 22. मलवेडन |
| 5. इरुलर्, इरुलन् | 23. मलकुर्वन् |
| 6. कादर | 24. मालासार |
| 7. कमारा [राज्य पुनर्गठन अधि-
नियम, 1956 से धारा
5 की उपधारा (2)
में यथा विनिर्दिष्ट
मालाबार जिले के क्षेत्रों
में] | 25. मलयन [राज्य पुनर्गठन अधि-
नियम, 1956 की
धारा 5 की उप-
धारा (2) द्वारा यथा विनि-
र्दिष्ट मालाबार जिले में
समाविष्ट क्षेत्रों में] |
| 8. कणिकारन्, काणिकार् | 26. मलयरयर |
| 9. काट्टुनायकन् | 27. मनान् |
| 10. कोच्चूवेलन | 28. माराटि (कन्नोर जिले के होसडुग
और कासरगोड तालुक में) |
| 11. कौनडा कापूस | 29. मुतुवान, मुदुगर, मुदुवन |
| 12. कौंडरेडि | 30. पत्तैयान |
| 13. कोरग | 31. पल्लियान |
| 14. कोटा | 32. पल्लियार |
| 15. कुडीया, मेलाकुडी | 33. पाणियन् |
| 16. करच्चिचान् | 34. उल्लाडन |
| 17. कुरुमन् | 35. उरालि |
| 18. कुरुम्बा | |

भाग 8—मध्य प्रदेश

- | | |
|-----------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. अगरिया | 14. धनवार |
| 2. आन्ध | 15. गडावा, गडवा |
| 3. बैगा | 16. गोंड, अरख, अरख, अगरिया,
असुर, बड़ी मारिया, बड़ा
मारिया, भटोला, भीमा, भुता,
कोइलाभुता, कोइलाभुती, भार,
बिसोनहार्न, मारिया, छोट
मारिया; दंडामी मारिया, धुरु,
धुरुवा, धोबा, धुलिया, डोरला,
गायकी, गट्टा, गट्टी, गैटा,
गोंड, गोवारी, हिल मारिया,
कंडरा, कलंगा, खटोला, कोइ-
तर, कोया, खिरवार, खिरवारा,
कुचा मारिया, कुचाकी मारिया,
माडिया, मारिया, माना, मन्न-
वार, मोध्या, मोगिया, मोंध्या, |
| 4. भैना | |
| 5. भारिया, भूमिआ, भुईंधार
भूमियां, मूमिआ, भारिया,
पालिहा, घांडो | |
| 6. मतरा | |
| 7. भील, भिलाला, बरेला, पट-
लिया | |
| 8. भील मीना | |
| 9. भंजिया | |
| 10. बिआर, बीआर | |
| 11. बिझवार | |
| 12. बिरहुल, बिरहोर | |
| 13. दमोर, दामरिया | |

- मुडिया, मुरिया, नगदरची, नगदवंशी, 40. पारधी, बहेलिया, बहेल्लिया,
ओझा, राज, सोन्झारी, झरेका,
थाटिया, थोटया, वाडेमाडिया, वडे-
माडिया, दराई
17. हलबा, हलबी
18. कमार
19. कारकू
20. कवर, कंवर, कौर, चेरवा, राठिया,
तनवर, छत्री
21. कीर (भोपाल, रायसेन और सिहोर
जिलों में)
22. खैरवार, कोंदर
23. खरिया
24. कोंध, खोंड, कांध
25. कोल
26. कौलम
27. कोरकू, बीपची, मवासी, निहाल, नाहुल,
बौधी, बौडेया
28. कोरवा, कोडाकू
29. मांझी
30. मझवार
31. मवासी
32. मीना (विदिशा जिले के सिरोंज
उप-खण्ड में)
33. मुंडा
34. नगैसिया, नगसिया
35. उरांव, धानका, धनगढ़
36. पनिका (छतरपुर, दतिया, पन्ना, रिवा,
सतना, शाहडोल, सीधी और टीकमगढ़
जिलों में)
37. पाव
38. परभान, पथारी, सरीती
39. पारधी (भोपाल, रायसेन तथा सिहोर
जिलों में)
41. परजा
42. सहारिया, सहरिया, सेहरिया,
सहरिया, सोसिया, सोर
43. साभौता, सौता
44. सौर
45. सावर, सवरा
46. सोनर

भाग 9—महाराष्ट्र

1. आंध
2. बैगा
3. बर्डी
4. बावला, बामला
5. भैना
6. भारिया भूमिया, भुईहार-भूमिया, पान्डों
7. भतरा
8. भील, भील गरासिया, धोली
भील, डुंगरी भील, डुंगली गरा-
सिया, मेवासी भील, रावल
भील, तडवी भील, भगलिया,
भिलाला, पावरा, वसावा, वसावे
9. भूजिया
10. बिझवार
11. बिरहूल, बिरहोर

15. मराम्	22. राल्हे
16. मैरिंग	23. सेमा
17. कोई मीजो (लुसाई) जन- जातियां	24. सिम्डे
18. मोन्सैंग	25. सूहटे
19. मायोन	26. तैगखुल
20. पाइटे	27. थाडो
21. पुरुम	28. व्हाइफ
	29. जाओ

भाग 11—मेघालय

1. चाक्कमा	(xix) कियगेन
2. डिमासा, कछारी	(xx) कुकी
3. गारो	(xxi) लेंथांग
4. हाजंग	(xxii) ल्हांगम
5. हमार	(xxiii) ल्हाजम
6. खासी, जैन्तिया, सिन्तैंग, प्लार, वार, भोई, लिगाम	(xxiv) ल्होबुन
7. कोई कुकी जनजातियां जिनके अन्तर्गत निम्नलिखित भी हैं :—	(xxv) लुफंग
(i) बियाते, बियेते	(xxvi) मांजेल
(ii) चंगसान	(xxvii) मिसाऊ
(iii) चंगलोई	(xxviii) रियांग
(iv) दौगेल	(xxix) सैरहैम
(v) गमल्हौ	(xxx) सेल्नाम
(vi) गंगते	(xxxi) सिग्सन
(vii) गुइते	(xxxii) सितल्हौ
(viii) हैन्नंग	(xxxiii) सुक्ते
(ix) हौकिप, हैपित	(xxxiv) थादो
(x) हौलाई	(xxxv) थान्यू
(xi) हेगना	(xxxvi) उइबू
(xii) हौनमुध	(xxxvii) व्हाइफ
(xiii) ह्हाग्खोवाल, रंखोल	8. लाखेर
(xiv) जग्बे	9. मान (ताई बोलने वाली)
(xv) खवौचंग	10. कोई मीजो (लुसाई) जन- जातियां
(xvi) खवोत्लंग, खोतालंग	11. मिकिर
(xvii) खेलमा	12. कोई नागा जनजातियां
(xviii) खाल्हू	13. पाबी
	14. सिन्तैंग

भाग 12—उड़ीसा

1. बागडा	8. भूमिज
2. बैगा	9. भूजीआ
3. बणजारा, वणजारी	10. बिजाल
4. बाथुडी	11. बिझिआ, बिझीआ
5. भौत्तडा, धोत्तडा	12. बीरहोर
6. भुइया, भूयां	13. बोडोपोरजा
7. भूमिआ	14. चैन्चू

- | | |
|----------------------------------------------------|------------------------------------|
| 15. दाल | 39. कोरुआ |
| 16. देसुआ भूमिज | 40. कुटीआ |
| 17. धारुआ | 41. कोया |
| 18. दिदयी | 42. कुली |
| 19. गाववा | 43. लोघा |
| 20. गांडिया | 44. मादिआ |
| 21. धारा | 45. माहालि |
| 22. गोंड, गोंडो | 46. मांकिडी |
| 23. हो | 47. मांकिरडिआ |
| 24. होलवा | 48. मादिआ |
| 25. जातपु | 49. मिर्धा |
| 26. जुआंग | 50. मुंडा, मुंडालोहरा, मुंडा-महाली |
| 27. कंध गोड | 51. मुंडारी |
| 28. कावार | 52. औमनात्या |
| 29. खडीआ, खडीयां | 53. ओरांक् |
| 30. ख रवार | 54. पेरेंगा |
| 31. खोंड, कोंड, कन्ध, नांगुली कन्धा,
शीथा कन्धा | 55. परोजा |
| 32. किसान | 56. पेंटिया |
| 33. कोल | 57. राजुआर |
| 34. कोल्हा लोहार, कोल-लोहार | 58. सांताल |
| 35. कोल्हा | 59. सवोरा, सवर, सौरा, सहरा |
| 36. कोली, मल्हार | 60. शवर, लोघा |
| 37. कोन्डादोरा | 61. साउन्ती |
| 38. कोरा | 62. थारुआ |

भाग 13---राजस्थान

- | | |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------|
| 1. भील, भील गरासिया, धोली
भील, डुंगरी भील,
डुंगरी गरासिया, मेवासी
भील, रावल भील, तडवी
भील, भगालिया, भलाला, पावरा
वसवा, वसावे | 6. काथोडी, कातकरी, डोर
काथोडी, डौर कातकरी, सोन
काथोडी, सोन कातकरी |
| 2. भील मीना | 7. कोकना, कोकनी, कुकणा |
| 3. डामोर, डामरिया | 8. कॉली, डोर, टोकरे कॉली कॉलचा,
कॉलघा |
| 4. धाणका, तडवी, तेतारिया,
वलवी | 9. मीना |
| 5. गरासिया (राजपूत गरासिया
से भिन्न) | 10. नायकडा, नाथक, चोलिवाला
नायक, कपाडिया नायक,
मोटा नायक, नाना नायक |
| | 11. पटेलिया |
| | 12. सेहारिया, सेहरिया, सहारिया |

भाग 14---तमिलनाडु

- | | |
|------------|---------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. अडियन | 6. कम्मारा (कन्याकुमारी जिला
और तिरुनेलवेलि जिले के शेन्कोट्टा
तालुक को छोड़कर) |
| 2. अरनाडन | 7. कनिकरण, कनिकर (कन्याकुमारी
जिले में और तिरुनेलवेलि जिले |
| 3. एरवल्लन | |
| 4. इरुलर | |
| 5. काडर | |

के शेन्कोट्टा तालुक में)	24. मल्लेसर
8. कनियन, कन्यन	25. मल्याली (धर्मपुरी, उत्तरी अर्काट, पुडुकोट्टाई, सलेम, दक्षिणी अर्काट और तिरुचिरा-पल्ली जिलों में)
9. काट्टुनायकन	26. मलयेकंडी
10. कोचुवेलन	27. मान्नन
11. कोन्डा कपूस	28. मुडुगर, मुडुवन
12. कोन्डारेड्डि	29. मदुवन
13. कोरागा	30. पाल्लयन
14. कोटा (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेलि जिले के शेन्कोट्टा तालुक को छोड़कर)	31. पलियन
15. कुडिया, मेला कुडी	32. पल्लयर
16. कुरिच्छन	33. पनियन
17. कुरुमान्स (नीलगिरि जिले में)	34. शोलागा
18. कुरुमान्स	35. टोडा (कन्याकुमारी जिले में और तिरुनेलवेलि जिले के शेन्कोट्टा तालुक को छोड़कर)
19. महा मल्लेसर	36. उरली
20. मल्लै अरैयन	
21. मल्लै पंडाराम	
22. मल्लै वैडन	
23. मलक्कुरवन	

भाग 15—त्रिपुरा

1. भील	(ix) कुन्तेई
2. भुटिया	(x) लाइफ्रंग
3. चैमल	(xi) लेनतेई
4. चकमा	(xii) मिजेल
5. गारो	(xiii) नमते
6. हलाम	(xiv) पाइतु, पाइते
7. जमातिया	(xv) रंगचान
8. खसिया	(xvi) रंखल
9. कुकी जिनके अन्तर्गत निम्न-लिखित उप जनजातियां भी हैं :—	(xvii) थंग्लुया
(i) बाल्टे	10. लेप्चा
(ii) बेललहुत	11. लुसाई
(iii) छाल्य	12. मग
(iv) फुन	13. मुन्डा, कौर
(v) हजांगो	14. नोआतिया
(vi) जंगते	15. ओरांग
(vii) खरेंग	16. रियांग
(viii) केफंग	17. सन्थाल
	18. त्रिपुरा, त्रिपुरी, टीपरा
	19. उचई

भाग 16—पश्चिमी बंगाल

1. असुर	कगाते, तिन्बती, थोलमो
2. बैगा	6. बीरहड़
3. बेदिया, बिदिया	7. विजिया
4. भूभिज	8. चाकमा
5. भूटिया, शेरपा, टोटो, दुक्पा,	

9. चेरी	24. लौहारा, लौहरा
10. चिक बारैक	25. मध
11. गारो	26. माहली
12. गोंड	27. महली
13. गोड़त	28. माल पहाड़िया
14. हाजंग	29. मेच
15. हो	30. मू
16. करमाली	31. मुंडा
17. खाड़वार	32. नागोसिया
18. खौंड	33. ओरांव
19. किसान	34. पाढ़िया
20. कोड़ा	35. रामा
21. कोरवा	36. सन्थाल
22. लेप्चा	37. सौरिया पहाड़िया
23. लीधा, खेड़िया, खाड़िया	38. सावर ।” ।

अध्याय 2

सविधान (अन्डमान और निकोबर द्वीप) अनुसूचित जनजातियां आदेश, 1959 में,—

(क) पैरा 2 में “जो उन परिक्षेत्रों में निवासी हैं जो उस अनुसूची में उनके सम्बन्ध में विनिर्दिष्ट हैं” शब्दों के स्थान पर “उस संघ राज्यक्षेत्र में निवासी हैं” शब्द रखे जाएंगे ;

(ख) अनुसूची के स्थान पर निम्नलिखित रखें, अर्थात् :—

“अनुसूची

- | | |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------|
| 1. अन्डमान निवासी, चारियर,
चारी, कोरा, टाबो, बो,
येरे, कोडे, बीय, बालाबा,
बोजीगियाब, जवाई, कोल | 3. निकोबर निवासी |
| 2. जरावा | 4. ओंगे |
| | 5. सेंटीनेली |
| | 6. शोम पेन ।” । |

उच्चतम न्यायालय (न्यायाधीश संख्या) संशोधन अधिनियम, 1977

(1977 का अधिनियम संख्यांक 48)

[31 दिसम्बर, 1977]

उच्चतम न्यायालय (न्यायाधीश संख्या) अधिनियम, 1956 का और
संशोधन करने के लिए
अधिनियम

भारत गणराज्य के अट्ठाईसवें वर्ष में संसद् द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो:—

- | | | |
|------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------|
| | 1. इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम उच्चतम न्यायालय (न्यायाधीश संख्या) संशोधन अधिनियम, 1977 है । | संक्षिप्त नाम । |
| 1956 का 95 | 2. उच्चतम न्यायालय (न्यायाधीश संख्या) अधिनियम, 1956 की धारा 2 में "तेरह" शब्द के स्थान पर "सत्रह" शब्द रखा जाएगा । | धारा 2 का संशोधन । |

कराधान विधि (संशोधन) अधिनियम, 1978

(1978 का अधिनियम संख्यांक 29)

[5 अगस्त, 1978]

आय-कर अधिनियम, 1961 और धन-कर
अधिनियम, 1957 का और संशोधन
करने के लिए
अधिनियम

भारत गणराज्य के उन्तीसवें वर्ष में संसद् द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो:—

- | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------|
| 1. (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम कराधान विधि (संशोधन) अधिनियम, 1978 है । | संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ । |
| (2) यह 1 अप्रैल, 1979 को प्रवृत्त होगा । | |
| 2. आय-कर अधिनियम, 1961 में,— | 1961 के अधिनियम 43 का संशोधन । |
| (क) अख्यय 3 में, धारा 13 के पश्चात् निम्नलिखित धारा अन्तःस्थापित की जाएगी, अर्थात्:— | |

'13क. किसी राजनैतिक दल की ऐसी किसी आय को जो "प्रतिभृतियों पर ब्याज", "गृह सम्पत्ति से आय" या "अन्य स्रोतों से आय" शीर्षक के अधीन प्रभाय है या किसी व्यक्ति से किसी राजनैतिक दल द्वारा प्राप्त

राजनैतिक दलों की आय के सम्बन्ध में विशेष उपबन्ध ।

स्वैच्छिक अभिदायों के रूप में आय को ऐसे राजनैतिक दल की पूर्ववर्ष की कुल आय में सम्मिलित नहीं किया जाएगा :

परन्तु यह तब जब कि—

(क) ऐसा राजनैतिक दल ऐसी लेखा बहियाँ और अन्य दस्तावेजों रखता है और बनाए रखता है जिनसे आय-कर अधिकारी उनसे होने वाली उसकी आय को उचित रूप से अवकलित कर सके ;

(ख) प्रत्येक ऐसे स्वैच्छिक अभिदाय की बाबत जो दस हजार रूपए से अधिक है, ऐसा राजनैतिक दल ऐसे अभिदाय का और ऐसा अभिदाय करने वाले व्यक्ति के नाम और पते का अभिलेख रखता है और बनाए रखता है ; और

(ग) ऐसे राजनैतिक दल के लेखे धारा 288 की उपधारा (2) के तहत दिए गए स्पष्टीकरण में परिभाषित लेखापाल द्वारा संपरीक्षा किए जाते हैं ।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए, “राजनैतिक दल” से भारत के व्यष्टिक नागरिकों का ऐसा संगम या निकाय अभिप्रेत है जो निर्वाचन प्रतीक (आरक्षण और आबंटन) आदेश, 1968 के पैरा 3 के अधीन राजनैतिक दल के रूप में भारत निर्वाचन आयोग के पास रजिस्ट्रीकृत है तथा इसके अन्तर्गत वह राजनैतिक दल भी है जो उस पैरा के उपपैरा (2) के परन्तुक के अधीन उस आयोग के पास रजिस्ट्रीकृत समझा जाता है । ;

(ख) धारा 37 में,—

(i) उपधारा (2क) के पश्चात् निम्नलिखित उपधारा अन्तः-स्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

“(2ख) उपधारा (1) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राजनैतिक दल द्वारा प्रकाशित किसी स्मारिका, विवरणिका, ट्रैक्ट, पुस्तिका या इसी प्रकार के अन्य प्रकाशनों में विज्ञापन पर किसी निर्धारितों द्वारा उपगत व्यय की बाबत कोई भौक नहीं दिया जाएगा ।”;

(ii) उपधारा (3क) में (वित्त अधिनियम, 1978 की धारा 8 द्वारा अन्तःस्थापन के लिए यथानिर्दिष्ट), —

1978 का 19

(1) “उपधारा (3) के उपबंधों पर” शब्द, कोष्ठक और अंक के स्थान पर “उपधारा (2ख) या उपधारा (3) के उपबंधों पर” शब्द, कोष्ठक, अंक और अक्षर रखे जाएंगे ;

(2) स्पष्टीकरण के खंड (क) में “उपधारा (3) के अधीन” शब्द, कोष्ठक और अंक के स्थान पर “उपधारा (2ख) या उपधारा (3) या दोनों के अधीन” शब्द, कोष्ठक, अंक और अक्षर रखे जाएंगे ;

(ग) धारा 139 की उपधारा (4क) के पश्चात् निम्नलिखित उपधारा अन्तःस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

“(4ख) यदि वह कुल आय जिसकी बाबत कोई राजनैतिक दल निर्धारणीय है (इस प्रयोजन के लिए कुल आय धारा 13क के उपबंधों को प्रभावी किए बिना इस अधिनियम के अधीन संगणित की जाएगी), उस अधिकतम रकम से अधिक है जो आय-कर के लिए प्रभार्य नहीं है तो, ऐसे प्रत्येक राजनैतिक दल का मुख्य कार्यपालक अधिकारी (चाहे ऐसा मुख्य कार्यपालक अधिकारी सचिव के रूप में या किसी अन्य पदनाम से ज्ञात हो) पूर्ववर्ष की ऐसी आय को विहित प्ररूप में और विहित रीति से सत्यापित करके और ऐसी अन्य विशिष्टियां देते हुए जो विहित की जाएं, विवरणी देगा और इस अधिनियम के सभी उपबंध, जहां तक हो सके, इस प्रकार लागू होंगे मानो वह उपधारा (1) के अधीन दी जाने के लिए अपेक्षित विवरणी हो।”

3. धन-कर अधिनियम, 1957 की धारा 45 के खंड (ज) के पश्चात् निम्नलिखित खंड और स्पष्टीकरण अन्तःस्थापित किए जाएंगे, अर्थात् :—

1957 के अधिनियम 27 का संशोधन।

‘(झ) कोई राजनैतिक दल।

स्पष्टीकरण—खंड (झ) के प्रयोजनों के लिए, “राजनैतिक दल” का वही अर्थ होगा जो आय-कर अधिनियम की धारा 13क के स्पष्टीकरण में है।”

लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1979

(1979 का अध्यादेश संख्या 7)

भारत गणराज्य के तीसवें वर्ष में राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित

[1 दिसम्बर, 1979]

सिक्किम राज्य में सभा निर्वाचन-क्षेत्रों के पुनः समायोजन का उपबंध करने के लिए लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 का और संशोधन करने के लिए अध्यादेश

लोक सभा का विघटन हो गया है और राज्य सभा सत्र में नहीं है और राष्ट्रपति का यह समाधान हो गया है कि ऐसी परिस्थितियां विद्यमान हैं जिनके कारण तुरन्त कार्यवाही करना उनके लिए आवश्यक हो गया है ;

अतः संविधान के अनुच्छेद 123 के खण्ड (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रपति निम्नलिखित अध्यादेश प्रख्यापित करते हैं :—

1. (1) इस अध्यादेश का संक्षिप्त नाम लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1979 है।

संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ।

(2) यह तुरन्त प्रवृत्त होगा।

1950 के अधिनियम 43, 1951 के अधिनियम 43 और संसदीय और सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 का अस्थायी रूप से संशोधन किया जाना ।

1950 के अधिनियम 43 की धारा 7 का संशोधन ।

2. इस अध्यादेश के प्रवर्तन की अवधि के दौरान, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 और संसदीय और सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 का इस अध्यादेश में विनिर्दिष्ट संशोधनों के अधीन रहते हुए प्रभाव होगा ।

3. लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 7 में,—

(क) उपधारा (1) में, "द्वितीय अनुसूची में विनिर्दिष्ट हर एक राज्य की विधान सभा में उन स्थानों की कुल संख्या" शब्दों के स्थान पर "उपधारा (1क) के उपबंधों के अधीन रहते हुए द्वितीय अनुसूची में विनिर्दिष्ट हर एक राज्य की विधान सभा में उन स्थानों की कुल संख्या" शब्द, कोष्ठक, अंक और अक्षर रखे जाएंगे ;

(ख) उपधारा (1) के पश्चात् निम्नलिखित उपधारा अन्तःस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

(1क) उपधारा (1) में किसी बात के होते हुए भी सिक्किम राज्य की विधान सभा में उन स्थानों की कुल संख्या जो लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1979 के प्रारंभ के पश्चात् किसी समय गठित की जानी है जो सभा निर्वाचन-क्षेत्रों से प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा चुने गए व्यक्तियों द्वारा भरे जाएंगे, बत्तीस होगी जिसमें से—

(क) बारह-स्थान भूटिया-लेप्चा उद्भव के सिक्किमियों के लिए आरक्षित होंगे ;

(ख) दो स्थान उस राज्य की अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित होंगे ; और

(ग) एक स्थान धारा 25क में निर्दिष्ट संघ के लिए आरक्षित होगा ।

स्पष्टीकरण—इस उपधारा में "भूटिया" के अन्तर्गत चुम्बिपा, डोण्थपा, दुक्पा, कगाते, जेरपा, तिब्बती, टोम्पोपा या योल्मो भी हैं ;

(ग) उपधारा (2) में, "उपधारा (1) में" शब्दों, कोष्ठकों और अंक के स्थान पर "उपधारा (1) या उपधारा (1क) में" शब्द, कोष्ठक, अंक और अक्षर रखे जाएंगे ;

(घ) उपधारा (3) में,—

(i) अरुणाचल प्रदेश संघ राज्यक्षेत्र के सभा निर्वाचन-क्षेत्रों को छोड़कर समस्त राज्यों और संघ राज्यक्षेत्रों के प्रत्येक सभी निर्वाचन-क्षेत्र का विस्तार धारा 7क की उपधारा (3) के

उपबंधों के अधीन रहते हुए' शब्दों, कोष्ठकों, अंकों और अक्षर के स्थान पर "सिक्किम राज्य और अरुणाचल प्रदेश संघ राज्यक्षेत्र के सभा निर्वाचन-क्षेत्रों को छोड़कर समस्त राज्यों और संघ राज्य-क्षेत्रों के प्रत्येक सभा निर्वाचन-क्षेत्र का विस्तार" शब्द रखे जाएंगे;

(ii) "परिसीमन आयोग द्वारा किए गए आदेशों द्वारा अवधारित किया गया हो" शब्दों के पश्चात् निम्नलिखित अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

"सिक्किम राज्य के प्रत्येक सभा निर्वाचन-क्षेत्र का विस्तार ऐसा होगा जैसा लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1979 की धारा 5 द्वारा यथासंशोधित संसदीय और सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 में उपबंधित किया गया हो" ।

4. लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 में धारा 5क उसकी उपधारा 1951 के अधि-
(1) के रूप में पुनःसंख्यांकित की जाएगी और इस प्रकार पुनःसंख्यांकित नियम 43 की
उपधारा (1) के पश्चात् निम्नलिखित उपधारा अन्तःस्थापित की जाएगी, धारा 5क का
अर्थात् :— संशोधन ।

(2) धारा 5 में किसी बात के होते हुए भी सिक्किम राज्य की विधान सभा में स्थान को भरने के लिए जो लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश, 1979 के प्रारम्भ के पश्चात् किसी भी समय गठित की जानी है, चुने जाने के लिए कोई व्यक्ति तब तक अर्हित नहीं होगा जब तक कि वह —

(क) भूटिया-लेप्चा उद्भव के सिक्किमियों के लिए आरक्षित स्थान की दशा में, या तो भूटिया या लेप्चा उद्भव का व्यक्ति न हो और राज्य में किसी ऐसे सभा निर्वाचन-क्षेत्र के लिए, जो संघों के लिए आरक्षित निर्वाचन-क्षेत्र से भिन्न है, निर्वाचक न हो ;

(ख) अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित स्थान की दशा में, सिक्किम राज्य में उन जातियों में से किसी का सदस्य न हो और राज्य में किसी सभा निर्वाचन-क्षेत्र के लिए निर्वाचक न हो ;

(ग) संघों के लिए आरक्षित स्थान की दशा में, संघ निर्वाचन-क्षेत्र का निर्वाचक न हो ;

(घ) किसी अन्य स्थान की दशा में, वह राज्य में के किसी सभा निर्वाचन-क्षेत्र के लिए निर्वाचक न हो ।

स्पष्टीकरण — इस उपधारा में "भूटिया" के अन्तर्गत चुम्बपा, डोध्यपा, दुक्पा, कगाते, शेरपा, तिब्बती, ट्रोमोपा या योल्मो भी हैं ।

5. इस अध्यादेश के प्रारम्भ से ही संसदीय और सभा निर्वाचन-क्षेत्र संसदीय और
परिसीमन आदेश, 1976 की अनुसूची में यथा निर्देशित रूप में संशोधित हो जाएगा । सभा निर्वाचन-क्षेत्र
परिसीमन आदेश,
1976 का
संशोधन ।

अनुसूची

(धारा 5 देखिए)

संसदीय और सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 का संशोधन

संसदीय और सभा निर्वाचन-क्षेत्र परिसीमन आदेश, 1976 में,—

(i) पैरा 5 में,—

(क) "और जहाँ ऐसा नाम" शब्दों के स्थान पर "जहाँ ऐसा नाम" शब्द रखे जाएंगे ;

(ख) "अनुसूचित जनजातियों" शब्दों के पश्चात् 'और जहाँ ऐसा नाम कोष्ठकों और अक्षरों "(बी एल)" द्वारा सुभित्त किया गया है वहाँ उस निर्वाचन-क्षेत्र में का स्थान भूटिया-लेप्चा उद्भव के सिक्किमियों के लिए आरक्षित है' शब्द, कोष्ठक और अक्षर अन्तःस्थापित किए जाएंगे;

(ग) निम्नलिखित स्पष्टीकरण अन्त में अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

'स्पष्टीकरण—इस पैरा में "भूटिया" के अन्तर्गत चुम्बिपा, डोप्यपा, दुक्पा, कगाते, शेरपा, तिब्बती, ट्रोमोपा या योल्मो भी हैं।';

(ii) अनुसूची 2 में,—

(क) प्रविष्टि 18 के स्थान पर निम्नलिखित प्रविष्टि रखी जाएगी, अर्थात् :—

"18. सिक्किम 32* 2 12

(भूटिया)†-

लेप्चा उद्भव के

सिक्किमियों के

लिए आरक्षित);";

(ख) अन्त में दिए गए टिप्पण में, "इसके अन्तर्गत संघ निर्वाचन-क्षेत्र के लिए आरक्षित एक स्थान आता है" शब्दों और अंकों के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—

"इसके अन्तर्गत संघ निर्वाचन-क्षेत्र के लिए एक स्थान आरक्षित है।

†इसके अन्तर्गत चुम्बिपा, डोप्यपा, दुक्पा, कगाते; शेरपा, तिब्बती, ट्रोमोपा या योल्मो हैं।";

(iii) अनुसूची 19 के पश्चात् निम्नलिखित अनुसूची अन्तःस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

“अनुसूची 19क

सिक्किम

सभा निर्वाचन-क्षेत्र

क्रम संख्यांक	नाम और निर्वाचन-क्षेत्र का विस्तार
1.	योक्साम —केटचोफेरी इलाखा में योक्साम, लाविंग, डुब्दी, गेरेथंग, केटचोफेरी, चोजो, थिगलिंग ब्लाक I और थिगलिंग ब्लाक II; पेमोचोंगत्से इलाखा में चुमबुंग, नाको, सिमंग, गिडारंग, दाराप, नाम्बो, टोपोंग और सिगरापोंग ब्लाक; और पश्चिमी जिले के मेली इलाखे में टिंगत्रोम, सिगलीटाम, मेल्ली, और मेल्ली अर्चिंग ब्लाक।
2.	ताशिडिंग (बी एल) —पश्चिमी जिले के ताशिडिंग इलाखा में धुपि-डारा, नरखोला, मंगनाम, लवडांग, कोगरी, गंजेप, चुंगरेंग, अथिंग, लस्सो, ताशिडिंग, यांगूटेय, अंगलेप और भालुथंग ब्लाक।
3.	पेयोङ्ग —पेयोङ्गत्से इलाखा में श्रीमचुंग, गेयजिंग, क्योङ्गला, लूङ्गजिक और पेयोङ्गत्से, संगचोंगलिंग इलाखा में टिकजेक, सरडोंग और लिंगचोम ब्लाक; और पश्चिमी जिले के यांगथांग इलाखा में यांगथांग ब्लाक; और दक्षिणी जिला के वाक-सोसिंग इलाखा में लेकशिप ब्लाक।
4.	डेनटाम —पश्चिमी जिले के यांगथांग इलाखा में लिचिंग, बैधा, श्री तांगी, ग्याटेन, करमाटार, सोपाखा, मानेयजोम, मंगू, डेनटाम, सापुंग, बोंगटेन, राधुकुंडु और साखु ब्लाक।
5.	बारसिओक —यांगथांग इलाखा में ही, भारटाम, बारसिओक, वारथंग, ही पाटाल और पचरेक ब्लाक; और पश्चिमी जिले के रिन्चेनपांग इलाखा में मियोंग, मेगथोंग, जिथांग और बारफोक ब्लाक।
6.	रिन्चेनपांग (बी-एल) —रिन्चेनपांग इलाखा में संगडारजी, हाथीडुगा, जील, बूम, रेशी (क)—रेशी (ख), रिन्चेनपांग, टाडोंग, सामडोंग, श्री बादाम (क) और श्री बादाम (ख) ब्लाक; और पश्चिमी जिले के चाकुंग इलाखा में टाङ्गथांग, चुवेन, डेथांग और पारेगांव ब्लाक; और दक्षिणी जिले के वाक सोसिंग इलाखा में संगनाथ।
7.	चाकुंग —पश्चिमी जिले के चाकुंग इलाखा में तिनजेरबोंग, सुलडोंग, कमलिंग, सिगथेंग, माबोंग, सुनटोलेथ, खानी सिरबोंग, अरुबोटेय, सामसिंग, गेलिंग या चाकुंग, मेण्डोपांग, सामडोंग और चुमबुंग ब्लाक।
8.	सोरेओंग —पश्चिमी जिले के चाकुंग इलाखा में सोरेओंग, सोरेओंग बाजार, सिगलिंग, टिम्बरबांग, बुरी खोप, करोक, मालबासेय, और दारपु ब्लाक।

- | क्रम संख्यांक | नाम और निर्वाचन-क्षेत्र का विस्तार |
|---------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 9 | दारामदीन—पश्चिमी जिले के दारामदीन इलाखा में हमबुक, बुरीखोप, लोअर दारामदीन, लोअर थामबुंग, अपर थामबुंग, सालेंगडोंग, लुंगचोक, सिकतम, टिकपुर, ओखरे, रिकदी और भारेंग ब्लाक । |
| 10. | जोरथांग—नया बाजार-पश्चिमी जिले के चाकुंग इलाखा में जूम ब्लाक, नीमची इलाखा में सालधारी, दोरोप, धारधरगांव, चिसी-पानी, तिनेक, पोकलोक, डेनचुक, असंगथांग, सामबुंग, कोपचे और मिक-खोला ब्लाक और दक्षिणी जिले के किटाम इलाखा में श्यामपानी, सोरोक, मानपुर, किटाम और गोंम ब्लाक । |
| 11. | रालांग (बी एल)—ब्रांग इलाखा में सड़ा, फामटाम, ब्रांग और पोलोट ब्लाक रालांग इलाखा में नामलुंग, लिगडिंग, रालांग, जोरांग, विरिंग, बरफोंग और देथांग ब्लाक और दक्षिण जिले के वाक-सोसिंग, इलाखा में बाखिम केवजिंग, डालेप और लिगजो ब्लाक । |
| 12. | वाक—वाक-सोसिंग इलाखा में हिंगडाम, लामाटेन, टिंगमो, टिकोटाम, थोमबु, चुसलोक, वाक, रायोंग और मांगबु ब्लाक बेन नामफिक इलाखा में बेन, नामफिक राबांग और सांगमो ब्लाक; दक्षिण जिले के टेमी टारकु इलाखा देत्री ब्लाक । |
| 13. | डामथांग—नामची इलाखा में डामथांग, जौबारी, चेमचेय, पाबोंग, बूमतार, साल्लोबुंग, मनीराम, पल्लीडारा, टिंगरी, मामले गुम्बा, पाजेर, तनजिर, कामरांग; और सिगीथांग ब्लाक और दक्षिण जिले के टुस्क, सुमबुक इलाखा में सिगताम, बुल, पालुम और रोंग ब्लाक । |
| 14. | मेल्ली—दक्षिण जिले के टुस्क-सुमबुक इलाखा में मेल्ली बाजार, मेल्ली, दारा, केराबाड़ी, सुनटोले, सुखबाड़ी, टुस्क, रामबुंग, पंचधारेय, लुंगचोक, कामारेय, सुमबुक, कार्तिकेय टोले (सुमबुक), पर्योंग, रवितार, और सादम ब्लाक । |
| 15. | राटेयपानी, पश्चिमी पेनडाम, राटेयपानी (अ०जा०)—राटेयपानी इलाखा के सुमबुक जिले में रबिखोला, टांगजी, विगम, राटेयपानी और पस्सी ब्लाक; दक्षिणी जिले के नामथांग इलाखा में कटिथ बोकरम, दमफोक, नालाम-कोलबंग, नागी, पालोटाम, मानेयडारा, काबरेय, कामामटेक, टुसंग, डोनोक और मामरिंग ब्लाक; और पूर्व जिले के नामथांग इलाखा में पश्चिम पेनडाम । |
| 16. | टेमी-टारकु—टेमी-टारकु इलाखा में टानाक, टारकु, टेथी और आयफालटर ब्लाक; बरपिओक इलाखा में पाबोंग, डारिम, टोडेय, रेशेय, टोहेल, नामफिंग, बारपिओक, थांगसिंग, चालमथांग, निजार-मेंग, रामों और बुरुल ब्लाक और दक्षिण जिले के नामथांग इलाखा में पररविंग, फोंग, छुवा, कारेक ब्लाक । |
| 17. | केन्द्रीय पेनडाम—पूर्व पेनडाम-सुमिन इलाखा में सिगटाम बाजार, सुमिन, लिगजेटा और मांगथांग ब्लाक, और पूर्व पेनडाम के पेनडाम इलाखा में केन्द्रीय पेनडाम, पूर्व पेनडाम, रंगपो बाजार, कामरेय-मासमेय, पचाक और साजोंग ब्लाक । |

- | क्रम संख्यांक | नाम और निर्वाचन-क्षेत्र का विस्तार |
|---------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 18. | रेहनोक —रेहनोक इलाखा में रेहनोक, तारपिन, रेहनोक बाजार, मुलुकेय, सुदांग इलाखा और क्योंगसा ब्लाक, और टारेथांग इलाखा में बिरिंग, टारेथांग और ताजा ब्लाक; और पूर्व जिले के पार्थिंग इलाखा में लिन्केय ब्लाक । |
| 19. | रेगु —रेहनोक इलाखा में अरितार, दलापचन्द और खामडोंग ब्लाक; और पूर्व जिले के चुजाचेन इलाखा में चुजाचेन, चोगेलाखा, उत्तरी रेगु, दक्षिणी रेगु, रोंगली बाजार, सिगाने बास, प्रेमलाखा और सुभानेय दारा ब्लाक । |
| 20. | पार्थिंग (बी एल) —चांगेय-सेन्टी इलाखा में चांगेय-सेन्टी और राचेय सामसिंग ब्लाक; अम्बा तारेथांग इलाखा में पारखा, रिबा, मार्चोंग, लाटुक और चुचेनफेरी ब्लाक; और पूर्व जिले के चुजाचेन रेगु इलाखा में रोलेप, लामाटेन, लिंगताम, फदमचेन और ग्नाथांग ब्लाक । |
| 21. | लूजिंग पांचखानी —आहो पाहम-थांगटाम इलाखा में छोटा सिमतम और आहो थांगटाम; और पूर्व जिले के पाकयोंग इलाखा में नामचे-बुंग, कारटोक, डिकिंग, चालमथांग, लूजिंग, पांचखानी, डिकलिंग पाचेखानी, बेंगथांग और पालथांग बाजार ब्लाक । |
| 22. | खामडोंग (अ०जा०) —लिममो-नेह्नोम इलाखा में मानजिंग, टोकडेय, नेह्नोम, कोलथांग, पेपथांग और लिंगमो ब्लाक; यानगंग इलाखा में रानगंग, यानगंग, गागयोंग, सताम, नामफोक और श्रीपाटम ब्लाक; और पूर्व जिले के खामडोंग इलाखा में सिगबेल, डुंगडुंग, खामडोंग, बेंग, थांगसिंग-बो डांग और थासा ब्लाक । |
| 23. | डजोनगु (बी एल) —उत्तर जिले के अपर डजोनगु इलाखा में अपर डजोनगु और लोअर डजोनगु ब्लाक; और दक्षिण जिले के लिगी-पायोंग इलाखा में सोकपेय, लिगी, अपर पायोंग, लोअर पायोंग और काहु ब्लाक । |
| 24. | लाचेन मंगशिला (बी एल) —लाचेन इलाखा में लाचेन ब्लाक; लाचुंग इलाखा में लाचुंग ब्लाक; चुंगथांग में चुंगथांग ब्लाक; मल्लिंग इलाखा में नागना मगोड़, सिगचिट, टुंग मिअोंग, सेनटम, पाकसेप, काजोर, सिगचिक, रिंगेम, जिमचुंग, नामपाटम और मन्गन बाजार ब्लाक; और उत्तर जिले के फोडोंग इलाखा में सायेम, टानथेक, रामथांग, अपर मंगशिला, लोअर मंगशिला, नामोक और थिंगचेन ब्लाक । |
| 25. | कबी टिंगडा (बी एल) —फोडोंग इलाखा में रुनगोंग, तुमलुंग और फोडोंग ब्लाक; उत्तर जिले के फेनसांग-कबी टिंगडा इलाखा में फेनसांग, लाबी, फामटाम, चावांग, मेन-रुनगोंग, कबी-टिंगडा और फानेय ब्लाक; और पेनलोंग इलाखा में सोटाक, नावेय और पेनलोंग ब्लाक; और पूर्व जिले के राकडोंग-टिनटेक इलाखा में लिंगडोक और नामपुंग ब्लाक । |
| 26. | राकडोंग-टेनटेक (बी एल) —राकडोंग-टेनटेक इलाखा में राकडोंग और टेनटेक ब्लाक; सामडोंग इलाखा में सामडोंग-कमबोल और रालेय-खासे ब्लाक; तुमिन-चान्देय इलाखा में तुमिन, सिमिक और चान्देय ब्लाक; और पूर्व जिला के खामडोंग इलाखा में पाटुक, सिमिक, अरितार और लिंगजेय ब्लाक । |

क्रम संख्यांक नाम और निर्वाचन-क्षेत्र का विस्तार

27. **मारटम (बी एल)**—सोंग मारटम इलाखा में सिखानी, साक थोंग, चिसोपानी, राबडांग, चालमथंग, ब्यांग, नामेथांग, मारटम, फेगथोंग, नजीटाम और तिकुटम ब्लाक; और पूर्व जिले के हमटेक-मारचाक इलाखा में छुवा, नामली, मारचाक, सामलिक, नामिन और तुमलाबुंग ब्लाक ।
28. **हमटेक (बी एल)**—रेनका-लिंगडुम इलाखा में मेन्दु, टेमपेय, साजोंग, चेनजेय, रावते हमटेक, रेय ब्रोक और लिंगडुम ब्लाक; और पूर्व जिले के टाडोंग इलाखा में टाडोंग, समडुर, देवराली, देवराली बाजार और टाडोंग बाजार ।
29. **आसाम लिंगजेय (बी एल)**—ग्रहो-लिंगजेय-पाहम-सिंगताम इलाखा में पाहस, भुसुक, नामोक, नायटम, नन्दीक, लिंगजेय और आसाम ब्लाक; और पूर्व जिले के टाथन्गचेन इलाखा में टाथन्गचेन, रोंगनेक और सायारी ब्लाक ।
30. **रानका (बी एल)**—पूर्व जिले के रानका इलाखा में पारिविग, रानका, बारबिग, सोंगटोंग, बारटुक, लुविग, सूचांगग और चान्दमारी ब्लाक ।
31. **गंगटोक**—[(क) पूर्व जिले का गंगटोक टाउन, (ख) गंगटोक बाजार, और (ग) डवलेपमेंट एरिया को सम्मिलित करते हुए] पूर्व जिले का गंगटोक ब्लाक ।

टिप्पण—इस सारणी में किसी जिला, इलाखा, ब्लाक या अन्य प्रादेशिक खण्ड के प्रति किसी निर्देश का उस क्षेत्र से अभिप्राय होगा जो उस जिला, इलाखा, ब्लाक या अन्य प्रादेशिक खण्ड के अन्तर्गत अप्रैल, 1975 के 26वें दिन को सम्मिलित है ।”

नीलम संजीव रेड्डि,
राष्ट्रपति ।

ह० वेंकट सूर्य पेरिक्षास्त्री,
सचिव, भारत सरकार ।

ह० वेंकट सूर्य पेरिक्षास्त्री,
सचिव, भारत सरकार ।

शुद्धि पत्र

भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग 2, अनुभाग 1क, संख्यांक 20, खण्ड XIII, दिनांक 17 नवम्बर, 1977 को प्रकाशित—आवश्यक वस्तु (संशोधन) अधिनियम, 1976 में

पृष्ठ संख्यांक	प्रतिष्ठि	के स्थान	पर पढ़ें
1462	शीर्ष में	1916	1976
1462	धारा 2, पंक्ति 4	“(क)	“(िक)
1465	दायां स्कंध	146	1465